अजय कुमार शर्मा 'निखिल'

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान

प्रार्थना

स्वात्मारामः कलितरमणः पुण्यभाजां मुनीनाम् ।
विभ्राजन्ते सवनकर्मणि दिव्यदेवाश्च यत्र ।।
चैतन्योऽयं परमगुरुणा तेजसा चायनीयः ।
वन्देऽहं सिद्धसंघं निखिल परिगतं भावगम्यं सदैवं ।।

उन सिद्ध समूह के एकमात्र विश्राम स्थल, परम पावन यह सिद्धाश्रम, जहां यज्ञादि शुभ कार्यों में इन्द्रादि देवगण भी अपनी उपस्थिति की कामना करते हैं, पूज्यपाद स्वामी सच्चिदानन्द जी की तेजस्विता से जो चैतन्य एवं सौन्दर्यमय बना हुआ है, पूज्य गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानन्द जी की सतत् उपस्थिति से जो भावित एवं तरंगित है, उस सिद्धाश्रम को मैं स्नेह पूर्ण हृदय से नमन करता हूं।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

ज्योतिष

सद्गुरुदेव

विवेचनात्मक

विशेष

चिकित्सा

संस्मरण

पाठकों के पत्र

● "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" "नवरात्रि विशेषांक" में दी गई जानकारियां काफी उपयोगी लगीं। इस अंक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेख **"भगवती जगदम्बा के दुर्लभ विशिष्ट प्रयोग"** बहुत पसन्द आया। मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

मूलचन्द वैरागी
रानापुर, झाबुआ (म.प्र.)

● डॉ० आई० खुराना का पत्रिका में प्रकाशित साक्षात्कार पढ़कर हमारी कई शंकाओं का समाधान प्राप्त हुआ है। आपसे अनुरोध है, कि आप इसे **"स्थायी स्तम्भ"** में स्थान प्रदान करें तथा उन समस्त साधकों व शिष्यों का साक्षात्कार प्रकाशित करें, जिन्होंने कई विशिष्ट दीक्षाएं प्राप्त की हैं अथवा, विशेष साधनाओं को सम्पन्न किया है।

गीता बनर्जी,
रिकाबगंज, फैजाबाद

● पूज्य गुरुदेव, जब से मैंने **धन्वन्तरी यंत्र** मंगाया है तभी से मेरे स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है, मुझे पत्रिका सदस्य हेतु तथा चरणों की धूलि पाने हेतु अवसर प्रदान करें।

रामहरख
कानपुर रोड, लखनऊ

– आप ९८/- का मनीआर्डर हमारे जोधपुर कार्यालय को भेजें, पता हिन्दी अथवा अंग्रेजी में साफ-साफ लिखें। आपको एक वर्ष के लिए पत्रिका सदस्य बना लिया जायेगा। साथ ही एक प्राण-प्रतिष्ठित यंत्र उपहार स्वरूप आप को भेजा जायेगा। पूर्ण विवरण पत्रिका में प्रकाशित है।

● मैं आपकी संस्था एवं पूज्य गुरु जी का बहुत आभारी हूं, मुझे ईश्वर ने सब कुछ दिया है। मैं शराब बहुत पीता था, लेकिन जिस दिन से मैंने गुरु दीक्षा ली उसी दिन से शराब एकाएक छूट गयी। इसको मैं गुरु जी की शक्ति मानता हूं। मैंने जीवन में बहुत पैसा कमाया और बरबाद किया, अब मैं पैसा नहीं नाम कमाना चाहता हूं। मैं पत्रिका सदस्य बनना चाहता हूं।

अजय कुमार सिंह
सिद्धार्थ नगर, उ. प्र.

● पूज्य गुरुदेव, मैंने **"कुण्डलिनी नाद ब्रह्म"** नामक पुस्तक पढ़ी, पढ़ने के बाद ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अन्दर की कुण्डली का जागरण शुरु हो गया है। मैं इस पुस्तक को जब भी पढ़ता हूं मुझे पूरे शरीर में अजीब सी एक अनुभूति होने लगती है। गुरुदेव की ऐसी रचना के लिए कोटि - कोटि प्रणाम करता हूं।

शंकर साहू
वोरसी, रायपुर (म. प्र.)

पत्रिका प्राप्ति के विषय में

हमारे अनेक पाठकों की शिकायत रहती है, कि उन्हें पत्रिका समय पर नहीं मिल पाती अथवा नहीं मिल पायी है। हमारी जानकारी में ऐसी कई घटनाएं सामने आयी हैं, कि कुछ शरारती तत्व पत्रिका को पाठक तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। इसके लिए पत्रिका कार्यालय का समस्त पाठकों से अनुरोध है, कि *वे अपने- अपने नगर की पत्रिकाएं एकत्रित रूप से मंगाएं।* इस प्रकार जहां आपको पत्रिका सुरक्षित रूप से मिल सकेगी, वहीं यह गुरु सेवा भी होगी। फिर भी यदि पाठक व्यक्तिगत रूप से पत्रिका सुरक्षित मंगाना चाहते हैं, तो वे *रजिस्टर्ड बुक पोस्ट* के माध्यम से मंगवा सकते हैं। जिसमें उन्हें प्रतिवर्ष ८५/- का अतिरिक्त डाक व्यय देय होगा।

● पत्रिका के नवम्बर माह में प्रकाशित **"जीवन को सफल बनाती हैं, ये साबर साधनाएं"** के अन्तर्गत दिया हुआ **'आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग'** सम्पन्न किया। अगले दिन से ही अनुकूल प्रभाव प्राप्त होने लगा है।

शिवानन्द चतुर्वेदी,
राबर्ट्स गंज

● आपकी पुस्तक **"तांत्रिक सिद्धियां"** एवं **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** का **जनवरी ९४** का अंक अत्यंत आकर्षक लगा, वर्तमान में मैं शिक्षक के पद पर कार्यरत हूं। सामान्य रूप से तंत्र- मंत्र की चर्चा करने पर लोग दूसरों को (चर्चा करने वालों को) बेवकूफ समझने लगते हैं, लेकिन आपने इस क्षेत्र को एक गरिमा प्रदान की है। अब मुझे यह क्षेत्र अच्छा लगने लगा है, जिसे लोग वर्जित या विध्वंसक कहते हैं। कृपया कलवा प्रयोग कैसे किया जाता है, मूर्ति को कैसे चैतन्य किया जाता है, तथा मूठ के बारे में पूर्ण जानकारी देने का कष्ट करें।

के.के. शुक्ला
राइट टाउन, जबलपुर

–प्रिय बन्धु, आपने जिस प्रकार हमारी पत्रिका एवं विचारों को लिया है, उसके लिए हम आपका धन्यवाद ज्ञापित करते हैं तथा आपने जिन प्रयोगों एवं पूजन विधि को जानना चाहा है, वह हम निकट भविष्य में शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रहे हैं।

– उपसम्पादक

वर्ष १४ | अंक १२ | दिसम्बर ९४

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सम्पादकीय
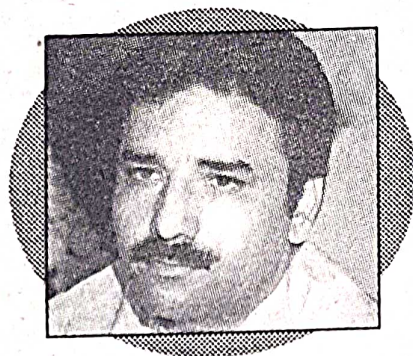
सन् १९९४ धीरे-धीरे वृद्धता की ओर अग्रसर होता जा रहा है, और उसने अपने अंक में समेट रखा है एक नन्हे, कोमल और प्यारे से शिशु १९९५ को, जो मचल रहा है अपने छोटे-छोटे पैरों पर खड़ा होने के लिए, ठुमक-ठुमक कर आपको अपने साथ ले आगे बढ़ने के लिए। दिसम्बर का माह होता ही है पूरे वर्ष पर्यन्त तक अनवरत चलते काल-चक्र में से थोड़ा-सा समय निकाल कर पूरे साल व्यतीत की गई जीवन शैली के पुनरावलोकन का।

और जब आप अपने जीवन पर दृष्टि डालेंगे तो आपको यह अहसास होगा, कि **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका हर पल आपके सुख में, आपके दुःख में, आपके जीवन के प्रत्येक रंग में आपकी सम्पूर्ण सहयोगी बन आपके साथ रही है।

जीवन की इस आपाधापी से, समाज की आलोचना-प्रत्यालोचनाओं से, छल-कपट, पारिवारिक मतभेद और द्वन्द्वों से जब आप घबरा जाते हैं, विचलित हो जाते हैं, तो ऐसे ही क्षणों में आवश्यकता होती है असीम धैर्य के साथ अपने पथ पर अग्रसर होने की. . . और इसके आगे का पथ, इन बाधाओं से मुक्ति पाने का मार्ग है– "साधना"। साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से धीरे-धीरे विपरीत परिस्थितियों को भी अपने सापेक्ष बनाया जा सकता है. . . इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम आपको **"सिद्धाश्रम सम्पूर्ण सिद्धि विशेषांक"** भेंट कर रहे हैं।

इस अंक में आप को मिलेगा– दरिद्रता को समाप्त करने के लिए **"स्वर्ण खप्पर प्रयोग"**, सिद्धाश्रम की एक ऐसी साधना, जिससे आपका जीवन ऊर्ध्वगामी बन सके, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यश-मान प्रदान करने वाली **"षोडशी स्तोत्र साधना"** इसके साथ ही जीवन के विविध भौतिक व आध्यात्मिक पक्षों को उजागर करते हुए विभिन्न लेख, जो आपके लिए और सिर्फ आपके लिए ही नहीं, आप की आने वाली समस्त पीढ़ियों के लिए भी एक अमूल्य धरोहर है।

समय इतनी शीघ्रता से समाप्त हो जाता है, जिसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता. . . और हमारा यही प्रयास रहा है कि आप अपने प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कर सकें। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हम पत्रिका का प्रत्येक अंक आप के हाथ में सौंपते हैं. . . और आप भी इसका सहर्ष स्वागत करते हैं, साथ ही अथक प्रयास भी करते हैं कि यह ज्ञान मात्र आप तक ही सीमित न रहे जन-जन तक फैल सके। आपके सहयोग का हम हृदय से स्वागत करते हैं, और पूर्ण विश्वास करते हैं कि **आप हमें सन् १९९५ में भी पूरे वर्ष पर्यन्त अत्यधिक उत्साह के साथ अपना सहयोग प्रदान करेंगे।**

नववर्ष की शुभकामनाओं व आशीर्वाद के साथ।

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

गुरु ही मोरी साधना

भौतिकता के बोझ तले दबकर आज अध्यात्म चूर-चूर हो रहा है, कैसी विडम्बना है यह! मनुष्य जानकर भी अनजान बना रहता है। जीवन का एक-एक पल जो बीतता जाता है, वही दूसरे पल हमें मौत की ओर खींचता है। आज भौतिकता ने हमारी आध्यात्मिकता को इस कदर ढांप लिया है, कि आध्यात्मिक्ता जल्दी से संसार के सामने उभर कर नहीं आ सकती, संसार चमत्कार को ही नमस्कार करता है। जो आंध्यात्मिकता के जानकार हैं, जो इस क्षेत्र में प्रवीण हैं या तो वे जंगलों में, गुफाओं में छिप गये हैं या उन्होंने अपने-आप को इस तरह छुपा लिया है, कि संसार उनके बारे में जान ही नहीं सके।

संसार में सभी आराम और वैभव के साथ जीना चाहते हैं, भौतिकता में जितनी जल्दी शारीरिक सुख-वैभव को भोगा जाता है, उतनी ही जल्दी गंवाया भी जाता है। इस वैभव को पाने और बनाये रखने के लिए भी जरूरत है आध्यात्मिकता की, साधना की, अपने-आप को जगाने की, चैतन्य करने की और ये सब आप किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन से ही प्राप्त कर सकते हैं।

शास्त्रों में आपने यत्र-तत्र सुना या पढ़ा होगा कि बिना गुरु के ज्ञान नहीं मिलता। यह सत्य है कि बिना गुरु के ना ज्ञान मिलता है, ना ही इस शरीर की गति ही होती है, और ना ही जीवन का आनन्द मिलता है। सच्चा और योग्य गुरु ही अपने शिष्य को साधना का सही मार्ग सिखाता है, उसे जीवन की सच्चाई से अवगत कराता है।

आज जो तुम्हारे सामने स्तम्भ रूप में खड़े हैं, उन्होंने अपने-आप को कितना तपाया होगा, सारा सुख-वैभव छोड़ कर जो तुम्हारे सामने तुम्हें ज्ञान देने के लिए खड़े हैं, जिसे तुम बिना कुछ किये प्राप्त करना चाहते हो। कभी सोचा है तुमने, किस तरह जंगलों में हिंसक पशुओं के बीच रह कर यह कठिन साधना मार्ग अपनाया होगा उन्होंने, यह सब किसके लिये किया? आपके और हमारे लिये, और हम इतने स्वार्थी हैं कि बिना कुछ खोये, बिना कुछ त्याग किये वह सब कुछ पाना चाहते हैं, जो दुर्लभ है।

जो गुरु की सच्ची सेवा करना चाहता है, उसे गुरु का विराट चिन्तन समझना होगा, गुरु की विराट क्रिया को समझने का प्रयास करना होगा, गुरु के शरीर को समझने की आवश्यकता नहीं है।

एक योग्य शिष्य तो अपने गुरु पर इस प्रकार से पलकें गड़ाये रहता है, जैसे चकोर चांद को निहार कर अपने में समेट लेना चाहता है। एक समर्पित शिष्य ही, एक चेतनावान शिष्य ही योग्य गुरु के मार्ग-दर्शन द्वारा साधना के क्षेत्र में, आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उतर सकता है, और वही फैला सकता है, वह प्रकाश जो गुरु उससे अपेक्षा करता है।

जो गुरु की सच्ची सेवा करना चाहता है, उसे गुरु का विराट चिन्तन समझना होगा, गुरु की विराट क्रिया को समझने का प्रयास करना होगा, गुरु के शरीर को समझने की आवश्यकता नहीं है, गुरु किसी शरीर का नाम नहीं, गुरु किसी हाड़-मांस के व्यक्ति को भी नहीं कहते, जिसके अन्दर गुरु तत्व है, जिस देह में वह ज्ञान की चेतना स्थित है, जो देह ब्रह्मदर्शन में लीन है, जो देह से परे हैं, जो सबमें समाये हुए हैं, उन्हें गुरु कहते हैं और यही गुरु शब्द की सही व्याख्या है, सही चिन्तन है।

जब कोई मनुष्य किसी योग्य गुरु की शरण में जाता है, तो वह बिलकुल अज्ञानी उद्देश्यहीन होता है, बिलकुल जंगल की मिट्टी की तरह। यहीं से शुरू होती है गुरु और शिष्य की अटूट परम्परा, कभी न बिछुड़ने का बन्धन। गुरु कुम्हार की संज्ञा में आ जाता है और शिष्य आता है मिट्टी की संज्ञा में, इसीलिए तो कहा है-

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है,
गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
भीरत-भीतर सहजि करि,
बाहिर-बाहिर चोट।

फिर गुरु तैयार करता है एक ऐसा सुन्दर घड़ा, जिसमें गुरु अपनी सारी तपस्या का शीतल जल भरकर, उसमें ज्ञान का समावेश करता है, उसके अन्तःपटल में अमृत की वर्षा करता है। तब तैयार होता है शीतल जल से भरा वह घड़ा, जो हजारों-लाखों लोगों की प्यास बुझाता है। एक ऐसा वृक्ष जो सैकड़ों लोगों को शीतल छाया प्रदान करता है, विश्राम प्रदान करता है। ऐसा ज्ञान का पुञ्ज, जो तैयार करता है सैकड़ों अपने जैसे ही ज्ञान के पुञ्ज, जो विस्तार करता है जन मानस में उस गुरु तत्व का, जिसे नेति-नेति कहा गया है। ऐसा कर सकता है एक समर्पित, चेतनायुक्त, योग्य शिष्य, जो तैयार हो आग में जलकर घड़ा

बनने के लिए, मिट्टी में मिलकर बीज बनने के लिए, अपना शीष उतार देने के लिए, इसलिए तो कहा है-

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं,
शीष उतारे भू धरे सो पैठे घर माहीं।

आज दुनियां में लाखों-करोड़ों शिष्य की संज्ञा में आते हैं, कुछ तो शिष्य बन कर भटक रहे हैं, क्योंकि उन्हें जो गुरु मिला वह खुद ही भटका हुआ था, जो अपनी डगर से खुद ही भटका हुआ होगा, जिसकी अपनी कोई मंजिल नहीं होगी, जिसका अपना कोई लक्ष्य नहीं होगा, वह दूसरों को क्या रास्ता दिखायेगा? क्या वह दूसरों को मंजिल तक पहुंचा पाएगा?

गुरु बनने के लिए पहले अच्छा शिष्य साबित होना पड़ता है, जो शिष्य किसी योग्य गुरु की कसौटी पर खरा उतरता है, वह ही गुरु पद का अधिकारी होता है, गुरु की जगह लेने के लिए कुछ लालची, अधम शिष्य गुरु की हत्या भी कर देते हैं, जैसे कि पद्मपाद ने अपने गुरु आद्य शंकराचार्य के साथ में किया, कुछ शिष्य लालचवश गुरु की देह के साथ ही चिपके रहते हैं। ऐसे शिष्य में भी अत्यन्त न्यूनताएं होती हैं, और गुरु में भी। वह तो खुद ही अपनी असलियत छुपाये होता है। वह तो वास्तव में उस गीदड़ की भांति है, जो शेर की खाल पहिन कर घूमता है।

जो सही अर्थों में शिष्य होगा वह देह के अलावा गुरु तत्व को अधिक महत्व देगा। वह गुरु के कार्यों को अधिक महत्व देगा, वह शिष्य गुरु के चिन्तन को, विचार को, उसके ज्ञान को महत्व देगा। जो सही अर्थों में गुरु हैं, वह शिष्य के जीवन में, सुख-दुःख में, अध्यात्म में, भौतिकता में, यानि जीवन के प्रत्येक पक्ष में शिष्य के समक्ष खड़ा होता ही है।

आज के दौर में यदि किसी गुरु से साधनात्मक या आध्यात्मिक वार्तालाप किया जाए तो वे केवल प्राचीन कथाओं तथा प्राचीन ग्रंथों के रटे-रटाये शब्द कोष ही दोहरा सकते हैं, उनका स्वयं का आत्म-मंथन, जीवन का सार, तपस्या का अंश, शिष्य की परिभाषा, गुरु तत्व का बोध कुछ भी तो उनके जीवन में नहीं पाया जा सकता है।
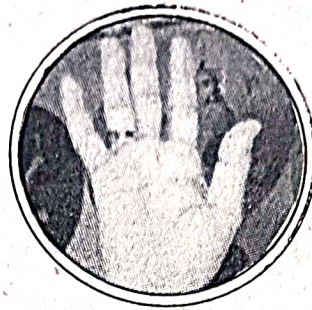
आवश्यकता है आप अपने-आप को पहिचान कर अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी गति प्रदान करें। एक छोटी से छोटी चिंगारी भी कल देश के लिए पूर्ण ज्योति का कार्य करेगी, समस्त विश्व को प्रकाशित करेगी, हजारों-लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

वे स्वयं एक ऊंचे सिंहासन पर विराजमान होकर, दूर से अपने शिष्यों से चरण स्पर्श करवा कर ज्यादा से ज्यादा दान की याचना करते नजर आयेंगे। वे क्या किसी शिष्य को अभय प्रदान कर सकते हैं, जो स्वयं मृत्युभय से प्रत्येक क्षण ग्रसित रहते हैं। उन्होंने केवल संसार के कर्मों का त्याग किया है। मोह, लोभ, काम, क्रोध, अहंकार, आलस्य को वे भी नहीं त्याग पाये। जबकि मृत्युलोक का मुख्य आधार ही कर्म है, कर्म त्याग कर कोई भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति केवल गेरुए वस्त्र धारण करने वाले को ही गुरु बना बैठे, वे व्यक्ति सही अर्थों में केवल वस्त्रों से ही मानव की पहिचान करते हैं, उन्हें तो वस्त्रकार के अलावा कुछ कहा ही नहीं जा सकता।

लेकिन आज भी कभी-कभी इस प्रकृति की गोद में कुछ युग पुरुष जन्म लेते हैं, चाहे वे राम हों या कृष्ण हों, चाहे वे गौतम हों। ऐसे अवतारी पुरुष स्वयं प्रकाशवान, दैदीप्यमान होते हैं, उनका रोम-रोम ज्ञान की व्याख्या करता प्रतीत होता है। वे जन मानस में स्वतः अपनी कलाओं का विस्तार कर, अपने-आप को छुपा कर, अपने उद्देश्य को पूर्ण करते रहते हैं। जबकि सद्गुरु कभी अपना प्रचार नहीं करते, उनकी देह से स्वतः ही अष्टगंध प्रवहित होती है, और जो ऐसे दिव्य पुरुष की सामीप्यता प्राप्त कर ले, उसके समान तो संसार में कोई बड़भागी हो ही नहीं सकता।

और आज मैं अपने पूज्य गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से जो कि वर्तमान में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के नाम से विख्यात हैं, अत्यन्त विगलित कंठ से, अत्यन्त प्रार्थनामय हृदय से क्षमा मांगते हुए उनके बारे में कुछ कहने की धृष्टता कर रहा हूं।

सिद्धाश्रम का एक-एक योगी, तपस्वी, अप्सरा, गन्धर्व, यक्ष, देवता जिनके दर्शन मात्र प्राप्त करने के लिए अपनी सैकड़ों वर्षों की तपस्या को बीच में छोड़ कर ही खड़े हो जाते हैं, और साष्टांग दण्डवत कर अपने-आप को गर्वित अनुभव करते हैं, अप्सरायें जिनके चरणों की रज को अपने ललाट पर लगाकर कृतकृत्य अनुभव करती हैं, ऐसे सिद्धाश्रम के योगीराज परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी आज हमारे मध्य में उपस्थित हैं, यह तो

अपने-अपने भाग्य की बात है कि कोई कितना इस ज्ञान के सागर में डूब सकता है। आज हमारी आंखों पर, आत्मा पर छल, कपट, झूठ, माया का इतना गहरा परदा पड़ा है कि उसको हटाते-हटाते कई युग बीत जायेंगे और ऐसे युग पुरुष का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए फिर हमारे पास कुछ नहीं बचेगा। आज कोई दस करोड़ रुपये खर्च करके भी कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त नहीं कर सकता।

पूज्य गुरुदेव का एक-एक रोम, एक अलग उपनिषद की व्याख्या करता प्रतीत होता है। पूज्य गुरुदेव के मुख से उच्चरित हुआ एक-एक शब्द एक नवीन मंत्र की रचना करता प्रतीत होता है। **पूज्य गुरुदेव का जीवन, उनके जीवन का एक-एक पल अपने शिष्यों के लिए और इस समाज की उन्नति के लिए, नवीन ज्ञान, साधनाओं की पुनर्स्थापना के लिए ही समर्पित है। उनका चिंतन एक विराटता लिये हुए हैं।**

मैंने उन्हें अपने शिष्यों के लिए ही नहीं, अपने परिवार के लिए ही नहीं वरन् देश-विदेश में हो रहे नर-संहार के प्रति अति सोचनीय अवस्था में देखा है, ऐसे नाजुक विषयों को लेकर उनके नेत्रों में मैंने अश्रुधार देखी है।

वे एक उच्चकोटि के मंत्र स्रष्टा सिद्ध हो रहे हैं इस समाज के लिए, इस विश्व के लिए, हम सभी शिष्यों व साधकों के लिए। मंत्रों के प्रति जो हमारा समाज आस्था खो चुका था, उसे पूज्य गुरुदेव ने पुनर्जीवित किया है, आज हजारों-लाखों साधक, शिष्य उनसे लाभ उठा रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव का अपने शिष्यों - साधकों, साधिकाओं और गृहस्थ व्यक्तियों के लिए एवं पूरे समाज के लिए सदा समद्रष्टा भाव रहा है। उनका मानना है कि समाज में कोई भी व्यक्ति छोटा अथवा बड़ा नहीं है; आवश्यकता है वह व्यक्ति अपने-आप को पहिचान कर अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी गति प्रदान करे। एक छोटी से छोटी चिंगारी भी कल देश के लिए पूर्ण

जो मैंने देखा है, जो मैंने पाया है, उसे ही शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया है। भावनात्मक स्तर पर, विचारात्मक स्तर पर और शिष्य के रूप में मेरे हृदय में पल-पल जो आवाज गुंजरित होती है वही तो गुरुदेव हैं, और मेरे विचार से ऐसी भावनाएं मुझ जैसे हजारों उन शिष्यों की हैं जो कि गुरुदेव से किसी न किसी रूप में, किसी न किसी जन्म से जुड़े हुए हैं। ● डॉ० राजेन्द्र सिंह धल, दिल्ली
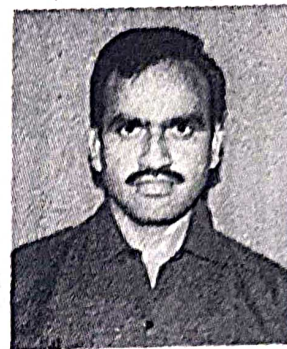
ज्योति-स्तम्भ का कार्य करेगी, समस्त विश्व को प्रकाशित करेगी, हजारों-लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

और पूज्य गुरुदेव अनवरत इन्हीं उद्देश्यों को लेकर अपने तपस्या के अंश को दीक्षा के माध्यम से अपने शिष्यों में लगातार प्रवहित करते ही रहते हैं, इतनी उदारता के साथ अपने तपस्यांश को वितरित करना तो मात्र पूज्य गुरुदेव का ही कार्य हो सकता है। स्थान-स्थान पर शिविरों का आयोजन कर अत्यन्त गोपनीय साधनाएं, दुर्लभ मंत्र, कठिन से कठिन यौगिक क्रियाओं को पूज्य गुरुदेव जन साधारण में स्थापित कर रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव का एक ही चिन्तन है, कि किसी प्रकार मैं इस समाज को, इस देश को जीवित, जाग्रत व चैतन्य शिष्य रूपी ग्रंथ देकर जाऊं, जिससे आने वाली पीढ़ी इस झुलसन में, इस तपन में, जहां हर समय युद्ध, आतंक, भुखमरी तथा अकाल-मृत्यु के बादल मंडराते रहते हैं, उसमें शांति के दो पल प्राप्त कर सकें। अनेकानेक विषम परिस्थितियों में भी उनके होठों पर मुस्कराहट फैल सके। भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ ही उनके जीवन में ध्यान हो, धारणा हो, समाधि हो। उनके हृदय में जागरुकता हो। ऊर्ध्वगामी बनने की सतत् प्रक्रिया हो। हर प्रकार से जीवन में खुशहाली हो।

इतना सब कुछ होने के बावजूद भी समाज से उन्हें क्या प्राप्त हो रहा है, आलोचनाओं का जहर, अपमान के कड़वे घूंट, अश्रद्धा, छल, कपट, जन-मानस में उठते सन्देह के जहरीले शब्द।

जिस प्रकार से राम आये और कृष्ण आये समाज की आलोचनाओं का जहर पीया और सामान्य बने रहते हुए भी अपना उद्देश्य पूर्ण कर चले गये। बाद में उनके मंदिर बनवाने से और भजन गाने से चीखने-चिल्लाने से किसी को न तो लाभ मिला है और भविष्य में मिल भी नहीं सकता है।

वर्तमान में ही जागकर उस युग स्रष्टा को पहिचान लें, दौड़ कर उनके कदमों को पकड़ लें, उन्हें अपने हृदय में समाहित कर लें, और जो ऐसा कर लेगा वह निश्चय ही समाज के लिए ज्योति-स्तम्भ साबित होगा, एक युग पुरुष साबित होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह मानव, यह समाज, यह देश, यह शिष्य समुदाय, ये साधक-साधिकाएं शीघ्र ही उनकी महत्ता को समझेंगे, उनकी उपस्थिति के महत्व को आंकेंगे, उनसे कुछ लाभ ले पायेंगे। एक सच्चे सद्गुरु के कार्यों को, उनके चिन्तन को, उनके एक-एक शब्द को अपने हृदय में स्थान दे पायेंगे, और यह समस्त मानव जाति उन्हें अवश्य ही समझेगी और समय से पूर्व समझेगी ही।

और अन्त में इतना ही कह सकता हूं कि-

गुरुर्वै शरण्यं प्रणम्यं नमामि
सिद्धाश्रमो त्वं प्रणम्यं नमामि

भूत भविष्य को प्रत्यक्ष देखने के लिए

"ललिताम्बा, ऐसी श्रेष्ठ एवं दिव्य साधना . . . जो प्रदान करती है ''शून्य सिद्धि'', जिसके प्राप्त हो जाने पर वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त किया जा सकता है. . . जिसके सिद्ध होने पर अनन्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं, और साथ ही समस्त शत्रुओं का शमन कर साधक के जीवन की भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी न्यूनताओं को समाप्त करने वाली . . . देवी स्वरूपा जो व्यक्ति के जीवन क्रम को परिमार्जित कर, उसे त्रिकालदर्शी बना देती है।"

यों तो किसी भी देवी की पूजा व साधना की जाए, शीघ्र सफलता मिलती ही है, क्योंकि मां का हृदय तो होता ही करुणामय है, ममतामय है, अपने इसी विशालतम करुणामयी स्वरूप के कारण ही वह ''देवी स्वरूपा'' कहलाती है, और दे देती है वह सब कुछ, जो उसके पास है, जिससे उसके पुत्र अथवा आत्मीय को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न झेलना पड़े, फिर उसके जीवन में किसी
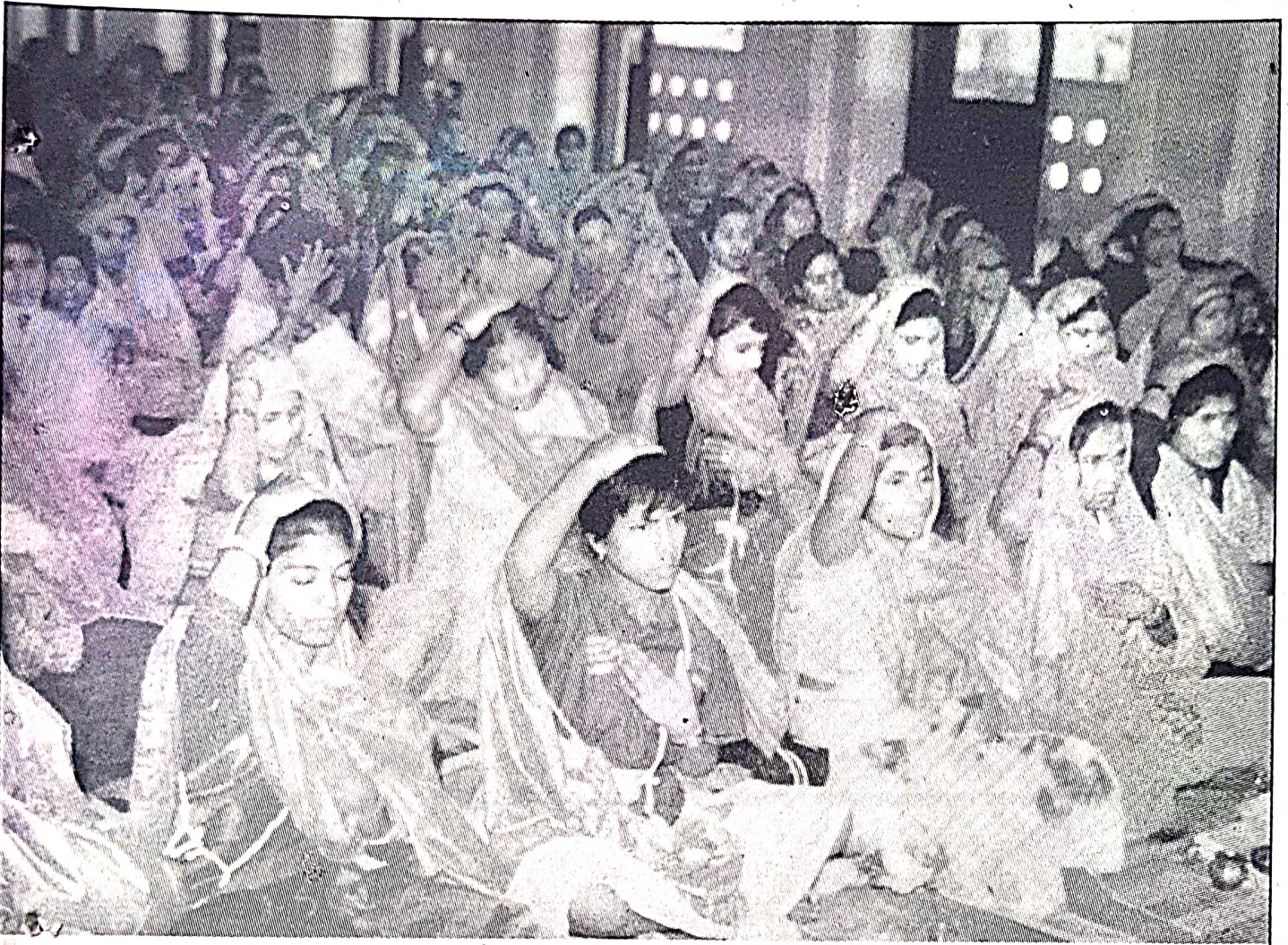
अन्य दस महाविद्याओं से भी परे एक और स्वरूप ललिताम्बा. . . जिसके सिद्ध हो जाने से व्यक्ति अपने या किसी के भी भूत व भविष्य को देखकर उसके बारे में जान सकता है. . . और यह उसके जीवन का सौभाग्यशाली क्षण होता है!

भी प्रकार की बाधाएं एवं अड़चनें नहीं आतीं, वह उसके जीवन की प्रत्येक समस्याओं को दूर कर, जो उसके जीवन की उन्नति में बाधक सिद्ध हो रही होती है, स्वच्छ एवं सरल मार्ग प्रशस्त करती है, जिस पर चलकर उसका जीवन सुखमय बन जाता है, उसकी समस्त त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर उसे सम्पन्नता युक्त जीवन प्रदान करती है।

देवी के तो अनेक रूप होते हैं– जगदम्बा, दुर्गा, तारा, काली, किन्तु इन दस महाविद्याओं से भी परे एक और स्वरूप है "ललिताम्बा" जो ब्रह्माण्ड के समस्त सिद्धियों की स्वामिनी है। जहां वह अपने प्रेम, स्नेह और करुणा से साधक को अपना आशीर्वाद प्रदान करती है, वहीं उसे पूर्व जन्मकृत पाप-दोषों से अवगत कराकर तथा उसके जीवन के समस्त शत्रुओं का विनाश कर उसे एक चिन्तामुक्त जीवन प्रदान करती है, और ये शत्रु हैं– उसके भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की समस्त न्यूनताएं।

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति सौन्दर्य युक्त, प्रभाव युक्त, शक्तिशाली एवं अद्वितीय जीवन जीना चाहता है, और
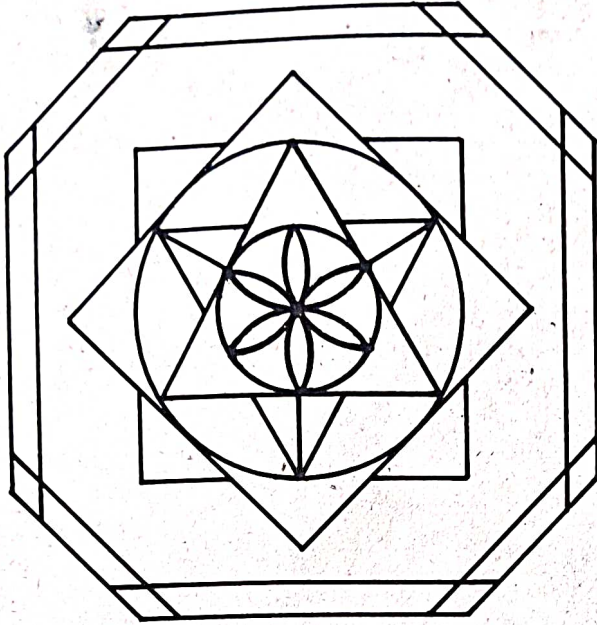
ललिताम्बा. . . जो कि ब्रह्माण्ड की भी स्वामिनी है, साधक को वह सब कुछ जो उसके विचारों एवं कल्पना से भी परे हो, प्रदान करने में समर्थ है।

इसके लिए वह भरसक प्रयत्न भी करता है, किन्तु अपने-आप को असफल एवं असमर्थ ही पाता है, और इस असमर्थता को दूर करने के लिए वह कोई भी मार्ग, कोई भी उपाय करने के लिए तत्पर रहता है, ऐसे क्षणों में यदि उसे सही मार्ग प्रशस्त हो जाए, तो **वह अपने जीवन के उन अभावों को दूर कर एक पूर्ण जीवन जीने का अधिकारी हो जाता है, और उसी पूर्ण जीवन की सृष्टि वह कर सकता है ''ललिताम्बा साधना'' के माध्यम से।**

वैसे तो व्यक्ति किसी भी देवी-देवता की साधना सम्पन्न कर जीवन की बाधाओं एवं कष्टों को दूर करने में सफल हो सकता है, किन्तु देवी, जो कि शीघ्र ही प्रसन्न हो अपनी विशेष कृपा-दृष्टि साधक को प्रदान करती है, और वह भी ललिताम्बा, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भूत व भविष्य को जानकर, उनमें रह गई त्रुटियों का निराकरण कर अभाव मुक्त जीवन जी सकता है। ललिताम्बा जो कि ब्रह्माण्ड की भी स्वामिनी है, साधक को वह सब कुछ जो उसके विचारों एवं कल्पना से भी परे हो, प्रदान करने में समर्थ है।

यह उस मनुष्य का सौभाग्य ही है कि वह भगवती ललिताम्बा सिद्धि की ओर प्रवृत्त हो, क्योंकि अन्य देवियों की अपेक्षा भगवती ललिताम्बा की साधना अपने-आप में उत्कृष्ट और श्रेयस्कर मानी जाती है, और अन्य ग्रन्थों जैसे शंकर भाष्य, तंत्रसार, रस तंत्र, विश्वामित्र संहिता आदि के अनुसार इसकी सिद्धि से प्राप्त फलों का सर्वथा उल्लेख मिलता है, जो इस प्रकार है-

वह व्यक्ति अथवा साधक पूरे संसार में, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है, फिर जीवन में उसे किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता। इसकी साधना से नपुंसक व वृद्ध व्यक्ति भी पूर्ण यौवनवान एवं कामदेव के समान सुन्दर बन जाता है, उसे ''शून्य सिद्धि'' स्वतः ही प्राप्त हो जाती है, और सिद्धि प्राप्त हो जाने पर फिर वह वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त कर सकता है।

वास्तव में यह साधना गोपनीय एवं दिव्य है। गोरक्ष संहिता के अनुसार यह साधना गोपनीय ही नहीं, महागोपनीय है। इसे सम्पन्न करने पर साधक को विभिन्न लाभ प्राप्त होते हैं–

१. इस साधना को सम्पन्न करने के बाद उस व्यक्तित्व में भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह का परिवर्तन परिलक्षित होता है।
२. इस साधना को सिद्ध करने के पश्चात् साधक धन-धान्य, सुख-सौभाग्य से परिपूर्ण होकर श्रीवान और ऐश्वर्यवान बन जाता है।
३. उसके जीवन का क्रम अपने-आप में अद्वितीय और परिमार्जित हो जाता है।
४. इसके साथ ही साथ उसके शत्रु पक्ष का स्वतः ही

शमन हो जाता है।

५. आध्यात्मिक क्षेत्र में उसको दिव्य अनुभूतियां होने लगती हैं, तथा अनन्त सिद्धियां स्वतः ही उसके पास आ जाती हैं।

६. इस साधना के बाद साधक का तृतीय नेत्र खुल जाता है, वह "त्रिकालदर्शी" बन जाता है, और तब वह किसी के भी भूत और भविष्य को देखकर उसके बारे में जान सकता है, और यह उसके जीवन का सौभाग्यशाली क्षण होता है।

यह ऐसी ही अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधना है, जिसे किसी गुरु या मार्गदर्शक के निर्देशन में ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि इस तरह की साधनाओं के लिए मार्गदर्शक के रूप में गुरु का होना अति आवश्यक होता है। वैसे भी साधना पक्ष अपने-आप में ही दुरूह और सूक्ष्म होता है, उस स्थिति में साधक ऐसी साधना को जब कभी भी अनुकूल तिथि या अवसर आए, अवश्य सम्पन्न करें।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह इस साधना को **मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पूर्णमासी, बुधवार तारीख १६.१.९५ को रात्रि ६.१२ से १०.४८ तक महेन्द्र काल** में प्रारम्भ करें।

यह साधना तीन दिन की साधना है। साधना से पूर्व साधक स्नान आदि से परिशुद्ध होकर, पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर पूर्व या उत्तराभिमुख होकर बैठ जाय। साधक अपने सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर **गुरु चित्र** या **गुरु यंत्र** को स्थापित करके उनका विधिवत् पूजन करें, तथा एक माला गुरु मंत्र-जप सम्पन्न करें।

इसके पश्चात् तांबे की एक प्लेट पर कुंकुम से **"ह्रीं"** लिखकर **ललिताम्बा यंत्र** को उस पर स्थापित कर दें, फिर उसका अक्षत, धूप, दीप, चन्दन, पुष्पादि से यथा विधि पूजन करके, अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक भगवती ललिताम्बा की कृपा प्राप्ति हेतु तथा सकल मनोरथ सिद्धि और भूत-भविष्य जानने हेतु इस मंत्र-जप को सम्पन्न कर रहा हूं। ऐसा कहकर फिर उस जल को जमीन पर छोड़ दें, तथा ३५ मिनट तक **मूंगा माला** से निम्न मंत्र-जप सम्पन्न करें, ऐसा साधक तीन दिन तक करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ललिताम्बायै फट्

मंत्र-जप समाप्ति के बाद माला एवं यंत्र को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर देना चाहिए।

प्रत्यक्ष प्रमाण एवं सीमाएं

● विजय कुमार शर्मा
रायपुर (म०प्र०)

क्या जो दिखाई देता है अथवा प्रत्यक्ष है वही सत्य है, प्रमाणित है, नहीं। प्रमाण तो प्रत्यक्ष दृश्य, प्रत्यक्ष ज्ञान और बाह्य दृश्य से आगे एक और ऐसा ज्ञान है जो केवल आन्तरिक चैतन्यता से ही प्राप्त हो सकता है। जब आत्म साक्षात्कार, कुण्डलिनी जागरण द्वारा होता है तो ज्ञान होता है उस परम अनुभूति का जो शाश्वत है, परमात्मा है।

इसमें संदेह नहीं, कि ज्ञान-प्राप्ति के क्षेत्र में प्रमाणों का बड़ा महत्व है, विशेषकर 'प्रत्यक्ष प्रमाण' तो व्यवहारिक जगत में ज्ञान-सिद्धि का एक प्रधान माध्यम है।

भारतीय दर्शनों में वर्णित प्रमाणों का विश्लेषण करते हुए यह ध्यान में रखना होगा, कि प्रत्यक्ष प्रमाण की अपनी एक निश्चित सीमा है। इस सीमा के भीतर ज्ञान-प्राप्ति में प्रत्यक्षतः से सहायता मिलती है, किन्तु ज्ञान तो असीम है। जहां तक हमारी आंखें देखती हैं, कान सुनते हैं, हम केवल वहां तक ही ज्ञान की सीमा को निश्चित नहीं कर सकते। ज्ञान के अनेक परिक्षेत्र ऐसे होते हैं, जहां स्थूल इंद्रियों से कोई सहायता नहीं मिलती।

आध्यात्मिक जिज्ञासा मनुष्य का स्वभाव है, अपनी इस जिज्ञासा के समाधान के लिए मनुष्य अनेक अवलम्ब ग्रहण करता है, कभी वह स्थूल आंखों से देखकर दृश्यमान जगत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अग्रसर होता है, तो कभी अतीन्द्रिय के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के लिए सचेष्ट होता है।

गीता के अनुसार प्रकृति के दो प्रभेद हैं— प्रथम, जड़ प्रकृति, जिसके अंतर्गत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार को सम्मिलित किया है, और द्वितीय— चेतन अपरा जीवरूपा प्रकृति, जिससे सम्पूर्ण जगत धारण किया जाता है।

सामान्यतः हम प्रत्यक्ष के द्वारा जड़ प्रकृति का ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। कम-से-कम भौतिकवादी चार्वाकों का तो यही मत है, कि "एकमेव प्रत्यक्ष प्रमाण से ही हम सत्य ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं।" केवल प्रत्यक्ष को मानने के कारण चार्वाक-दर्शन में अनुमान आदि अन्य प्रमाणों का खंडन किया गया है।

भारतीय ज्ञान मीमांसा प्रमाण शास्त्र पर ही आधारित है, किन्तु केवल प्रत्यक्ष को मान्यता प्रदान कर चार्वाकों ने अनुमानादि से सिद्ध ईश्वर, आत्मा, परलोक आदि तथ्यों को मानने से इंकार कर दिया है। इस तरह चार्वाक-दर्शन में प्रत्यक्ष की एक सीमा निश्चित कर दी गई है।

यदि हम चार्वाक-दर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करें, तो अनेक महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर हमारे सामने आते हैं। चार्वाक के समय यज्ञ, कर्मकांड आदि का परिक्षेत्र काफी फैला हुआ था, और यज्ञों की मान्यता वेदों की प्रामाणिकता पर निर्भर थी। यही कारण है, कि चार्वाक मत के अनुयायियों ने यज्ञ के साथ ही वेदों का भी विरोध किया।

उन्होंने कहा-"अग्निहोत्र, तीन वेद, त्रिदंड धारण (संन्यास), शरीर में भस्म का लेप— ये सब बुद्धिहीन और पुरुषार्थहीन लोगों की जीविका के साधन हैं।"

अतीन्द्रिय पदार्थों को चार्वाकों ने मानने से इंकार किया है, यह कोई अनहोनी बात नहीं है। वर्तमान युग में तर्कनिष्ठ भाववादियों ने भी ऐसा ही सिद्धान्त प्रतिपादित किया है— वेदों और कर्मकांड की निंदा कोई नई बात नहीं है। बौद्धों और जैनों ने भी वेदों को प्रमाण मानने से इंकार किया है। स्वयं उपनिषदों में कर्मकांड का विरोध पाया जाता है।

प्रमाण-विचार के संदर्भ में यदि चार्वाक सभी मतों का खंडन करते हैं, तो उनके विचारों को भी

अमान्य किया जा सकता है।

हम कह सकते हैं, कि सत्य केवल उतना ही नहीं, जितना स्थूल इंद्रियों से अनुभव किया जाता है। सत्य दृश्यमान जगत से भी परे व्याप्त है, और प्रत्यक्ष की सीमा को केवल दृश्यमान जगत तक ही रेखांकित किया जा सकता है।

न्याय-दर्शन में अवश्य प्रत्यक्ष की सीमा कुछ अधिक निश्चित की गई है। लौकिक प्रत्यक्ष में ही बाह्य प्रत्यक्ष के अतिरिक्त 'मानस-प्रत्यक्ष' का विश्लेषण करते हुए नैयायिकों ने मानसिक अनुभूतियों का एक व्यापक क्षेत्र स्वीकार किया है।

इतना ही नहीं, वरन् अलौकिक प्रत्यक्ष के अन्तर्गत सामान्य लक्षण, ज्ञान लक्षण और योगज प्रत्यक्ष जैसे प्रमाण-प्रभेदों में भी प्रत्यक्ष का व्यापक अर्थ ग्रहण किया गया है, विशेषकर 'योगज प्रत्यक्ष' में चमत्कारों को भी सम्मिलित किया गया है, जिनका अनुभव सामान्य स्थूल इंद्रियों से नहीं हो पाता।

न्याय वैशेषिक,जैन तथा मीमांसा दर्शनों में मन को भी एक इंद्रिय के रूप में स्थापित करते हुए प्रत्यक्ष की सीमा को एक व्यापक क्षितिज प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

जैन दार्शनिक तो बाह्य एवं आंतरिक दोनों प्रकार की सिद्धियों को महत्व प्रदान करते हैं, और यही कारण है, कि योगाचारी बौद्धों, मीमांसकों और नैयायिकों के सिद्धान्तों से उनके सिद्धान्त नितांत विपरीत हैं।

योगाचारियों के अनुसार ज्ञान स्वयं को ही प्रकाशित करता है, क्योंकि उनके अनुसार बाह्य वस्तुओं का कोई अस्तित्व ही नहीं है। नैयायिकों एवं मीमांसकों का मत है, कि "ज्ञान स्वयं को प्रकाशित नहीं करता, यह केवल बाह्य जगत की वस्तुओं को ही प्रकाशित करने में समर्थ होता है।"

न्याय दर्शन ने तो यहां तक कहा है, कि प्रमाणादि सोलह पदार्थों के "तत्व-ज्ञान" से निश्रेयस की भी सिद्धि संभव होती है, और इन प्रमाणादि सोलह पदार्थों में 'प्रत्यक्ष' भी सम्मिलित है।

निश्रेयस की सिद्धि में प्रत्यक्ष को प्रथम सोपान माना जा सकता है। बौद्ध दार्शनिक धर्म कीर्ति का भी अभिमत है– "सम्यक ज्ञान से सभी पुरुषार्थों की सिद्धि होती है।"

हम यह कह सकते हैं, कि "तत्व-ज्ञान" या "सम्यक ज्ञान" में प्रमाणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और प्रमाणों में प्रत्यक्ष का महत्व भी असंदिग्ध है। यद्यपि इसकी सीमा इंद्रियों तक ही सीमित है, तथापि इससे पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है।

– "इंद्रियार्थ सन्निकर्ष" कहकर नैयायिकों ने प्रत्यक्ष की ऐसी सीमा निश्चित कर दी, जिसका अतिक्रमण करना सम्भव नहीं। उद्योत्कर ने तो इंद्रियों के निश्चित सम्बन्ध को ही प्रत्यक्ष के अंतर्गत स्वीकार किया है।

सांख्य-योग दर्शन में भी प्रत्यक्ष की सीमा निश्चित करते हुए कहा गया है, कि इससे केवल स्थूल पदार्थों का ही ज्ञान प्राप्त होता है तथा अतीन्द्रिय पदार्थों के ज्ञान के लिए अनुमान का आश्रय लिया जाता है।

यदि हम तुलनात्मक अध्ययन करें, तो यह स्पष्ट होता है, कि पूर्व मीमांसा के दार्शनिकों ने सांख्य योग से भी कम सीमा प्रत्यक्ष की स्वीकार की है। वे कहते हैं– "प्रत्यक्ष बुद्धि अर्थ विषयक होती है, न कि बुद्धि विषयक। प्रत्यक्ष पदार्थों का होता है, पदार्थों के ज्ञान का नहीं।"

इसमें सन्देह नहीं, कि प्रमाण यथार्थ ज्ञान के स्रोत होते हैं। समग्र रूप से प्रमाणों के द्वारा हम 'तत्व' का या 'सत्य' का ज्ञान प्राप्त करते हैं, परन्तु प्रत्येक प्रमाण एक सीमा-क्षेत्र में कार्य करते हैं। यदि हम उस सीमा का अतिक्रमण करते हैं, तो सत्य-ज्ञान की परिधि से बहिर्गमन कर जाते हैं, जैसे सादृश्यता यदि नहीं है, तो उपमान प्रमाण सार्थक नहीं कहलायेगा। यदि कार्य-कारण, सम्बन्ध या हेतु साध्य सम्बन्ध नहीं है, तो व्यारित-सम्बन्ध सिद्ध नहीं होगा, और यह अनुमान प्रमाण की परिधि में नहीं आयेगा।

जब हम किसी जानवर को देखते हैं, जिसके खुर, सींग, पूंछ आदि हैं, तो इन अवयवों को देखना तो प्रत्यक्ष है, किन्तु जब हम कहते हैं, कि 'यह गाय है' तो यह प्रत्यक्ष न होकर अनुमान हो जाता है, इसमें स्मृति का अंश होता है। हम अतीत में सुनी या देखी बातों के आधार पर कहते हैं–

अनुमान प्रमाण के लिए जिस हेतु आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए हमारी ज्ञानेन्द्रियों तथा मन के साथ ज्ञेय वस्तु या तत्व का सन्निकर्ष आवश्यक है।

यदि ऐसा सन्निकर्ष सम्भव न हो, तो हम उस वस्तु का यथार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, जैसे कोई वस्तु बहुत दूर है और जब तक हम उसे देख नहीं सकते, तब तक उसके यथार्थ स्वरूप का हमें बोध नहीं हो सकता, क्योंकि हमारे देखने, सुनने या स्पर्श करने की विविध सीमाएं हैं, और साथ ही, देश-काल की सीमा भी प्रत्यक्ष ज्ञान में बाधक होती है।

यद्यपि न्याय के आचार्यों ने योगज प्रत्यक्ष को भी स्वीकार किया है, जिसके अन्तर्गत अतीन्द्रिय पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः योगज प्रत्यक्ष की सीमा दृश्यमान जगत से भी परे चली जाती है।

भारतीय और पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक दार्शनिक भी प्रत्यक्ष के दो

भेद मानते हैं— 'निर्विकल्प प्रत्यक्ष' और 'सविकल्प प्रत्यक्ष।' निर्विकल्प प्रत्यक्ष में वस्तु के अस्तित्व मात्र का बोध होता है, जैसे "कुछ है" और "कुछ नहीं है" के बीच जब ज्ञान स्पष्ट हो जाता है, तो उसे सविकल्प प्रत्यक्ष कहते हैं।

जयन्तभट्ट ने इसीलिए कहा है— "निर्विकल्प और सविकल्प दोनों में वस्तु की आत्मा एक ही रहती है, भेद केवल इतना ही है, कि निर्विकल्प में वह "अनाख्यात" अथवा "अव्यक्त" रहती है, और सविकल्प में 'आख्यात' अथवा 'व्यक्त' हो जाती है।"

ज्ञान का यह रूप बहुत से पाश्चात्य दार्शनिकों को मान्य नहीं है। पाश्चात्य दार्शनिक यह मानते हैं, कि निर्विकल्प प्रत्यक्ष और सविकल्प प्रत्यक्ष की यात्रा प्रत्यक्षजन्य न होकर अनुमानजन्य होती है— जब हम किसी जानवर को देखते हैं, जिसके खुर, सींग, पूंछ आदि हैं, तो इन अवयवों को देखना तो प्रत्यक्ष है, किन्तु जब हम कहते हैं, कि 'यह गाय है' तो यह प्रत्यक्ष न होकर अनुमान हो जाता है, इसमें स्मृति का अंश होता है। हम अतीत में सुनी या देखी बातों के आधार पर कहते हैं— 'यह गाय है,' अतः पाश्चात्य दार्शनिकों के अनुसार प्रत्यक्ष कथन बहुत ही सीमित होता है।

प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक **प्लेटो** ने प्रत्यक्षजन्य ज्ञान को न केवल भ्रामक कहा है, अपितु यह मत भी व्यक्त किया है, कि इंद्रियजन्य अनुभव ही यदि यथार्थ ज्ञान है, तो व्यक्तिगत प्रतीती ही तो प्रमाण होगी।

वास्तविकता यह है, कि प्रत्येक व्यक्ति की इंद्रियां भिन्न-भिन्न होती हैं। अतः उनके इंद्रियजन्य अनुभव भी भिन्न-भिन्न होंगे, इस तरह की प्रतीतियां भविष्य के संदर्भ में संदिग्ध ही कही जायेंगी।

"रिपब्लिक" ग्रंथ में प्लेटो ने प्रत्यक्ष को सीमित ही माना है। **'डेकार्ट'** एवं **'स्पिनोजा'** की भी ऐसी ही मान्यता है। ब्रिटिश दार्शनिक **'जॉन लॉक'** ने भी प्रत्यक्ष की सीमा निश्चित करते हुए ज्ञान-प्राप्ति के सहायतार्थ प्रमाणों के अंतर्गत इंद्रियजन्य ज्ञान को उस प्रत्यक्ष तक सीमित माना है, जिसमें आकार, प्रकार और संख्या भेद तक के गुण ही विद्यमान होते हैं।

उपर्युक्त प्रसंग में तर्कीय प्रत्यक्षवादियों के मतों का भी उल्लेख जरूरी हो जाता है। तर्कीय प्रत्यक्षवाद के मूल में यह धारणा है, कि "इंद्रियजन्य ज्ञान ही एकमात्र यथार्थ ज्ञान, स्रोत है, यदि इंद्रियानुभव से परे कोई सत्ता है, तो वह अर्थहीन है।"

"एअर" का स्पष्ट शब्दों में कथन है, कि कोई भी वाक्य, जो हमारे सभी इंद्रियानुभव से परे है, और संकेत करता है, अर्थ नहीं रखता, जिसका अभिप्राय यह है, कि उन लोगों का सारा प्रयास, जिन्होंने इस प्रकार की सत्ता के वर्णन की कोशिश की है, अर्थहीन है।

भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष की सीमा इंद्रियों से होने वाले ज्ञान और मन तक ही मानी गई है। बाह्य ज्ञान के लिए हमें दूसरे प्रमाणों की सीमा में प्रविष्ट होना पड़ता है।

प्रत्यक्ष को देखकर हमें जब अप्रत्यक्ष का ज्ञान प्राप्त करना होता है, तो हमें अनुमान आदि का आश्रय ग्रहण करना ही पड़ता है, जैसे पर्वत में धूम का अस्तित्व ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण का विषय है, परन्तु धूम की उपस्थितिं बाह्य प्रत्यक्ष का विषय होते हुए भी अनुमान के द्वार को उद्घाटित करती है। प्रसिद्ध नैयायिक अन्नमभट्ट "तर्कदीपिका" में ऐसा ही मानते हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं, कि "हेतु" या "व्याप्ति" के आधार पर हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो पाता, इसके लिए हेतु अनुमान का अवलम्ब ग्रहण करना पड़ता है— **जो भी विषय अतीन्द्रिय या मन के समान अगोचर होगा, हम प्रत्यक्ष के द्वारा उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।**

यही कारण है, कि आत्मा, ईश्वर, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक आदि से सम्बन्धित दार्शनिक समस्याओं का समाधान हम प्रत्यक्ष के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते। ज्ञान के लिए हमें 'अनुमान' शब्द या 'अंतरानुभूतियां' का अवलम्बन लेना ही पड़ता है।

गीता के त्रयोदश अध्याय में "क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ" मीमांसा के अन्तर्गत प्रत्यक्ष की सीमा "क्षेत्र" तक ही निश्चित की गई है। श्री कृष्ण कहते हैं—

"पंचमहाभूत, अहंकार, बुद्धि
और मूल प्रकृति भी,
दसेन्द्रियां, मन, पंचेन्द्रियों के विषय
(शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध)
इच्छा, द्वेष, सुख-दुःख
स्थूल-देह पिंड, चेतना और धृति
इस प्रकार विचारों सहित क्षेत्र होता है।"

"क्षेत्र" की उपर्युक्त व्याख्या प्रत्यक्ष की सीमा निश्चित करने में पर्याप्त सहायक है।

विशिष्टा-द्वैतवादी 'आचार्य रामानुज' ज्ञान को द्रव्य मानते हैं— प्रत्यक्ष को उन्होंने "साक्षात्कारिणी प्रमाण" कहा है। इसकी सीमा निश्चित करते हुए वे कहते हैं, कि "साक्षात्कारिणी प्रमाण से अभिप्राय ऐसे ज्ञान से है, जो वस्तुओं एवं इंद्रियों के सन्निकर्ष से उत्पन्न होता है। प्रत्यक्ष में इंद्रियां वस्तुओं को ग्रहण करती हैं और मन द्वारा आत्मा को वस्तु का साक्षात्कार कराती हैं।"

दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है, कि "द्रव्य रूपी ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से निकलकर वस्तु से संयुक्त होता है। साक्षात्कार आत्मा को होता है, क्योंकि प्रत्यक्षीकरण में आत्मा मन से संयुक्त होती है, और मन इंद्रियों से।"

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है, कि प्रत्यक्ष की सीमा इंद्रिय ज्ञान की सीमा है, किन्तु इसकी सार्थकता तभी है, जब इससे प्राप्त ज्ञान संदेह और भ्रमरहित हो। ❋

श्रीयंत्र, मोती शंख आदि के नाम से तो आप सभी परिचित होंगे, किन्तु "स्वर्ण खप्पर" जैसा दुर्लभ प्रयोग बहुत कम ही लोगों को ज्ञात है। वास्तव में ही अगर हजारों लक्ष्मी की साधनाओं को एकत्र कर लिया जाए, तो उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान यह **"स्वर्ण खप्पर प्रयोग"** है। भारतीय शास्त्रों व पुराणों के अनुसार ही हमें यह ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वजों, ऋषियों आदि ने धन, वैभव, समृद्धि प्राप्त करने के लिए अनेकानेक साधनाएं सम्पन्न कीं।

महाबली रावण अपने-आप में अत्यन्त ही बलवान और अद्वितीय तंत्र ज्ञाता थे, जो बचपन में अत्यन्त ही दरिद्री थे, किन्तु पिता की मृत्यु के पश्चात् ही उन्होंने यह निर्णय कर लिया था कि वे अपने जीवन से दरिद्रता को दूर कर पूर्ण सुख, समृद्धि और सम्पन्नता का जीवनयापन करेंगे।

और इसी उद्देश्य की पूर्ति के साथ ही उन्होंने इस दुर्लभ एवं गोपनीय स्वर्ण खप्पर प्रयोग को विधि-विधान से सम्पन्न कर श्री, वैभव, समृद्धि सभी कुछ प्राप्त कर लिया, यही नहीं महालक्ष्मी को सदा के लिए अपने घर में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण नगरी में स्थायित्व प्रदान किया, जिससे कि उस नगरी में रहने वाला कोई भी व्यक्ति दरिद्री न कहला सके।

इसी साधना के बल पर वह अपनी नगरी को पूर्ण सोने का बना सका। इस गोपनीय साधना को सम्पन्न कर उसकी नगरी में जीवनपर्यन्त सोने की वर्षा होती रही, केवल मात्र रावण ही एक ऐसा व्यक्ति था, जिसने अपने जीवन काल में शिव की अत्यधिक पूजा, आराधना, तपस्या कर, उनसे इस गोपनीय प्रयोग को प्राप्त कर, एक स्वर्ण नगरी का निर्माण कर लक्ष्मी को हमेशा-हमेशा के लिए आबद्ध कर लिया, उसके अलावा आज तक कोई भी इतनी सम्पन्नता प्राप्त नहीं कर सका।

रावण ने किस प्रकार से यह दुर्लभ प्रयोग प्राप्त किया तथा किस प्रकार से वह इस दुर्लभ प्रयोग को सम्पन्न कर, लक्ष्मी का आबद्धीकरण कर उसे अपनी नगरी में स्थायित्व दे सका, इसका गूढ़ रहस्य व स्पष्ट चिन्तन हमें एक घुमक्कड़ साधु के द्वारा ही प्राप्त हुआ।

उस साधु के मलीन वस्त्रों को देखने भर से ही उसकी घुमक्कड़ प्रवृत्ति का ज्ञान हो रहा था, किन्तु उनसे हुई भेंटवार्ता के दौरान हमें कुछ विशिष्ट तथ्यों को जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने अपनी झोली में से एक पुस्तक निकाल कर हमें दिखाया, जिसमें लिखा था **"लक्ष्मी को स्थायित्व देने के गोपनीय एवं दुर्लभ रहस्य"**, जिसको पढ़ने पर ही हमें कुछ विशिष्ट प्रकार के गोपनीय तथ्यों का ज्ञान हो सका, जिन दुर्लभ व गोपनीय रहस्यों से हम आज तक अनभिज्ञ थे। साधु ने उस पुस्तक में लिखित **"रावणकृत स्वर्ण खप्पर"** प्रयोग की गोपनीयता के बारे में एक विस्तृत जानकारी हमें दी।

उन्होंने हमें बताया कि **व्यक्ति अगर स्वर्ण खप्पर प्रयोग करे, और उसके जीवन में दरिद्रता व अभाव बना रहे, ऐसा तो हो ही नहीं सकता, वह इस दुर्लभ प्रयोग को सम्पन्न करे और उसे जीवन में पूर्णता प्राप्त न हो, ऐसा तो सम्भव ही नहीं है।**

स्वर्ण खप्पर प्रयोग तो जीवन का एक सौभाग्य है, जिसे सम्पन्न कर अपूर्व सिद्धि, सफलता और ऐश्वर्य प्राप्त होने लगता है, जो जीवन में भोग और ऐश्वर्य के आकांक्षी होते हैं, जो जीवन में पूर्णता चाहते हैं, जो विश्व में अपना नाम प्रसिद्ध करना चाहते हैं, उन्हें समय आने पर इस दुर्लभ प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

भाग्य देवताओं के हाथों में नहीं अपितु व्यक्ति के स्वयं के हाथों में होता है, अगर व्यक्ति स्वयं निर्णय कर ले कि मुझे एक श्रेष्ठ एवं पूर्णता युक्त जीवन जीना है, तो उसे विधाता भी रोक नहीं सकता, किन्तु अगर उसमें वह क्षमता, वह दृढ़ता व उन दुर्लभ साधनाओं का गूढ़ चिन्तन है तो।

स्वर्ण खप्पर प्रयोग एक तांत्रोक्त प्रयोग है, इसे तांत्रोक्त पद्धति के द्वारा ही सम्पन्न किया जा सकता है, चूंकि रावण तंत्र के श्रेष्ठ ज्ञाता थे, इसलिए उन्होंने इसे तांत्रोक्त विधि से सम्पन्न कर, अपने जीवन में, ऐश्वर्य, पूर्णता व श्रेष्ठता सभी कुछ इसके द्वारा प्राप्त कर लिया, जिस कारण वे साहसी, पराक्रमी और पूर्ण पौरुषवान कहलाये।

यह अद्वितीय, अचूक एवं प्रामाणिक प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर प्रत्येक व्यक्ति पौरुषता, परिपूर्णता और श्रेष्ठता सभी कुछ प्राप्त कर सकता है।

जिसने भी यह अद्वितीय साधना सम्पन्न कर ली, उसे अन्य किसी साधना को सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति इतना सम्पन्न, सुखी, ऐश्वर्य युक्त तथा अभाव मुक्त हो जाता है कि उसके जीवन में अन्य कोई अभिलाषा शेष नहीं रह जाती, फिर वह इस अभाव युक्त जीवन से पूरी तरह निदान पा लेने में सक्षम एवं समर्थ हो जाता है, फिर वह पूर्ण साहसी, ओजस्वी, पराक्रमी और बलवान बन जाता है।

इस स्वर्ण खप्पर प्रयोग को करने पर उसके घर में जीवनपर्यन्त स्वर्ण वर्षा होती ही रहती है, उसे धन की कभी कोई कमी नहीं रहती, और इसी जीवन में ही नहीं अपितु अगले जीवन में भी वह पूर्ण ऐश्वर्य, धन-धान्य, मान-प्रतिष्ठा, श्री सभी कुछ प्राप्त कर सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो पाता है।

यह स्वर्ण खप्पर प्रयोग ऐसी ही अद्वितीय एवं अचूक फल प्रदान करने वाली साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर व्यक्ति अपने आगे के कई जन्मों को भी सुधार सकता है, तथा एक सम्पन्न एवम् श्रेष्ठ जीवन का निर्माण कर सकता है।

भाग्य देवताओं के हाथों में नहीं अपितु व्यक्ति के स्वयं के हाथों में होता है, अगर व्यक्ति स्वयं निर्णय कर ले कि मुझे एक श्रेष्ठ एवं पूर्णता युक्त जीवन जीना है तो उसे विधाता भी रोक नहीं सकता, किन्तु अगर उसमें वह क्षमता, वह दृढ़ता व उन दुर्लभ

साधनाओं का गूढ़ चिन्तन है तो।

स्वर्ण खप्पर प्रयोग सुखमय जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने भाग्य को भी बदल सकता है, जैसा कि रावण ने किया। इसी गोपनीय व दुर्लभ साधना को सम्पन्न करने के कारण ही रावण बलवान कहलाया, इसी साधना को सम्पन्न करने पर ही वह पराक्रमी, पौरुषवान कहलाया।

यों तो पूरे जीवन में अन्य साधनाओं के लिए कई अवसर उपस्थित होते हैं, किन्तु स्वर्ण खप्पर प्रयोग के लिए पूरे वर्ष में केवल एक दिन ही निर्धारित किया गया है, और जो व्यक्ति इस दिन को चूक जाता है, उसके समान कोई दुर्भाग्यशाली या हतभागी नहीं है। चूंकि ३६५ दिनों की अपेक्षा यदि एक दिन में सम्पूर्ण जीवन संवर जाए, तो इससे ज्यादा लाभदायक एवं महत्वपूर्ण क्षण और कौन-सा हो सकता है।

एक मार्च १९९५ के दिन इस दुर्लभ और अद्वितीय साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति उस स्वर्णिम एवं सौभाग्यदायक क्षण को प्राप्त कर सकता है, क्योंकि यह जीवन का एक स्वर्णिम अवसर है, एक सौभाग्यदायक क्षण है।

कभी-कभी कुछ मंत्र और कुछ साधनाएं ऊपर से अत्यन्त सामान्य सी दिखाई देती हैं, किन्तु उनका प्रभाव अपने-आप में अचूक और अद्वितीय होता है। उसी प्रकार यह स्वर्ण खप्पर प्रयोग भी अपने-आप में अत्यन्त प्रभाव युक्त, अप्रतिम, आश्चर्यजनक एवं अद्वितीय प्रयोग है, जिसका प्रभाव व्यर्थ नहीं जाता।

समय का अपने-आप में विशेष महत्व होता है इस प्रयोग को फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावस्या, बुधवार १ मार्च ९५ को सम्पन्न किया जाना ज्यादा श्रेयस्कर है, क्योंकि विशेष क्षणों में साधना को सम्पन्न कर लेने पर उसमें शीघ्र सिद्धि एवं सफलता मिलती ही है।

साधना विधि

साधना आरम्भ करने से पूर्व शुद्ध जल से स्नान करें तथा नये वस्त्रों को धारण करें, ध्यान रहे कि वस्त्र ज्यादा कसे हुए नहीं हों, ज्यादा उचित होगा कि पुरुष धोती और गुरु मंत्र युक्त चादर का प्रयोग करें, और महिलाएं साड़ी तथा चादर का प्रयोग करें। धोती और साड़ी का रंग गुलाबी होना चाहिए।

प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में ४ बजे से लेकर ६ बजे के मध्य कभी भी साधना प्रारम्भ की जा सकती है, जिस कक्ष में साधना करनी हो उस कक्ष को धोकर भली-भांति उसे स्वच्छ कर, उसमें धूप, दीप, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें। साधक इसमें ऊनी या सूती आसन का प्रयोग करें जो कि गुलाबी या पीले रंग का हो सकता है।

पूजन प्रारंभ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, कुंकुम, मौली, कच्चा दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, दूध से बने नैवेद्य तथा जल को अपने पास में रख लें, फिर आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठ जाएं, तथा अपने सामने जमीन पर केसर से **श्रीं** अंकित करें।

इसके ऊपर पुष्प, अक्षत, चढ़ाकर इस पर बाजोट स्थापित कर दें, फिर उस पर गुलाबी रंग का नया वस्त्र बिछाकर चारों दिशाओं में छोटी-छोटी तिल की ढेरियां तथा मध्य में एक बड़ी तिल की ढेरी बनाएं, इसके पश्चात मध्य की ढेरी पर एक ताम्रपात्र में चावल भरकर रख दें और स्वर्ण खप्पर पैकेट में से **''स्वर्ण यंत्र''** निकाल कर उस पात्र के ऊपर स्थापित कर दें तथा चारों दिशाओं में बनाई गई ढेरियों के ऊपर, पूर्व की ओर **''कुबेर सम्पदा प्रदायक गुटिका''** पश्चिम में **''श्रीरूपा''** दक्षिण में **''शवार्णी''** तथा उत्तर दिशा में **''स्वर्णाकर्षण माला''** स्थापित करें, यंत्र स्थापित करने से पूर्व उसे दूध, दही, शक्कर, घी, शहद से स्नान कराकर फिर जल से स्नान करायें।

इसके पश्चात् यंत्र पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर चावल से भरे हुए ताम्र पात्र पर उसे स्थापित करें, यंत्र स्थापन के बाद पांचों सामग्रियों पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प अर्पित करें तथा संक्षिप्त पूजन कर अपने आसन पर खड़े हो जाएं, इसके पूर्व २१ दीपक अपने सामने प्रज्वलित करें, इसमें ११ दीपक तेल के तथा १० दीपक घी के होने चाहिए। दीपकों को प्रज्वलित करने के पश्चात् स्वर्णाकर्षण माला, जो उत्तर दिशा में स्थापित है, उसे उठाकर निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र-जप सम्पन्न करें, मंत्र इस प्रकार है--

मंत्र

ॐ ह्रीं स्वर्ण वर्षा प्रियायै ह्रीं फट्

इसमें से ५ माला पूर्व दिशा की ओर मुख कर, २ माला पश्चिम दिशा की ओर मुख कर तथा २ माला उत्तर एवं २ माला दक्षिण की ओर मुख कर सम्पन्न करें। यह इस बात का प्रतीक है कि चारों दिशाओं से अटूट लक्ष्मी प्राप्त हो।

दूध से बने नैवेद्य को स्वयं तथा अपने रक्त सम्बन्धियों, जैसे -- पत्नी, पुत्र व पुत्री को प्रसाद वितरित कर दें।

अगले दिन ताम्रपत्र में रखे चावल की खीर बनाकर पूरे परिवार के साथ उसे ग्रहण कर लें, तथा सभी यंत्रों को बाजोट पर बिछे वस्त्र में पोटली बांधकर ११ दिन तक अपने पूजा स्थान में रखें, और १२ वें दिन किसी शिव मंदिर में जाकर उस पोटली को अर्पित कर दें। इसमें प्रयोग किया गया स्वर्ण खप्पर पैकेट पूर्णतया मंत्र सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित होना चाहिए, तभी साधक को इस साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है, और वह लक्ष्मी को अपने घर में हमेशा-हमेशा के लिए स्थायित्व दे सकता है, अतः यह दुर्लभ एवं गोपनीय प्रयोग तो प्रत्येक साधक को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, जिससे कि वह आर्थिक दृष्टि से सुखी और सम्पन्नता से परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

❋

जी हाँ. . .! गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"
का वार्षिक सदस्य बनने पर

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . .

जिनका ठोस आधार है -- ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . .

. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . .

ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई.

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/-
डाक खर्च सहित १७०/-

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा
नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८
अथवा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.), फोन-०२९१-३२२०६

मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान

साक्षी युग परिवर्तन की

सिद्धाश्रम साधना

"जहां करोड़ों गुना आनन्द हो, सौन्दर्य हो और माधुर्य हो उसे शब्दों में कैसे बांधा जा सकता है? उसे तो प्रत्यक्ष देखकर ही उस आनन्द को, उस तृप्ति को, उसकी महत्ता को समझ सकते हैं . . . और उसे समझने की क्रिया जीवन की परिपूर्णता है, और यह परिपूर्ण हो जाने की क्रिया सिद्धाश्रम प्राप्ति की क्रिया है, और यह . . ."

सिद्धाश्रम अर्थात् सिद्ध+आश्रम, जो सिद्धों की भूमि है, जो ऋषियों की तपः स्थली है, जो देवताओं की पुण्य भूमि है, जहां बैठकर हजारों वर्ष की आयु प्राप्त योगी तपस्यारत तथा सशरीर विचरण करते रहते हैं, आध्यात्मिक चेतना का आधार सिद्धाश्रम है, जो सुगन्धमय, सुरभिमय, प्राणश्चेतनामय है।

कहा जाता है कि यह परिचित पृथ्वी पर एक विशेष गुप्त स्थान है, जहां पहुंचना साधारण व्यक्ति के लिए दुर्लभ ही नहीं अपितु असम्भव भी है, किसी विशिष्ट शक्ति के विकास न होने से तथा उस स्थान के अधिष्ठाता की आज्ञा न होने से पृथ्वी लोक में रहने वाले प्राणियों के लिए इस दिव्य भूमि को देख पाना भी असम्भव है।
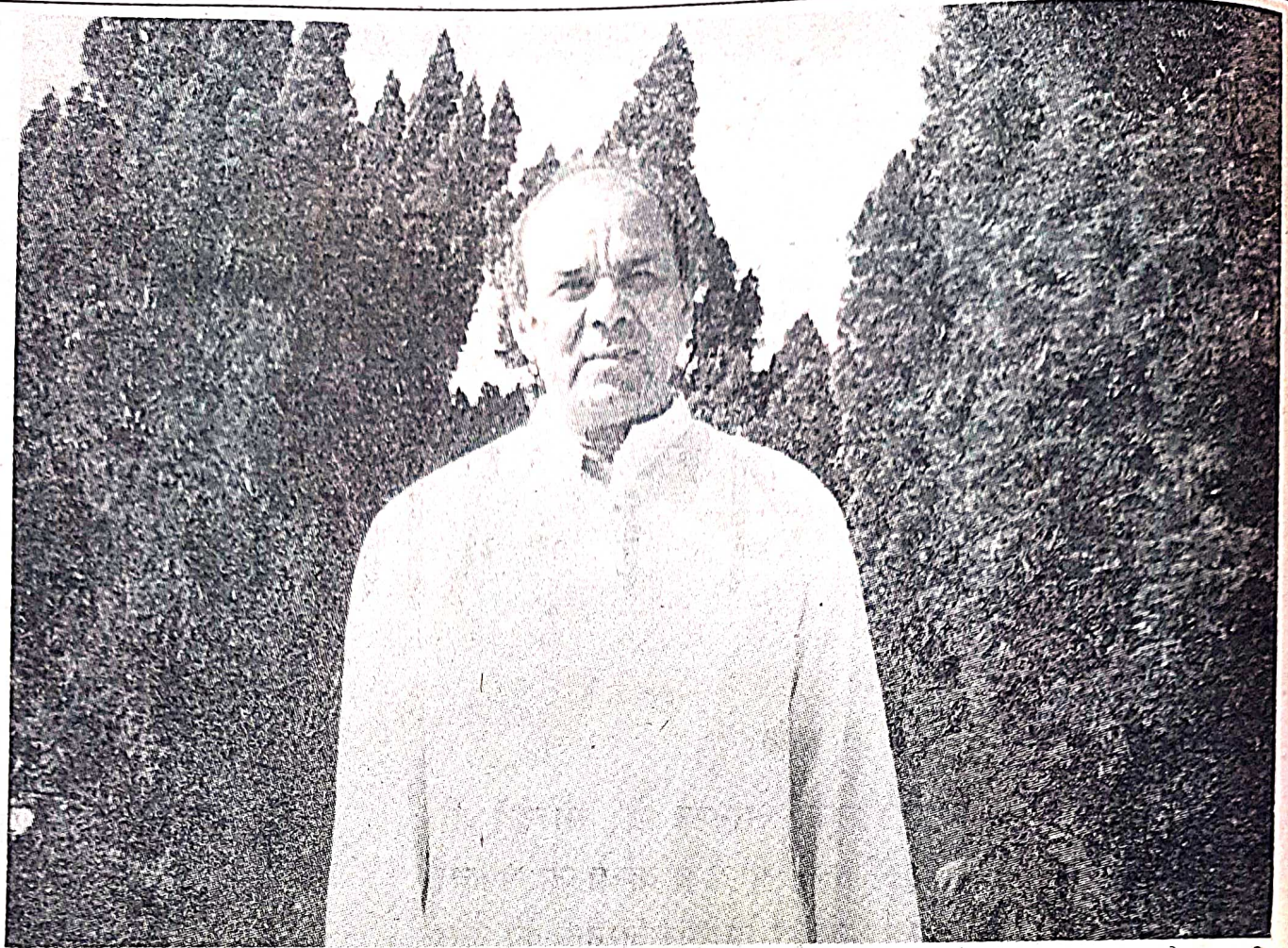
स्वामी विशुद्धानन्द जी के अनुसार यह मानसरोवर और कैलाशपर्वत के मध्य स्थित है, जिसका एक रास्ता कैलाश पर्वत से घूम कर जाता है, और दूसरा मानसरोवर के जल में से होकर जाता है, जो उच्चकोटि के योगियों को ही ज्ञात है।

सिद्धाश्रमोयं परिपूर्ण नित्यं।
ज्ञानं वदामी भवभीत नाशं।
रोगान्तपूर्ण मरपंमयत नविहसिं।
आनन्द सिन्धुमपरं महितां विरूपं।।

सिद्धाश्रम अध्यात्म जीवन का वह अन्तिम आश्रय स्थल है, जो कि अपने-आप में अद्वितीय, अलौकिक और अनिवर्चनीय है, जिसकी तुलना किसी भी अन्य आश्रम या लोक से नहीं की जा सकती, क्योंकि सभी उसके आगे तुच्छ और नगण्य हैं।

उस सिद्धाश्रम की तुलना कहां की जा सकती है, जहां स्वयं श्री निखिलेश्वरानन्द जी विद्यमान हों, जहां स्वयं श्री कृष्ण, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य सशरीर विचरण करते हुए दिखाई देते हों, जहां स्वयं सच्चिदानन्द जी सशरीर रूप में दर्शन देते हों, इस प्रकार के योगियों के रहते सिद्धाश्रम में कोई न्यूनता कैसे रह सकती है, इनके दर्शन मात्र से ही यह पृथ्वी अपने - आप में पुण्य सलिला बन जाती है।

सिद्धाश्रम संसार का सर्वप्राचीन आश्रम है, इसकी उत्पत्ति का चिन्तन अपने - आप में अचिन्त्य है, जिस प्रकार वेदों के बारे में कहा गया है, वेदों की उत्पत्ति नहीं हुई, वे अपने-आप में अनादि हैं, अजन्मा हैं, उसी प्रकार सिद्धाश्रम भी अपने-आप में अजन्मा है, शास्वत है।

आज से ही नहीं जब मानव जाति का उदय हुआ, जब आर्यों ने सिन्धु नदी के किनारे मंत्रों का घोष किया, जब सारे वातावरण में वेदों की ध्वनि गुंजरित हुई तभी से सिद्धाश्रम का वर्णन व विवरण मिलता है, क्योंकि यह आर्यों से पूर्व की स्थिति है, यह ब्रह्माण्ड का एक भाग है, जो अपने-आप में ही पूर्ण है।

सिद्धाश्रम जीवन का पुण्य है, आधार है, वह इसलिए कि समस्त पृथ्वी दो भागों में बंटी हुई है— भौतिक और आध्यात्मिक, और सिद्धाश्रम इन दोनों के मध्य सन्तुलन कायम रखता है। जब से प्रकृति और मानव का सम्बन्ध बना तभी से उस सिद्धाश्रम से भी मनुष्य का सम्पर्क और सम्बन्ध बना, क्योंकि यदि मानव जीवन का लौकिक चिन्तन, विचार और कार्य क्षेत्र यह संसार है, तो इसका परमार्थिक और आध्यात्मिक क्षेत्र सिद्धाश्रम है।

सिद्धाश्रम जहां कल्पवृक्ष, समस्त मनोकामनाओं को पूर्णता देने में समर्थ है, जहां उर्वशी, रम्भा, मेनका आदि

सिद्धाश्रम जीवन की पूर्णता है . . . आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र, ब्रह्माण्ड को सही ढंग से संचालित करने की क्रिया, भौतिकता और आध्यात्मिकता का वह संतुलन केवल इस सिद्धाश्रम के द्वारा ही सम्भव है, और वहां पहुंचने की क्रिया, वहां पहुंचने का आधार है . . .

अप्सराएं नृत्य करके अपने सौभाग्य की श्रेयता को प्राप्त करती हैं, जहां सिद्धयोगा झील में स्नान करने पर शरीर की सारी कल्मषता समाप्त हो जाती है, इसमें स्नान करने पर व्यक्ति का स्वतः ही कायाकल्प हो जाता है, जहां की माटी चन्दन के समान ललाट पर लगाने योग्य है, जहां मृत्यु और बुढ़ापा जैसा कोई शब्द नहीं है, जहां उच्चकोटि के संन्यासी, योगी प्रवचन कर ब्रह्माण्ड के उन गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करते हैं, जो अति गूढ़तम हैं, जहां के संन्यासी, तपस्वी, योगी किसी भी लोक में सशरीर व सूक्ष्म रूप से आ-जा सकने में समर्थ हैं।

यह हमारे पूर्वजों और ऋषियों का आधारभूत सत्य है, और उन्होंने अपने जीवन में यह अनुभव किया है कि जीवन की पूर्णता केवल सिद्धाश्रम में जाने पर ही सम्भव है। किसी ऋषि ने कहा है कि–

"जीवनं परिर्वे परिपूर्णतां मृत्योर्वे अमृतं गमय साम पूर्वः सः सिद्धाश्रमः"

अर्थात् हम अपने जीवन में सत्य का साक्षात्कार कर सकें, मृत्यु से अमृत्यु की ओर जा सकें, वह सब कुछ प्राप्त करने के लिए, जो ब्रह्माण्ड में है। प्रत्येक ऋषि साधक और चिन्तक की यही धारणा है कि वह सिद्धाश्रम में जाए।

सिद्धाश्रम जहां बहुत ही कम योगी जा सके हैं, क्योंकि आम व्यक्ति, आम संन्यासी सिद्धाश्रम में नहीं जा पाते, वहां तक जाने के लिए तो ईसावास्योपनिषद में लिखा है –

"पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद पूर्णादमुच्यते"

जो व्यक्ति स्वयं पूर्ण है, तो वह पूर्णता तक पहुंचा सकता है, हजारों गृहस्थ और संन्यासी, योगी, यति उस
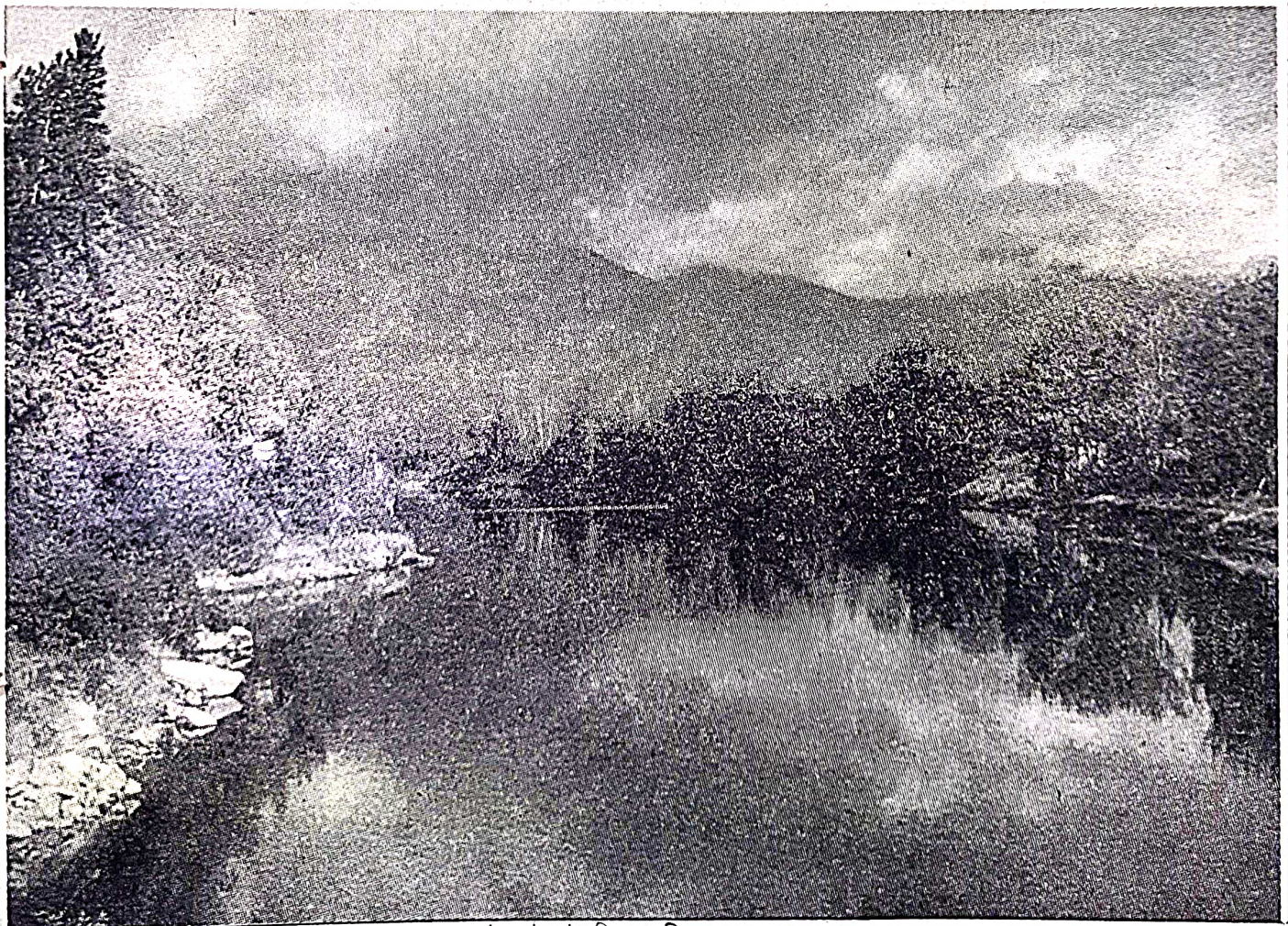
सिद्धाश्रम में पहुंचने मे सफल हुए हैं, जैसे – विश्वामित्र, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य और योगियों में विशुद्धानन्द, प्रवज्यानन्द, उड़िया बाबा, किंकर स्वामी आदि नाम उल्लेखनीय हैं। यह सब कुछ सम्भव है, और ऐसा कई सामान्य मनुष्यों ने भी किया है, जिनकी उपस्थिति हमारे और आपके बीच रही, जो इसी समाज के व्यक्ति हैं, जो आपकी तरह ही हाड़-मांस से निर्मित हैं वे सिद्धाश्रम में गये हैं। उन सबका अनुभव किया हुआ है, और वहां जाकर अपने जीवन को वे कृतार्थ कर सके और वापस इसी देह से इस समाज में आ-जा सके, यदि वे ऐसा कर सकते हैं तो आप भी कर सकते हैं आवश्यकता है दृढ़ निश्चय की, दृढ़ चिन्तन और दृढ़ विचार की।

जन्म-मृत्यु पर नियंत्रण प्राप्त कर लेने की क्रिया सिद्धाश्रम प्राप्ति का पहला चरण है, ऐसी मृत्यु को ठोकर मारने की क्रिया को ''साधना'' कहा गया है, जिसको **''सिद्धाश्रम साधना''** कहते हैं, जिसे सिद्ध कर व्यक्ति अपने-आप को अनन्त काल तक जीवित रख सकता है, जहां पर केवल ''ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्ति'' जहां किसी भी प्रकार का द्वंद्व नहीं होता, भय नहीं होता, रोग, शोक नहीं होता, किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं होती, और जो हृदय से प्रस्फुटित आनन्द होता है, जिसे ब्रह्मानन्द कहते हैं. . . प्राप्त कर लेता है।

सिद्धाश्रम साधना सिद्धि जो कि अपने-आप में ही एक अद्वितीय, अलौकिक एवं सर्वश्रेष्ठ साधना है। इस साधना सिद्धि को प्राप्त कर वह व्यक्ति, वह साधिका, वह गृहस्थ अपने-आप में ही शुद्ध और चैतन्य बन जाता है। सिद्धाश्रम साधना जिसके माध्यम से सिद्धाश्रम में प्रवेश पाना सम्भव है। यह तरीका सरल और शास्त्रोचित है जिसे कई साधकों ने सम्पन्न किया है, और इसके माध्यम से वे सिद्धाश्रम में जा सके हैं, वहां की अनुभूतियों और वहां के अलौकिक आनन्द को अनुभव कर सके हैं।

साधक को चाहिए कि वह विधि - विधान पूर्वक इस साधना को सम्पन्न करे, और इसके लिए पहले से ही **''सिद्धाश्रम यंत्र'', ''सिद्धाश्रम रहस्य माला''** और **''सिद्धाश्रम गुटिका''** मंगवाकर रख लें, जिससे कि वह सही समय, सही मुहूर्त पर इस साधना को सम्पन्न कर सकें।

माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी तथा फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वादशी को सिद्धाश्रम साधना प्राप्ति का विशेष दिन है, जिस दिन इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। इस वर्ष यह दिवस **दिनांक १२/०२/९५ रविवार** तथा **१४/०३/९५ मंगलवार** को पड़ रहा है। साधक को चाहिए कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर इस साधना को सम्पन्न करे।

सिद्धाश्रम साधना विधि

यह प्रयोग मात्र एक दिन का है तथा प्रातः और सायं दोनों समय एक ही विधि से इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

प्रातः साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद वस्त्र पहन कर , पीले आसन पर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं, तथा अपने सामने एक चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र स्थापित कर दें। फिर **''दैनिक साधना विधि''** पुस्तक के अनुसार गुरु पूजन सम्पन्न करें, इसके पश्चात् पीले वस्त्र पर पीले चावल से स्वस्तिक या अष्टदल कमल बनाकर उस पर ''सिद्धाश्रम यंत्र'' को रख दें।

स्थापना से पूर्व उस यंत्र को किसी पात्र में पंचामृत (दूध, दही, घी, शक्कर, शहद) से स्नान कराकर शुद्ध जल से उस यंत्र को धो लें। उस यंत्र के ऊपर चंदन तथा केसर से चारों दिशाओं में चार तिलक लगाएं तथा अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से श्रद्धापूर्वक गुरुमय भावना से युक्त होकर पूजन प्रारम्भ करें, और दूध से बने नैवेद्य का भोग लगायें। इसके बाद यंत्र के दांई ओर ''सिद्धाश्रम गुटिका'' को स्थापित करें तथा उसका भी धूप, दीप आदि से पूजन करके ''सिद्धाश्रम रहस्य माला'' से प्रातः एवं सायं निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप एक दिन सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ ब्लों सिद्धाश्रमायै निः नमः

साधक को चाहिए कि जप समाप्ति के बाद पूरे परिवार सहित गुरु आरती सम्पन्न करें। ध्यान रहे कि यंत्र, माला एवं गुटिका पूर्ण मंत्र- सिद्ध एवं प्राण - प्रतिष्ठित हो, जिससे साधक को इस साधना में शीघ्र ही पूर्ण सफलता मिल सके। यंत्र पर चारों दिशाओं में लगे तिलक का अर्थ है कि वह साधक धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करता हुआ सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सके।

साधक को चाहिए कि पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे और जमीन पर ही शयन करें तथा एक समय ही भोजन करें और कम से कम वार्तालाप करें। साधना पूर्ण होने के पश्चात् ही यंत्र, माला एवं गुटिका को किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

यह जीवन का सौभाग्यशाली एवं सर्वश्रेष्ठ साधना पद्धति है, जो कि मात्र गुरु कृपा से ही उपलब्ध हो सकी है, जो सिद्धाश्रम प्राप्ति का अद्वितीय सोपान है। ❋

श्मशान साधना

● डॉ० सन्तोष धले
काटमाण्डू

दो वर्ष तक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में विविध साधनाएं करने के बाद, उन्होंने एक दिन मुझे बुलाकर कहा— मेरी इच्छा है, कि अब तुम श्मशान साधनाओं में भी पूर्णता प्राप्त करो। मैं हतप्रभ सा हो उठा, क्योंकि अभी तक मैंने जो साधनाएं की थीं, वे सभी सौम्य, सात्विक साधनाएं थीं।

श्मशान साधना के प्रति मेरी कोई रुचि नहीं थी और मैं उसे घृणा की नजर से देखता था। मेरी धारणा थी, कि निठल्ले और आवारा किस्म के साधु अपनी मस्ती और नशे के लिए वहां पड़े रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने मुझे ज्ञान दिया— **यद्यपि वर्तमान में स्थिति ऐसी ही हो गई है, किन्तु 'श्मशान साधना' अपने-आप में तुच्छ या हेय नहीं है, यह तो व्यक्ति को अष्ट पाशों में से एक पाश ''भय'' से मुक्त करने की एक क्रिया है। श्मशान में साधना कर व्यक्ति जहां एक पाश 'भय' से रहित हो जाता है, वहीं उसे ऐसी दृढ़ता मिल जाती है, जिससे कि वह सारे विश्व में कहीं पर भी निर्द्वन्द्व विचरण कर सकता है, इस साधना के बाद भूत-प्रेत उसके गुलाम हो जाते हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति संसार का कोई भी कार्य कर सकता है।** यह बात अवश्य है, कि साधारण साधक ऐसी साधनाओं में बैठने के पात्र नहीं होते।

पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार मैंने श्मशान की प्राथमिक साधना **''भैरव साधना''** हाथ में ली, क्योंकि श्मशान के अधिष्ठाता देव 'भैरव' एवं देवी 'महाकाली' हैं, जिनकी प्रारम्भ में साधना आवश्यक होती है।

मैंने सुन रखा था, कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त उग्र होता है एवं वे श्मशान में शीघ्र सिद्ध होते हैं। मैंने भय पूर्वक अमावस्या की रात्रि को इस साधना को सम्पन्न करने का निश्चय किया, और रात्रि में दस बजे के पश्चात् अपने नगर स्थित श्मशान में पहुंचा, जो कि एक पवित्र नदी के किनारे स्थित है।

चारों ओर सन्नाटा छा चुका था, केवल दो चिताएं जल रही थीं, उनके जलने से चड़-चड़ की ध्वनि आ रही थी, वातावरण धुएं और दुर्गन्ध से भरा था, उन चिताओं के किनारे सम्बन्धी-जन करुण स्वर में विलाप कर रहे थे, और कुत्ते पता नहीं कहां से एक मानव हाथ लाकर आपस में लड़-भिड़ रहे थे।

मैंने काले वस्त्र पहिन रखे थे, और सर्दी के कारण काला कम्बल भी ओढ़ लिया था। श्मशान का मुख्य अघोरी मुझे देखकर चौंका और कुछ अप्रसन्न सा लगा। शायद उसे लगा हो— कोई नया अघोरी तो नहीं, जो उसके क्षेत्र में कब्जा जमाने के लिए आ गया हो, किन्तु मैंने उसे समझाया, कि मैं तो मात्र कुछ घन्टों में अपनी साधना पूर्ण करके चला जाऊंगा, तो उसने अनिच्छा पूर्वक जाने दिया।

मैंने चिताओं से थोड़ी दूर हटकर आक-वृक्षों की एक झाड़ी के पीछे आसन लगाया, चिता से जाकर कुछ ताजी राख ली, उसे अपने आसन के नीचे बिछाया और स्वयं का भी उसी भस्म से तिलक कर लिया।

इसके पश्चात् मैंने पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त त्रिशूल से अपने चारों ओर गोपनीय रक्षा मंत्रों का एक सुरक्षा चक्र बना लिया तथा त्रिशूल को सामने गाड़ दिया अथवा सामान्य पूजन कर, पूज्य गुरुदेव का आह्वान-मनन कर संक्षिप्त भैरव पूजन किया। उन्हें तेल के बड़े, भात, पकौड़ी एवं तरल पेय पदार्थ एक पात्र में अर्पित कर, मंत्र-जप प्रारम्भ कर दिया।

मंत्र-जप करते कुछ समय ही बीता था, कि वही अघोरी, जो पहले मुझसे क्रुद्ध हो रहा था, पास आया, कुछ देर वह मुझे लाल-लाल आंखों से घूरता रहा, फिर बोला—

"ॐ नमो नारायणाय", यह कहकर उसने सम्पूर्ण पूजन की तीन प्रदक्षिणाएं कीं और माथा टेक कर चला गया। मैं आश्चर्यचकित सा उसे देखता रहा, क्योंकि एक तो अघोरी शान्त हो गया था, दूसरे उसने जो मंत्र बोला वह प्रकारान्तर से मेरे पूज्य गुरुदेव का ही था।

थोड़ी देर बाद मैंने देखा, कि कुछ व्यक्ति मेरी ओर बढ़ रहे हैं, मैं विचलित हो गया, क्योंकि वे साधना में विघ्न डाल सकते थे, औरं मेरे उठने पर तो साधना भंग हो जाती। एकाएक पता नहीं किस कोने से वही अघोरी हाथ में चिता की एक जलती हुई लकड़ी लेकर दौड़ता हुआ आया और उसके मुंह से निकलती अश्लील गालियों की बौछारों के बीच मुझे यही समझ में आया, कि वह उन्हें वापस लौट जाने के लिए कह रहा है, उसके उस उग्र रूप को देख कर सभी सहम कर पीछे चले गये।

मुझे विश्वास हो गया, कि अवश्य ही पूज्य गुरुदेव अपने सूक्ष्म स्वरूप में मेरे आस-पास ही कहीं विद्यमान हैं, इसीलिए मेरे ऊपर कोई बाधा हावी नहीं हो पा रही।

कुछ और समय बीतने पर जब रात घनी हो गई, तो इक्का-दुक्का जो स्वर आ रहे थे, वे भी समाप्त हो गये। केवल बगल में बहती नदी की हल्की सी छलछलाहट ही एकमात्र स्वर रह गई, तो वह श्मशान अत्यन्त भयावह हो उठा। एकाएक जब नदी में कोई मछली या कछुआ आहट करता, तो ऐसा लगता मानो मेरे सिर पर ही कोई धमक उठा हो और मेरा मन भय से कांप उठता।

मंत्र-जप के क्रम में मुझे हल्की सी झपकी आ गई। मैंने सर्दी से बचने के लिए कम्बल को सिर पर ओढ़ लिया, उस तंद्रावस्था में मैंने देखा, कि दो परछाईं सी मेरे पास आयीं, ऐसा लग रहा था, जैसे कोई मानव-आकृति बुरका ओढ़े हो, उनमें से एक ने हाथ बढ़ा कर कहा— "आओ इसका चेहरा देखें, कौन है यह?", तभी दूसरी आकृति ने सहम कर कहा. . . नहीं, नहीं गुरुदेव!!

पूज्य गुरुदेव का नाम सुनकर मेरी तंद्रा टूट गई और मैंने अचकचा कर अपने चारों ओर देखा, किन्तु वहां कोई नहीं था। थोड़ी देर में जब मैं संयत हो उठा, तब समझ सका, कि वास्तव में वे कोई इतर योनियां थीं, जो अपने स्थान पर मुझे देखकर क्रुद्ध हो उठी थीं, लेकिन पूज्य गुरुदेव के भय से वे मुझ पर कोई आघात नहीं कर सकीं।

धीरे-धीरे रात्रि का लगभग डेढ़ बज गया होगा, और अब मैं नितान्त अकेला था। बगल की चिताएं अंगारों में बदल चुकी थीं। मैं एकाग्र

श्मशान का नाम लेते ही पूरे शरीर में एक भय व्याप्त हो जाता है. . . वहीं साधकों के लिए यह क्रीड़ा स्थली मानी जाती है। उनके लिए तो श्मशान आनन्द स्थली होती है। हमने इसके स्वरूप को विकृत रूप से देखा जबकि यह अष्ट पाशों में से एक पाश ''भय'' से मुक्त करने की एक क्रिया है, जो सम्भव है. . .

होने का प्रयास कर रहा था, तभी ऐसा लगा, जैसे नदी के उस पार कोई झगड़ा हो गया हो, और शोरगुल वढ़ता जा रहा था। मैंने कोई ध्यान नहीं दिया, सोचा कोई गांव होगा, वहां किसी परिवार में शराब पीकर झगड़ा हो रहा होगा, किन्तु वह शोर वढ़ता-वढ़ता मेरे पास आ गया, तब मैंने चौंक कर चारों ओर दृष्टि डाली।

मैंने देखा— उसी झुरमुट के पीछे चिता से थोड़ी दूरी पर लगभग बीस-पच्चीस स्त्री-पुरुष बैठे तेज स्वर में बातचीत कर रहे हैं। मुझे लगा— शायद मृतक के सम्बन्धीजन हों, किन्तु उनकी हंसी अत्यन्त ही पैशाचिक थी और एक-दो स्त्रियों का स्वर कर्कशता की सभी सीमाएं लांघ रहा था। थोड़ी ही देर में उन्होंने जब अट्टाहास करते हुए, एक-दूसरे से धक्का - मुक्की सी शुरू कर दी, तब मुझे विश्वास हो गया, किं ये सामान्य मानव नहीं हैं। वे कौन थे, यह तो स्पष्ट नहीं हो सका, क्योंकि वे अपनी ही मस्ती में डूबे उसी तरह से आमोद-प्रमोद करते सहसा लुप्त हो गये।

मेरी साधना बढ़ती रही, मुझे प्रातः चार बजे तक बैठने का पूज्य गुरुदेव का आदेश था। मैं पुनः संयत होकर मंत्र जपने लग गया, किन्तु तभी आस-पास पदचाप सी सुनाई पड़ने लगी। मुझे कुछ दृष्टिगोचर तो नहीं हुआ, किन्तु आभास अवश्य हो गया, कि यहां मेरे अतिरिक्त कुछ और लोग भी हैं। मैं कुछ भय से और कुछ मन को एकाग्र करने के लिए आंखें मूंद कर जप करने लगा, किन्तु मन तो उधर ही लगा था, अतः मैं आंखें बंद न कर सका।

– और मेरी आंख खुलते ही जो दृश्य मुझे दिखा, उससे मेरे गले से चीख निकलते-निकलते रह गई। एक अत्यन्त भयानक मुख-मुद्रा का व्यक्ति, जिसका ऊपरी होंट कटा था और रंग आबनूसी था, जो मेरी ही ओर एकटक देख रहा था, वह निश्चित रूप से भूत या प्रेत योनी का कोई जीव था।

मैं समझ ही नहीं पा रहा था, कि क्या करूं. . . तभी वह उठकर मेरे पास आया और उसने हाथ फैला कर मुझसे कुछ मांगा। मेरे पास भैरव को अर्पण की जाने वाली वस्तुएं छोड़कर और कुछ भी नहीं था। लेकिन तभी याद आया, कि श्मशान आने से पूर्व जव मैंने घाट पर स्नान कर मंदिर में दर्शन किये थे, तो वहां के पुजारी ने मुझे प्रसाद में लड्डू दिये थे।

मैंने उसे वही लड्डू दे दिये, जिसे लेकर उसने खा लिया, और थोड़ी दूर एक पत्थर पर बैठकर वह चुपचाप मुझे देखता रहा, और मैं भी उसे देखता रहा, किन्तु उसके अन्दर कोई विचित्रता मुझे नहीं दिख रही थी, न ही उसके पैर उल्टे थे और न ही उसके दांत निकले थे।

केवल मुख-मुद्रा ही असामान्य और पीड़ा से भरी हुई लग रही थी, तब मुझे पूज्य गुरुदेव का वह कथन याद आया— ''भूत-प्रेत तो स्वयं अपनी मुक्ति के लिए छटपटाती हुई योनियां हैं।''

जब मेरी साधना अन्तिम चरण में चल रही थी और मैं जप समाप्त करने ही वाला था, तभी अकस्मात् एक बलिष्ठ व सुन्दर काले रंग का कुत्ता तेजी से दौड़ता हुआ आया, और जब तक, कि मैं कुछ समझ पाता, वह सारा प्रसाद और सुरा ग्रहण कर गया।

मैं हड़बड़ा गया, किन्तु मुझे याद आया, कि भैरव का वाहन श्वान ही तो होता है। बाद में पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया, कि साधना की प्रारम्भिक सफलता में कोई भी देव स्वयं न प्रकट होकर इसी प्रकार प्रच्छन्न रूप में आते हैं, और ऐसा होना भी कोई छोटी-मोटी बात नहीं होती।

बाद में तो मैंने नियमित साधना कर श्री भैरव जी के साक्षात् दर्शन उनके सौम्य स्वरूप में पाए, और क्रमशः महाकाली साधना, धूमावती साधना, आसन खिलने की साधना, श्मशान जागरण साधना, श्मशान शान्त साधना में भाग लेकर एक से एक रोमाञ्चक स्थितियां अनुभव कीं तथा श्मशान की आगे की साधनाओं में, जो उच्चकोटि की हैं, मैं संलग्न हो सका, जिससे भूत-प्रेत तो अब मेरे गुलाम बन कर चौबीसों घण्टे मेरे आदेश की प्रतीक्षा में तत्पर रहते हैं।

❋
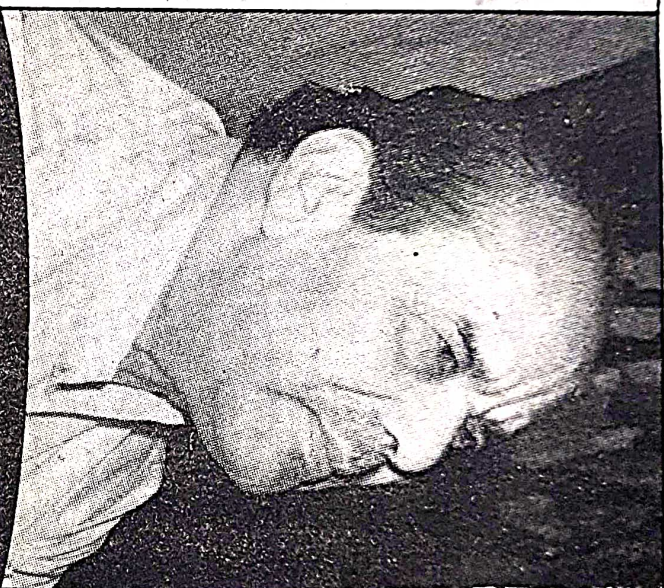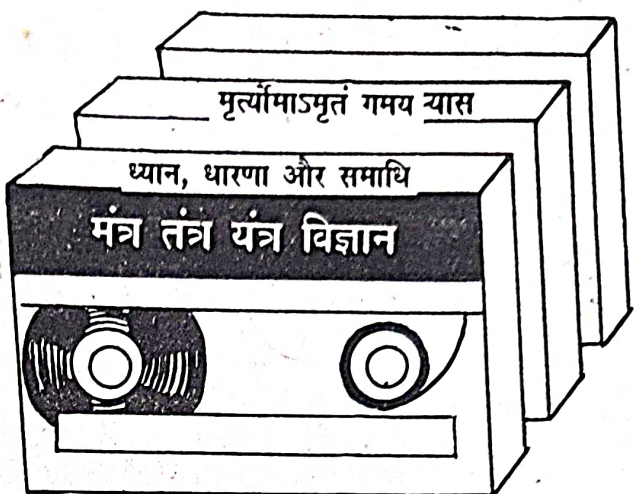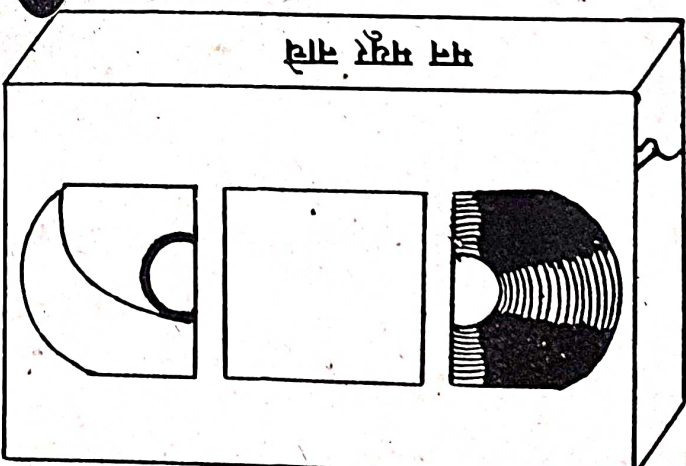
ध्यान, धारणा और समाधि

शरीर, प्राण और आत्मा की गहराइयों में उतर कर, ध्यानावस्थित हो, समाधि अवस्था को प्राप्त कर ब्रह्मानन्द में किस प्रकार लीन हो सकते हैं? इसी की विस्तृत विवेचना है, इस कैसेट में. . .

मृत्योर्माऽमृतं गमय –

मृत्यु मार्ग से हटाकर अमरत्व के मार्ग पर सफलता पूर्वक अग्रसर करने की श्रेष्ठ प्रक्रिया का वर्णन करता हुआ, कठोपनिषद पर आधारित एक दुर्लभ कैसेट . . .

गुरु भजन –

घर में मधुर व आह्लादित वातावरण के निर्माण में अत्यधिक सहायक होते हैं भजन . . और ये भजन यदि गुरु महिमा पर आधारित हों तो इनकी अद्वितीयता का वर्णन . . .

शक्तिपात

पूर्वजन्म के रहस्यों को उजागर करता एक श्रेष्ठ संग्रह, जिसके माध्यम से आप शक्तिपात के अलौकिक प्रभाव को जान सकेंगे।

मन मयूर नाचे

गायन, वादन और नृत्य इन तीनों का मधुर संगम जब होता है तो व्यक्ति स्वतः ही ध्यानस्थ हो जाता है। परमानन्द को प्रदर्शित करता एक दुर्लभ संग्रह . . .

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८
मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०६

होली पर
१५-१६ मार्च १९९५

जीवन का सौभाग्य एवं
प्रत्येक प्रकार की साधना में शीघ्र सिद्धि के लिए

महातंत्र साधना शिविर
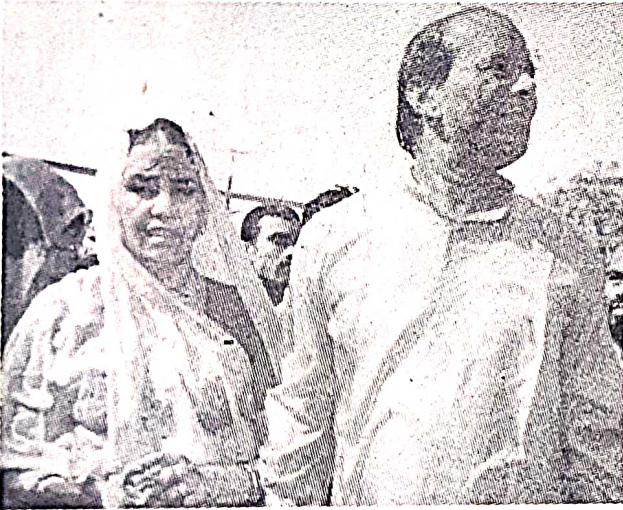
स्थान : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०) - ३४२००१

यह मात्र साधना शिविर ही नहीं है, अपितु सिद्धिदायक दिवस है,
जीवन का सौभाग्यप्रद क्षण है, सम्पूर्ण जीवन को संवारने का अवसर है।
और फिर पूज्यपाद गुरुदेव स्वयं गोरखनाथ प्रणीत उन साधनाओं को सिद्ध करायेंगे,
जो गोपनीय हैं, दुर्लभ हैं, पर अचूक हैं, शीघ्र मनोवांछित कार्य सिद्धि में सहायक हैं।

सौम्य सरल साधनाएं

जो मंत्रात्मक है, पर तंत्रमय होने की वजह से तुरन्त प्रभावदायक है।
हर गृहस्थ स्त्री-पुरुष, देवोपासक द्वारा घर में बैठकर कर सकने योग्य साधनाएं।

गुरुदेव की आज्ञा है, सलाह है, परामर्श है, और आमंत्रण है,
कि आप सभी इच्छुक साधकों को इस अवसर पर तो आना ही है।

विशेष जानकारी के लिए

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

नो शक्यभुग्रतपसापि युगान्तरेण,
प्राप्तुं यदन्यसुरपुंगवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणमनेन सदा ददाति,
यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुंतोषम्।।

हे शम्भो! जन्म- जन्मान्तर पर्यन्त तपस्या व साधना करने पर भी जो फल प्राप्ति अन्य सुरपांगवों से नहीं हो सकती है, उससे भी कहीं ज्यादा फल प्राप्ति आपका नाम स्मरण कर प्रणाम मात्र करने से प्राप्त हो जाती है। मैं आपके सामने नम्र भाव से नमन करता हुआ, आपकी भक्ति की कामना करता हूं, आप मुझ पर प्रसन्न हों, क्योंकि एकमात्र आप ही ''आशुतोष'' हैं।

शिव जो जगत-स्रष्टा हैं, जो ब्रह्मा के रूप में उत्पत्तिकर्त्ता, विष्णु के रूप में पालनकर्त्ता तथा स्वयं शिव के रूप में संहारकर्त्ता हैं। वही शिव, सुख-सम्पत्ति, ऋद्धि-सिद्धि, बल-वैभव, स्वास्थ्य-निरोगता, लौकिक-पारलौकिक शुभ फलों के उदारदाता हैं। उनसे यह सब अत्यन्त सहज रूप में भी प्राप्त हो सकता है, एक साधारण व्यक्ति को भी, इस शिवरात्रि पर्व पर, महामृत्युञ्जय महाशिवरात्रि साधना सम्पन्न कर लेने से।

आज के युग में जहां जन-सामान्य शिवरात्रि पर्व को शिव का उपवास, पूजा,आराधना कर मनाते हैं, वहीं बड़े-बड़े योगी, ऋषि-मुनि और देवता इस पर्व पर विशेष साधनाएं सम्पन्न कर, शिव को प्रसन्न कर अपने जीवन में भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त कर लेते हैं।

शिव, जिन्होंने रावण को अटूट बल दिया, मार्कण्डेय को अपनाकर यमराज से मुक्ति दिलायी। केवल मात्र शिव ही ऐसे देवता हैं, जो दीन-दुखियों, अनाथ, दरिद्रियों, संकटग्रस्त प्राणियों की रक्षा करने में सर्व समर्थ हैं। इस प्रकार वेदों, शास्त्रों व ग्रन्थों के आधार पर

महाशिवरात्रि अपने-आप में ही पुण्यदायक साधना पर्व है।

इस बार शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, **सोमवार २७.२.९५** के दिन विविध साधनाओं को सम्पन्न कर व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से तो पूर्णता प्राप्त कर ही सकता है, अपितु मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। जीवन की समस्त बाधाओं और कष्टों से मुक्ति दिलाने की ये अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधनाएं हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार है –

हमारे भारतीय ऋषि-मुनियों ने इस सर्वश्रेष्ठ साधना को चयन किया. . . जिसके द्वारा अकाल पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है. . . महामृत्युञ्जय साधना इस दृष्टि से सर्वोपरि है तथा इससे साधक निरोगी एवं दीर्घायु बना रहता है।

कुबेर साधना

साधक शिवरात्रि के अवसर पर इस विशेष साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन को पूर्ण सम्पन्नता युक्त बना सकता है, चूंकि **कुबेर ने स्वयं भगवान शिव को साधना से प्रसन्न कर अतुलनीय धन, वैभव और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, इसी कारणवश प्रत्येक साधक को यह ''कुबेर सिद्धि'' की अद्वितीय साधना शिवरात्रि के पर्व पर सम्पन्न करने से, पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।**

''धन'' अर्थात् सम्पत्ति, वैभव, निधि जिसके बिना सब कुछ इस युग में अधूरा ही है। शास्त्रों के अनुसार

कोई भी यज्ञ, पूजा, उत्सव कुबेर की पूजा के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकता. . . और जिसने भी अपने जीवन में इस महत्वपूर्ण साधना को सम्पन्न किया है, उसने अपने जीवन में जो चाहा, उसे वह मिला है।

दरिद्रता निवारण, भाग्य-बाधा समाप्ति एवं शीघ्र आर्थिक उन्नति के लिए यह साधना श्रेष्ठ ही नहीं अत्युत्तम मानी जाती है।

शिव द्वारा विशेष आशीर्वाद युक्त होने के कारण कुबेर सूर्य के समान तेजस्वी देव हैं, और विशेष बात तो यह है कि देवताओं को भी धन के लिए कुबेर की ही प्रार्थना करनी पड़ती है। कुबेर का जहां स्थान होता है, वहां साक्षात् महालक्ष्मी **''राजश्री''** के रूप में निवास करती है। जहां कुबेर हैं वहां लक्ष्मी है, नवनिधियां हैं, अप्सराओं का आनन्द है। कुबेर के साधक पर शिव-कृपा तो विशेष रूप से रहती ही है, साथ ही कुबेर साधना से शुक्र का सौभाग्य भी पूर्णरूप से साधक को प्राप्त हो जाता है।

कोई भी यज्ञ, पूजा, उत्सव कुबेर की पूजा के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकता, और जिसने भी अपने जीवन में इस महत्वपूर्ण साधना को सम्पन्न किया है, उसने अपने जीवन में जो चाहा है, उसे वह मिला है।

कुबेर धनाध्यक्ष हैं, और इनकी साधना दरिद्री को करोड़पति, नवनिधि का स्वामी बना सकती है, तो फिर क्यों न ऐसी अद्वितीय साधना को इस महाशिवरात्रि पर्व पर सम्पन्न किया जाय।

इस सरल एवं श्रेष्ठ साधना को प्रत्येक व्यक्ति को महाशिवरात्रि पर्व पर सम्पन्न करना ही चाहिए, जिससे आर्थिक समृद्धि तो प्राप्त होती ही है, साथ ही शिव-कृपा से जीवन की अनेक बाधाओं एवं समस्याओं से मुक्ति भी मिल जाती है।

कुबेर साधना मुहूर्त

इस कुबेर साधना के लिए साधक शिवरात्रि महोत्सव पर निम्न शुभ मुहूर्तों का प्रयोग अपनी इच्छानुसार कर सकता है।

प्रातःकालीन मुहूर्त

अमृतकाल ६.०० बजे से ६.१२ बजे तक प्रातः
महेन्द्रकाल ३.३६ से ६.०० बजे तक सायं

रात्रिकालीन मुहूर्त

अमृतकाल ८.२७ से ११.३० बजे तक प्रातः

साधना विधि

इस साधना को साधक प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को भी सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में मंत्र-सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त **''धनाधीश कुबेर यंत्र''** तथा **''कुबेर माला''** का प्रयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त कुंकुम, मौली, दूध, पुष्प, प्रसाद, ताम्रपात्र में जल इत्यादि सामग्री को पहले से ही मंगाकर रख लेना चाहिए, साधक प्रातःकाल या रात्रि में अपनी इच्छानुसार इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, साधक स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुख कर आसन पर बैठ जायं, और अपने सामने बाजोट पर पीले रंग का आसन बिछाकर मध्य में चावलों की एक ढेरी बनाकर, उस पर **''धनाधीश कुबेर यंत्र''** स्थापित करें और कुंकुम, अक्षत, पुष्प द्वारा पूजन करें।

सर्वप्रथम गुरु ध्यान व संक्षिप्त पूजन करने के पश्चात् अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए हाथ में जल लेकर संकल्प करें, और उस जल को भूमि पर छोड़ दें, तत्पश्चात् **''कुबेर माला''** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें-

मंत्र –

ॐ ह्रीं कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्य समृद्धिं देहि देहि नमः

पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् पूरे परिवार सहित सर्वप्रथम गुरु आरती करें, तत्पश्चात् लक्ष्मी की आरती करें, आरती सम्पन्न करने के पश्चात् ताम्रपात्र में रखे जल का स्वयं आचमन कर परिवार के सभी सदस्यों को आचमन दें।

यह अद्वितीय प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति को करना ही चाहिए, जिससे कुबेर का घर में पूर्ण स्थायित्व हो सके। लक्ष्मी अर्थात् धन, सौभाग्य, श्री वृद्धि का अद्वितीय एवं तुरंत प्रभावकारी यह कुबेर सिद्धि प्रयोग है। ऐसे अद्वितीय ''धनाधीश कुबेर यंत्र'' का घर में पूजन मात्र से ही प्रचुर रूप में धन प्राप्त होता है।

लक्ष्मी प्राप्ति, आकस्मिक धन प्राप्ति, ऋण निवारण, अखंड सौभाग्य, भाग्योदय तथा मनःइच्छापूर्ति के लिए यह साधना सर्वोपरि एवं अद्वितीय है। साधना सम्पन्न करने के उपरान्त धनाधीश कुबेर यंत्र को पूजा स्थान पर ही रहने दें तथा कुबेर माला को धारण कर लें, फिर १६/०३/९५ को होलिका अग्नि में यंत्र व माला दोनों को अर्पित कर दें।

अकाल मृत्यु निवारण एवं भगवान शिव के साक्षात् दर्शन हेतु महामृत्युञ्जय प्रयोग--

शास्त्रों में मृत्युञ्जय महादेव के ध्यान के जो श्लोक मिलते हैं, उनसे तथा **''वेदोक्त त्र्यम्बक मंत्र''** से मृत्युञ्जय शिव का स्वरूप जाना जा सकता है। नश्वर शरीर का परिवर्तन मृत्यु है और परिवर्तन से छुटकारा पाना मृत्यु को दूर करना है। भगवान शिव के जितने भी विविध रूप हैं, उनमें से महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम रूप है ''महामृत्युञ्जय'' का। शंकर के चिन्तन, मनन, पूजन और साधना से मृत्यु-भय को हमेशा-हमेशा के लिए दूर किया जा सकता है। मनुष्य जीवन का ध्येय, उसका परम पुरुषार्थ भोग और मोक्ष है, और इसे प्राप्त करने का सुअवसर है यह ''महाशिवरात्रि पर्व'', जिस दिन इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

दीर्घायु एवं स्थाई आरोग्य प्रत्येक मनुष्य के लिए परम आवश्यक है, इसके लिए वह प्रतिदिन, प्रतिक्षण चिन्तन करता रहता है, और विभिन्न औषधियों तथा उपायों का सहारा लेता है। **''महामृत्युञ्जय साधना''** इस दृष्टि से सर्वोपरि है, जिससे साधक निरोगी एवं दीर्घायु बना रहता है।

मृत्यु तो एक दिन सबकी होनी ही है, परन्तु असमय में मृत्यु न हो इसके लिए ऋषियों-मुनियों ने इस सर्वश्रेष्ठ साधना का चयन किया, जिसके द्वारा अकाल मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। ''महामृत्युञ्जय साधना'' बीमारी, अपघात, मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति, आकस्मिक दुर्घटना रोकने एवं पूर्ण आयु प्राप्त करने का अद्वितीय प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को शिवरात्रि के विशेष अवसर पर सम्पन्न करना ही चाहिए। हजारों-लाखों लोगों ने इस साधना को सम्पन्न कर आश्चर्यजनक फल प्राप्त किया है, और कोई भी व्यक्ति यदि पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास के साथ इस साधना को सम्पन्न करे, तो वह निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त करता ही है।

पाठकों और साधकों के विशेष अनुरोध पर ही हमने दिसम्बर माह में ही महाशिवरात्रि पूजन हेतु साधना सामग्री विवरण प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक, साधक समय रहते ही सामग्री प्राप्त कर प्रयोग सम्पन्न कर सकें तथा इससे प्राप्त होने वाले समस्त लाभ उठा सकें।

महामृत्युञ्जय महाशिवरात्रि पूजन पैकेट में निम्न अति विशिष्ट एवं दुर्लभ सामग्रीयों का समावेश किया गया है, ये सभी सामग्री बहुत ही कठिनाई से उपलब्ध हो पाती हैं, अतः इस प्रकार का मात्र १०१ पैकेट ही बनाना सम्भव हो सकेगा, कृपया आप अति शीघ्र ही पत्रिका कार्यालय जोधपुर में फोन अथवा पत्र द्वारा अपना ऑर्डर लिखवा दें, जिससे आपको असुविधा का सामना न करना पड़े।

महामृत्युञ्जय महाशिवरात्रि साधना पैकेट–

१. महामृत्युञ्जय यंत्र
२. ज्वलित
३. नन्दनेय
४. अपर्णा गुटिका
५. गौरी शंकर रुद्राक्ष
६. धूम्राक्ष
७. ब्रह्माण्ड मोहनाख्य
८. कामनापरत्व मुद्रिका
९. शाम्ब फल
१०. शिवाबिल
११. रेणुका माल्य

साधना विधि –

महामृत्युञ्जय महाशिवरात्रि साधना पैकेट में से उपरोक्त सभी सामग्री को निकाल कर पूजा स्थान में सफेद वस्त्र बिछाकर ग्यारह कुंकुम की बिन्दियां एक क्रम से लगाकर स्थापित करें। सभी सामग्री का लघु पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप तथा दीप से सम्पन्न करें। **''ॐ नमः शिवाय''** मंत्र का जप करते हुए ११ बिल्व पत्र चढ़ायें, फिर **रेणुका माल्य** से ११ माला निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें।

मंत्र –

ॐ त्र्यम्बकं महामृत्युञ्जयाय नमः

अगले दिन सभी समग्री को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।
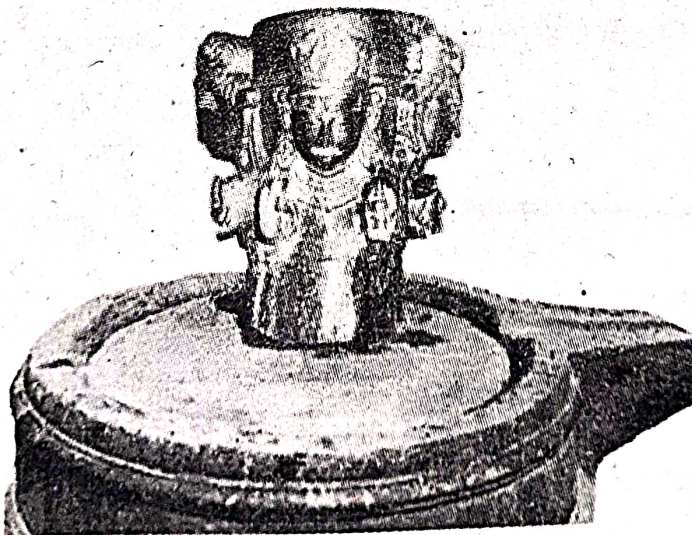
अद्वितीय, श्रेष्ठ एवं दुर्लभ शिवलिंग

महाशिवरात्रि के विशेष अवसर पर विभिन्न दुर्लभ शिवलिंगों की स्थापन का भी विशेष महात्म्य है। ये अद्वितीय शिवलिंग मात्र साल - दो साल ही नहीं पीढ़ी दर पीढ़ी सम्पूर्ण परिवार को सुखी - सम्पन्न एवं सभी दृष्टियों से पूर्णता युक्त बनाए रखते हैं–

पारदेश्वर शिवलिंग –

मंत्र -सिद्ध, प्राण -प्रतिष्ठा युक्त रससिद्ध शुद्ध पारे से निर्मित पारद शिवलिंग प्राप्त होना सौभाग्य का सूचक है, जिसके पूर्वजन्म के पाप क्षय हो जाते हैं, और सौभाग्य का उदय होने लगता है, उसे ही **''पारदेश्वर शिवलिंग''** प्राप्त हो सकता है।
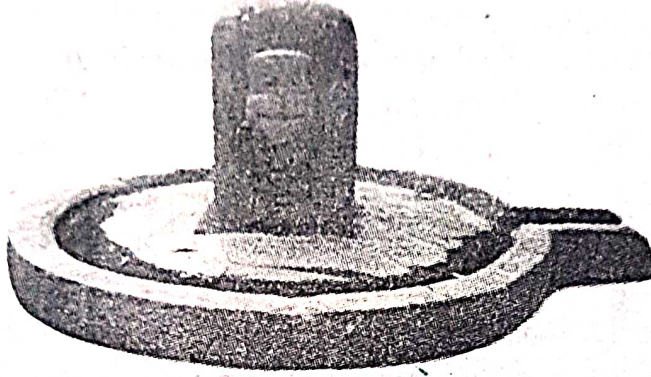
जिसके घर में पारदेश्वर शिवलिंग होता है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए घर में ऋद्धि - सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है। जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर, विपरीत परिस्थियों में बड़े होकर, सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी, जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपने घर में शिवरात्रि के दिन पारदेश्वर शिवलिंग की स्थापना करनी ही चाहिए।

नर्मदेश्वर शिवलिंग –

नर्मदा नदी से प्राप्त शिवलिंग को मंत्र-सिद्ध करके उसकी उपासना करने का महत्व है। सांसारिक जीवन की सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिए **''नर्मदेश्वर शिवलिंग''** की उपासना से बढ़कर अन्य कोई उपाय नहीं है।

कार्य सिद्धि, , पुत्र प्राप्ति, मुक्ति प्राप्ति आदि हेतु इस शिवलिंग का जन-सामान्य में विशेष महत्व है, अतः शिवरात्रि के दिन प्रत्येक साधक को इस शिवलिंग का पूजन-अर्चन कर इसे घर में स्थापन अवश्य करना चाहिए।

नीलम शिवलिंग –

नीलम एक ज्वलन्त पदार्थ है, यह अधिक कठोर नहीं होता है, इससे शिवलिंग बनाते समय बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। जिस समय शनि, मकर या कुम्भ राशि में हो अथवा शनिवार के दिन स्वाती, विशाखा, चित्रा, घनिष्ठा, श्रवण या उत्तरा नक्षत्र हो, तब ऐसे शुभ दिन में निर्मित **''नीलम शिवलिंग''** का पूजन या अनुष्ठान करें, तो उसे यथाशीघ्र लाभ होता ही है।

जीवन का यह परम सौभाग्य माना जाता है, कि नीलम शिवलिंग मिले। ऐसा कहा गया है कि मात्र उस शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही अनन्त पुण्य प्राप्त होता है।

हीरक शिवलिंग –

रत्नों में हीरक अत्युत्तम एवं बहुमूल्य माना गया है। अपनी विशेष चमक के कारण यह अद्वितीय एवं दिव्य होता है। यह पीला, सफेद, लाल तथा नीले रंगों में पाया जाता है। इन्हीं रंगों से युक्त हीरक पत्थर द्वारा **''हीरक शिवलिंग''** निर्मित किया जाता है। इस शिवलिंग के पूजन एवं अनुष्ठान से साधक अमर बन जाता है, उसके जन्मान्तरीय दोषों का शमन होने से वह अतीव पावनतम बन जाता है, सांसारिक सभी ऐश्वर्य तथा भोगों से परिपूर्ण अद्वितीय जीवन का स्वामी बन जाता है।

मुक्तक शिवलिंग –

इस प्रकार के अलौकिक शिवलिंग के पूजन एवं अनुष्ठान का सौभाग्य किसी भी व्यक्ति को मिल जाये, तो वह देवतुल्य माना जाता है। श्रावण मास में तथा किसी भी शुभ तिथि में किया गया अनुष्ठान अत्यन्त लाभकारी एवं सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला होता है।

माणिक्य शिवलिंग –

यह गुलाबी रंग का होता है, यह अति सुन्दर और चमकदार रत्न है। इससे बना शिवलिंग अति मनोरम एवं शुभप्रद कहा गया है, जिसकी जन्म कुण्डली में शनि एवं सूर्य साथ हों, उसके लिए **''माणिक्य शिवलिंग''** का पूजन एवं अनुष्ठान शुभ माना जाता है।

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

मंदिर-मस्जिद का विवाद एक बार फिर भड़केगा, मंदिर निर्माण को लेकर राजनीतिक उथल-पुथल तेज होगी। टकराव की स्थिति में सैकड़ों लोगों के हताहत होने की आशंका रहेगी। साम्प्रदायिक शक्तियों से टकराव की दृढ़ता रखने वाले मुलायम सिंह नरमी का रुख अपनायेंगे।

पाकिस्तान-कश्मीर समस्या को लेकर संयुक्त राष्ट्र महासभा में पुनः-पुनः झड़प होती रहेगी एवं समस्या का समाधान लम्बित हो जायेगा। कश्मीर विवाद को लेकर भारत की स्थिति मजबूत रहेगी।

हरियाणा के विकास कार्यों में तीव्रता आयेगी, वहीं राजनैतिक गतिविधियां तेज होंगी। हरियाणा का मंत्रिमण्डल आलोचनाओं के घेरे में आयेगा। मुजफ्फरनगर कांड को लेकर संसद में तीव्र झड़पें होंगी।

श्रीनगर में उग्रवाद की समस्या में काफी सुधार होगा, उग्रवादियों की मनोदशा में परिवर्तन आयेंगे। वहीं दिल्ली व आसपास के इलाके झूठी अफवाहों से त्रस्त रहेंगे।

माह के अंत में पंचायती चुनाव सम्पन्न होंगे, एवं स्थिति में सुधार होगा। नगर परिषद की कठोरता से रेहड़ी-पटरी वालों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, विवाद की स्थिति बनेगी।

मुलायम सिंह की सरकार को लेकर तीव्र झड़पें, तनाव व उग्रता बढ़ेगी तथा उत्तर-प्रदेश सरकार अपने अस्तित्व को बनाये रखने में प्रयासरत रहेगी। मुलायम सिंह एवं भाजपा की सीधी टक्कर की आशंका तीव्र। अधिकतर स्थानों पर वार्ड चुनाव सम्पन्न होंगे। विकास कार्यों में वृद्धि होगी।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर आर्थिक संकट बढ़ेगा, विदेशी मुद्रा को लेकर स्थिति में जटिलता आयेगी। श्री मुलायम सिंह जी "हल्ला बोल" अभियान वापस लेने पर मजबूर होंगे, तथा "हल्ला बोल" अभियान से आता तनाव शांत होगा। दलित कांशीराम जी में तथा श्री राही में आपसी मतभेद बढ़ेंगे।

अयोध्या मुद्दे को लेकर विहिप का आन्दोलन तेजी का रूप धारण करेगा। पंजाब व आसपास के क्षेत्र में स्थिति अनुकूल रहेगी। राजस्थान में आर्थिक विकास की नवीन योजनाएं प्रारम्भ की जायेंगी।

शेयर मार्केट

त्यौहारों के कारण जिस प्रकार शेयरों में गिरावट आयी थी, वह अब पुनः एक बार उछाल की स्थिति में आयेंगे। कुछ प्रमुख शेयर गिरावट की स्थिति में ही रहेंगे। राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर तथा आर्थिक संकट को लेकर शेयर होल्डर्स असुरक्षात्मक स्थिति में रहेंगे। इस माह में शेयर होल्डर्स का रुख स्पेसीफाइड तथा नानस्पेसीफाइड समान रूप से रहेगा।

होटल व्यवसाय के शेयर अपनी स्थिति में कमजोर रहेंगे तथा मनोरंजन से सम्बन्धित शेयर अपनी स्थिति मजबूत करेंगे।

जिन शेयरों की स्थिति इस माह अच्छी रहेगी, तथा उछाल की स्थिति प्राप्त करेंगे उनका विवरण इस प्रकार है—

ए. सी. ई लैब, वोल्टॉस इण्डिया, एम. टेक ऑटो, बजाज लीजिंग, भिवानी सिंथेटिक, इंडो गल्फ फर्टीलाइजर, हिंद डेवलप कार्पो., हिन्दुस्तान मोटर, चम्बल फर्टीलाइजर, दिवान रबड़, दिवान टायर, धामपुर शुगर, अपोलो टायर।

इनके अलावा कुछ शेयर ऐसे हैं, जिनके बारे में स्पष्ट कहा जा सकता है— उनमें अशोका लेलैंड, एशियन पेंट, एटलस कोपको, बजॉज ऑटो, बड़ौदा रेयान, बाम्बे डाइंग, ब्रिटानिया इंड, बुक ब्रांड, सीयेट टायर, कोलगेट, एस्सार शिपिंग, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, मोदी रबड, नेस्ले, रेमण्ड वुलन के शेयर उछाल की स्थिति में रहेंगें।

दिल्ली, बम्बई में इस माह कुछ नवीन शेयरों का भी बोलबाला रहेगा। एशियन होटल, गुप्ता कॉरपेट, होटल लीला, मैजेस्टिक ऑटो, ओसवाल एग्रो, बाटा इंडिया, बिहार एलायज, बी. पी. एल. लिमि., डनलप इंडिया, वीडियोकॉन जैसे शेयर उतार की स्थिति में रहेंगे।

इस माह शेयर होल्डर्स में विशेष उत्साह रहेगा, समस्त भारत में अधिकतर स्पेसीफाइड शेयर ही अपना वर्चस्व बनाए रखेंगे। ❋

२५-०२-९५

विजया एकादशी यानि विजय प्राप्ति पर्व, जो देता है उन्नति, सम्पन्नता, पूर्णता और श्रेष्ठता। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन विभिन्न समस्याओं, बाधाओं, कष्टों आदि से घिरा रहता है। वह हर क्षण परेशान, चिन्तित व दुःखी सा दिखाई देता है, और उन दुःखों से मुक्ति पाने के लिए वह अनेकानेक उपाय कर डालता है, परन्तु किसी भी कार्य को करने से पूर्व वह हर क्षण आशंकित सा दिखाई देता है, उसके मन में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने से पहले यह विचार अवश्य आता है — क्या

मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है, जिस कारण वह निराशावादी, नीरस व अभाव युक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, विजया एकादशी प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है, क्योंकि विजया एकादशी . . .

यह कार्य सम्पन्न होगा? क्या इस कार्य में मुझे सफलता मिलेगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके मानस-पटल पर अपना आधिपत्य पहले से ही जमा कर बैठ जाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि वह कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व ही निराश हो जाने के कारण उसमें पूर्णरूप से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति हर क्षण प्रयासरत रहता है, किन्तु सफलता उसके हाथ नहीं लगती। साधारणतः आम जीवन में तो प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही समस्याओं व बाधाओं से ग्रस्त रहता है, किन्तु इन सभी कष्टों से, इन सभी बाधाओं से उसे छुटकारा मिल सकता है, यदि उसे उस क्षण विशेष मे उस दुर्लभ साधना का ज्ञान हो, जिसे **''विजया एकादशी प्रयोग''** कहते हैं।

यह जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है, यदि व्यक्ति को इस प्रयोग का ज्ञान हो, तो वह अपने अभावयुक्त जीवन से शीघ्र ही निजात पा सकता है। यह एक दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्पन्न करना ही चाहिए।

जीवन का मतलब सुख और शांति के साथ समय व्यतीत करना होता है, हम अपने जीवन में जितना परिश्रम करें उतना फल हमें प्राप्त हो जाए, पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में देखते हैं कि बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी उतनी अधिक सफलता हमें प्राप्त नहीं हो पाती।

व्यापार में हम दिन-रात मेहनत करते रहते हैं, और समय आने पर उसका जो कुछ लाभ प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता, हम अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन-मुटाव नहीं चाहते, परन्तु प्रयत्न करने के वावजूद भी परिवार में जो सुख, शांति और आनन्द होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।

विजया एकादशी प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है। ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति विजया एकादशी के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो उसे सफलता मिलती ही है, क्योंकि विजया एकादशी अपने-आप में ऐसा ही श्रेष्ठ क्षण है, जिसका लाभ कोई भी व्यक्ति या साधक पूर्णतः उठा सकता है।

आज मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है, जिस कारण वह निराशावादी, नीरस व अभाव युक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, जैसे –

१. यदि व्यक्ति निर्धन हो तथा आर्थिक दृष्टि से दुःखी व पीड़ित हो।
२. यदि वह बीमार हो, उसका स्वास्थ्य ठीक न रहता हो।
३. किसी तनाव से चिन्ताग्रस्त होने के कारण यदि व्यक्ति बार-बार आत्महत्या करने की सोच रहा हो।
४. यदि विवाह सम्पन्न न हो रहा हो।

५. विवाह सम्पन्न करने के पश्चात् यदि सन्तान उत्पन्न न हो रही हो।
६. यदि परीक्षा में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त न हो रही हो।
७. पुत्र या पुत्री आज्ञाकारी न हो।
८. यदि आपका कोई शत्रु हो या अकारण ही किसी से शत्रुता बढ़ जाए अथवा हर समय शत्रुभय बना रहता हो।
९. यदि समाज में कोई सम्माननीय स्थान प्राप्त न हो रहा हो।
१०. यदि मकान, जमीन-जायदाद आदि के लिए किसी विपत्ति या परेशानी का सामना करना पड़ रहा हो।
११. यदि बहुत प्रयत्न करने पर भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों।
१२. यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आ रही हों, और प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मतभेद दूर नहीं हो रहे हों।
१३. यदि नौकरी में उन्नति व प्रमोशन न मिल रही हो।
१४. जीवन में बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी भाग्योदय नहीं हो रहा हो, हर क्षण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो।

इस प्रकार की समस्त बाधाओं, अड़चनों का निराकरण इस विजया एकादशी प्रयोग से ही सम्भव है, जो धन, यश, मान, पुत्र, पौत्र, व्यापार, नौकरी, विवाह आदि समस्याओं को दूर करने में सक्षम है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय एवं अचूक प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति शीघ्र ही लाभ प्राप्त कर सकता है। **यह प्रयोग पूर्णतः प्रामाणिक है, क्योंकि पूज्य गुरुदेव द्वारा अपने कुछ शिष्यों को दिया गया यह अद्वितीय प्रयोग अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध करता है, जिसे सम्पन्न कर उन शिष्यों या साधकों ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की, और आज भी जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर वे सुख-वैभव, पद-प्रतिष्ठा, पुत्र-पौत्र सभी कुछ प्राप्त कर एक श्रेष्ठ व पूर्ण सम्पन्नता युक्त जीवन का निर्माण करने में सक्षम हो सके हैं।**

विजया एकादशी तो समस्त कार्यों में विजय प्रदान करने वाली एकादशी है। यह सौभाग्यदायक दिवस **२५.२.९५** को एक विशेष पर्व के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है, यदि उसका साधनात्मक दृष्टि से उचित प्रयोग किया जाए, तो यह प्रयोग विशेष उन्नतिदायक एवं सफलतादायक है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति सुख, सौभाग्य, समृद्धि, उन्नति, पूर्णता व श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है।

इस प्रयोग को कोई भी व्यक्ति अपने घर पर बैठकर सम्पन्न कर सकता है। यह एक सहज सफलतादायक प्रयोग है, जिससे साधक जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर एक सुखी जीवन का निर्माण कर सकता है।

जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर सुख- वैभव, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करना प्रत्येक साधक का अधिकार है . . . लेकिन यह सम्भव है उस विशेष क्षण को पकड़ कर सभी प्रकार से विजय प्राप्त कर लेने की . . .

प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ तिथि **फाल्गुन कृष्ण पक्ष की एकादशी, शनिवार तदनुसार २५.२.९५** को है। यह रात्रिकालीन साधना है, इसमें साधक या साधिका स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख कर बैठ जाएं, इसके पश्चात् बाजोट के ऊपर पीला वस्त्र बिछाकर, उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल अंकित कर **विजया यंत्र** को उस पर रख दें, फिर उस यंत्र पर अष्टदल से ११ बिन्दियां लगाएं तथा **११ घुंघचियों** को अर्द्धचन्द्राकार रूप में यंत्र के सामने रख दें, इसके बाद कुंकुम, अक्षत, व ११ पीले पुष्प उस यंत्र व घुंघचियों के समक्ष अर्पित कर दें, तथा एक घी का दीपक यंत्र के सामने प्रज्वलित कर दें, ध्यान रखें कि दीपक पूरे साधनाकाल में जलता रहे, फिर इसके पश्चात् साधक बेसन से बने भोग को नैवेद्य के रूप में समर्पित करें।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी भी प्रकार के माला की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल ३० मिनट तक शांतचित्त होकर निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रौं विजयायै नमः

मंत्र-जप करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें, तथा वेसन से बना प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान पूर्वक पूजन सम्पन्न कर, पूरे परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण कर भोजन कर लें। अगले दिन प्रातःकाल उठकर साधक उस यंत्र का पुनः संक्षिप्त पूजन करे, जिस वस्त्र पर यंत्र स्थापित किया है, उसी में यंत्र और घुंघची को लपेटकर उसे मौली से बांध दें, फिर किसी नदी में या किसी पवित्र सरोवर में उस पोटली को विसर्जित कर दें। ❋

दीपावली महोत्सव १९९४

दीपावली का वह महापर्व, जो जोधपुर में पूज्य गुरुदेव के साहचर्य में सम्पन्न हुआ, बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया . . और सौभाग्यशाली था वह व्यक्ति, जो उन क्षणों में वहां उपस्थित था, और दुर्भाग्य था उसका, जो वहां अनुपस्थित था।

दीपावली की ऐसी ही स्वर्णिम बेला थी वह, जो चारों तरफ अपना प्रकाश बिखेर रही थी हर साधक के मन पर, हृदय पर और उसकी आत्मा पर। ऐसा ही था वह पर्व, जिसने लोगों को नृत्यमय बना दिया था, जिससे वहां का कण - कण अपना सौभाग्य अनुभव कर रहा था, और वह था पूज्य गुरुदेव का स्नेह स्पन्दन, जो प्रत्येक के दिलों को आह्लादित कर रहा था, उमंगित कर रहा था, इसके साथ ही पूज्य गुरुदेव का वह दिव्य आशीर्वाद और उनका विशेष शक्तिपात, जो दीपावली की रात्रि पर वहां उपस्थित साधकों को प्राप्त हुआ।

पूज्य गुरुदेव ने उन साधकों एवं शिष्यों पर प्रसन्न हो, उन्हें वे विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न कराये, जो उनके लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण थे, तथा जिन्हें सम्पन्न कराने के लिए वे दृढ़ संकल्पित थे . . . और उन्होंने ऐसा ही किया इस पावन पर्व पर, उन साधकों की समस्त न्यूनताओं और अभावों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने प्रथम दिन **''पूर्णत्व प्रदायक प्रयोग''** और **''निखिलेश्वरानन्द हृदय स्थापन प्रयोग''** तथा साथ ही **''त्वरित मनोकामना पूर्ति प्रयोग''** को सम्पन्न कराया, जिससे कि वे शिष्य या साधक जीवन की सर्वोच्चता को प्राप्त कर उस दिव्य तेजस शक्ति को अपने हृदय में स्थापित कर सकें, जिसके माध्यम से वे गुरुमय हो सकें और उनकी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति शीघ्र से शीघ्र सम्भव हो सके।
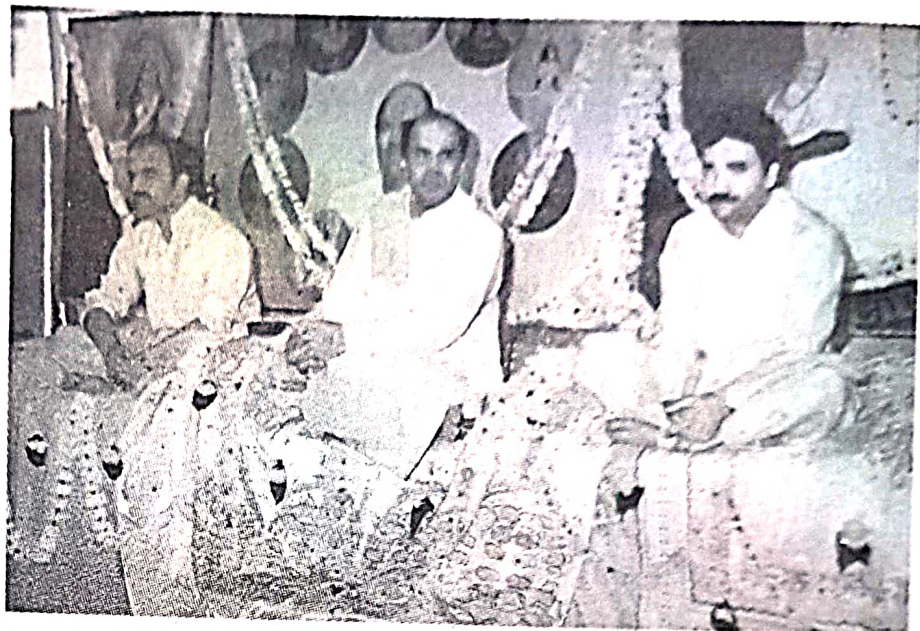
और दूसरे दिन जिसे **''महानिशा रात्रि''** भी कहते हैं, उस दिन **''कार्य सिद्धि प्रयोग''** और **''सिद्धिदात्री महालक्ष्मी पूजन''** एवं **''लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग''** जो महर्षि भृगु प्रणीत था, सम्पन्न कराया, जिससे कि लक्ष्मी स्थायी रूप से प्रत्येक साधक के पास रह सके, फिर उसे जीवन में आर्थिक संकटों का सामना न करना पड़े, फिर किसी के आगे उसे हाथ न फैलाना पड़े . . और इस भौतिकता पूर्ण युग में वह गुरुदेव की एक आवाज पर दौड़ कर आ सके, उसके कदम रुकें नहीं, उसके जीवन में फिर कोई अभाव शेष न रह जाय।

ऐसे ही दिव्य क्षण थे दीपावली के, जब सिंह लग्न में इन प्रयोगों को अपनी पूरी ऊर्जा शक्ति के द्वारा पूज्य गुरुदेव ने

एवं रोशनी से आपूरित हो सके।

पूज्य गुरुदेव ने तो इस शिविर में लोगों को आमन्त्रित किया ही था, साथ ही शिविर को सफल बनाने में जोधपुर के स्टॉफ ने दिन - रात एक कर दिया, उन्होंने साधकों को किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होने दी तथा उनके खाने-पीने, उठने-बैठने, सोने आदि का विशेष रूप से ध्यान रखा, जिससे कि किसी भी साधक को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं हो।

जोधपुर स्टॉफ में कार्यरत सभी शिष्यों— श्री संजीव वर्मा, श्री के. एम. श्रीवास्तव, ऊषा श्रीवास्तव, स्वामी हरिनाथ, श्री रघु यादव, डॉ० सन्तोष धंले, श्री मयंक जोशी, श्री श्याम नारायण भारद्वाज, श्री राम जी दास, वहिन उर्मिला, श्री चेतन चौहान, श्री रमेश वर्मा, श्री मोहन शर्मा, श्री ऋषिकेश, श्री विकास, श्री संजय, श्री अमरनाथ, श्री कमल शर्मा, श्री महेन्द्र सिंह, श्री वंशीलाल, श्री हरिप्रसाद, श्री ज्ञानेश्वर, श्री भानुप्रसाद, श्री राजेश, श्री जीतेन्द्र, श्री भरोसीराम रावत के समर्पण एवं सेवा-भाव को देखकर पूज्य गुरुदेव ने दीपावली के पर्व पर उन्हें विशेष आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि— **''वे इसी प्रकार श्री गुरु-चरणों में सेवारत रहते हुए समाज में सूर्य के समान आलोकित होते रहें।''**

उन उपस्थित व्यक्तियों को सम्पन्न कराया, जब पूज्य गुरुदेव ने उन्हें यह आशीर्वाद प्रदान किया कि — **''सुदामा की तरह ही मैं तुम्हें धनवान, सुखी, सम्पन्न व समृद्धि पूर्ण जीवन प्रदान कर रहा हूं, और यह मेरा वचन है।''** इस कथन को सुनकर पूरे पंडाल में जोर - जोर से गुरुदेव की जय - जयकार गूंजने लगी तथा वहां उपस्थित समस्त साधक हर्षोल्लास एवं आनन्दमग्न होकर नृत्यमय हो उठे, और इस प्रकार सम्पूर्ण रात्रि प्रसन्नता से झूमते हुए व्यतीत हुई।

यह तो लोगों का भ्रम है कि दीपावली अपने ही घर में मनाने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है, यह तो पुरानी रीति है, जो सदियों से चली आ रही है, और लोगों ने उसे ही सही मान लिया, किन्तु यह सर्वथा सही नहीं है। जब किसी देवात्मा का अवतरण इस पृथ्वी तल पर होता है, और जब उनका साहचर्य प्राप्त होता है, तो ऐसे दिव्य अवसरों पर उनका दिव्य आशीर्वाद व सामीप्यता मिलने से यह जीवन ही नहीं, आगे के कई कई जन्म संवर जाते हैं।

. . . और ऐसा ही किया उन धन्यभागी लोगों ने, जो इस बात को पहले से ही जानते थे कि पूज्य गुरुदेव **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** कोई साधारण व्यक्ति नहीं, अपितु एक उच्चकोटि की देवात्मा हैं।

जिन लोगों ने भी इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव की सामीप्ता प्राप्त की है, उनके भाग्य की सराहना तो देवता भी करते हैं, उन साधकों ने इस पर्व का उचित उपयोग कर महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त किये हैं, और लाभ ही नहीं, अपितु एक अभावमुक्त जीवन का निर्माण किया है।

दीपावली के इस विशेष महापर्व पर पूज्य गुरुदेव ने साधक रूपी दीपकों को अपनी प्राणश्ऊर्जा से प्रज्वलित किया है, जिससे समाज में फैला अंधकार दूधिया प्रकाश में परिवर्तित हो जाए, और एक घर ही नहीं, अपितु पूरा विश्व ही उसकी जगमगाहट

कुण्डलिनी जागरण और गुरु कृपा

जब कभी जीवन के किसी मोड़ पर जन्मान्तरों के पुण्य प्रभाव से कोई जीवन्त एवं चैतन्य गुरु मिल जाए, तो बिना ना-नुच किए, बिना विकल्प एवं कुतर्क के उनके चरणों को पकड़ लेना चाहिए। यह सौभाग्य कभी-कभी और किसी विशेष जीवन में ही प्राप्त होता है, यह एक अद्वितीय क्षण होता है, क्योंकि मूलाधार से सहस्रार तक की यात्रा का एकमात्र साक्षीभूत तत्व 'गुरु' ही होता है।

विज्ञान ने अपने आविष्कारों से समस्त विश्व को नापा, पृथ्वी की छाती चीरकर पातल तक पहुंच गया, चन्द्र लोक से लेकर इतर लोकों को भी झांक लिया, किन्तु अभी तक वह मनुष्य के अन्दर उतरने की क्रिया नहीं कर पाया। **विज्ञान ने बाहरी प्रयास तो बहुत किया, वह उसमें सार्थक और सफल भी रहा, किन्तु मनुष्य के भीतर जो आनन्द का स्रोत है, उसे ही अभी तक नहीं खोज पाया। इसीलिए आज का मानव 'महामानव' नहीं बन पाया।**

आज का मनुष्य जितना पिपासित है, उतना कभी नहीं रहा, यह जीवन की बहुत बड़ी न्यूनता है और विज्ञान के पास इसका कोई उपाय भी नहीं है, इसका जो भी विस्तार हुआ है, वह सब कुछ चेतना रहित एवं आनन्द शून्य है।

विज्ञान ने आज जो कुछ भी किया, वह सब कुछ सुख के लिए है — पंखा चलाने से हमें सुख मिलता है, फ्रिज एवं टी. वी. आदि से हमें सुख की प्राप्ति तो होती है, किन्तु आनन्द नहीं मिल पाता।

अब तो आनन्द फल होई

सुख क्षणिक है और आनन्द ही शाश्वत है, जिसकी मानव को सदैव से प्यास है. . . वह आनन्द तब तक नहीं मिल पाता, जब तक अन्दर उतरने की क्रिया नहीं होती, इसीलिए मनुष्य के अन्दर अभी तक पर्त दर पर्त दर्द ही दर्द रिस रहा है। विज्ञान तो देह तत्व से ऊपर उठ ही नहीं सका है। विज्ञान से मानव के अहं
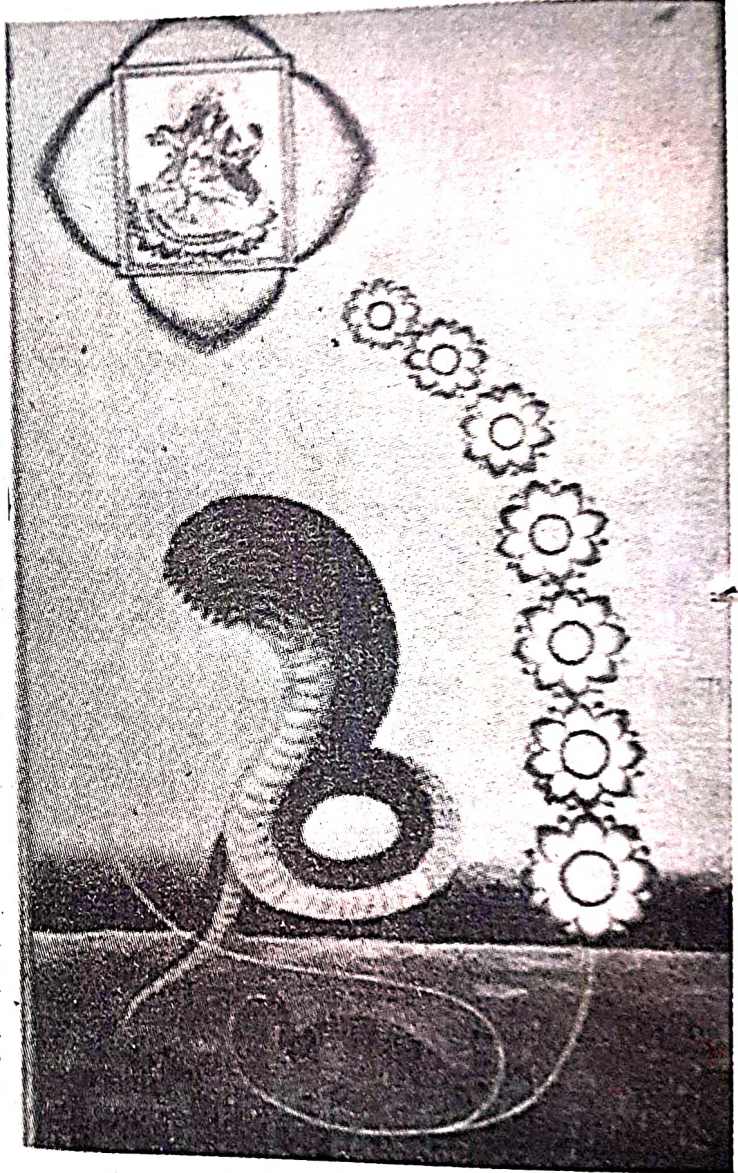
की तुष्टि होती है।

जहां बुद्धि है, जहां तर्क है, वहां तृप्ति और श्रद्धा नहीं होती है, और जहां श्रद्धा नहीं है, वहां आनन्द की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

फूलों में जो मुस्कान है, भ्रमरों के मधुर गुंजन में जो आनन्द है, उसे विज्ञान नहीं समझ सकता, क्योंकि उसे जानने का उसके पास पैमाना नहीं है, उसके पास तो मात्र तर्क है। आनन्द का उद्वेग तो हृदय के भीतर से होता है, इसलिए ही विज्ञान के माध्यम से मनुष्य को चेतना नहीं दी जा सकती।

हृदय-कमल के विकास को, मन एवं प्राणश्चेतना को केवल 'ज्ञान' से ही समझा जा सकता है, और अन्दर उतरने की क्रिया केवल ज्ञान से ही सम्भव होती है... और ज्ञान का सूत्रधार 'गुरु' होता है।

''गुरु'' एक चेतना पुञ्ज है, जो सर्वत्र फैला हुआ है। जिस दिन भी गुरु को आपने पकड़ा, उसी दिन से उस शक्ति और आनन्द के स्रोत को पाया जा सकता है, और उस आनन्द का उत्स प्रयासरत साधक को प्राप्त होगा ही अथवा उस रहस्य को जानने के बाद ब्रह्माण्ड का कोई भी रहस्य अज्ञात नहीं रहेगा।

''यस्मिन विज्ञाते सर्व विज्ञातं भवति''

यह उपनिषद् वाक्य इसीलिए सार्थक है, क्योंकि शरीर के भीतर उतरने के बाद वहां समस्त देवी-देवता दृष्टिगोचर होते ही हैं। बाहर भले ही हम अनन्त तीर्थों में, मंदिरों में भटकें, कितने ही साधना अनुष्ठान करें, किन्तु परमानन्द पाने के लिए अपने अन्दर जाने की क्रिया करनी ही पड़ेगी और उसके लिए गुरु ही एकमात्र माध्यम है।

गुरु के द्वारा शक्तिपात के माध्यम से जब प्रसुप्त कुण्डलिनी ऊर्ध्वगमन करती है, तब साधक के वर्तमान एवं जन्मान्तरों के दोष पूर्ण रूप से विघटित हो जाते हैं। उसके बाद क्रमशः चक्रों के जाग्रत होते ही उस दिव्यत्व की प्राप्ति की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं, उस स्थिति में साधक के वर्तमान एवं जन्मान्तरों के अनेक दोषों को परिमार्जित करने के लिए शक्तिपात तथा दीक्षा आवश्यक होती है, क्योंकि साधना काल में साधक की देह बाह्य तथा आन्तरिक रूप से शुद्ध नहीं होती।

जब तक साधक एवं सद्गुरु एक भूमि पर आरूढ़ नहीं होते, तब तक उपासना या साधना सम्भव ही नहीं है, क्योंकि 'उपास्य' परम शुद्ध होता है, तो 'उपासक' को भी तत्सम होना चाहिए।

सद्गुरु के अनुग्रह वश जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब उसमें क्रमशः स्पन्दन होता चला जाता है। गुरु की दिव्य शक्ति से साधक की कुण्डलिनी प्रेरित होकर देह को शुद्धता प्रदान करती है, और कुण्डलिनी उन विभिन्न चक्रों को उद्घाटित करती हुई विशेष अनुभूतियों को प्रदान करती है।
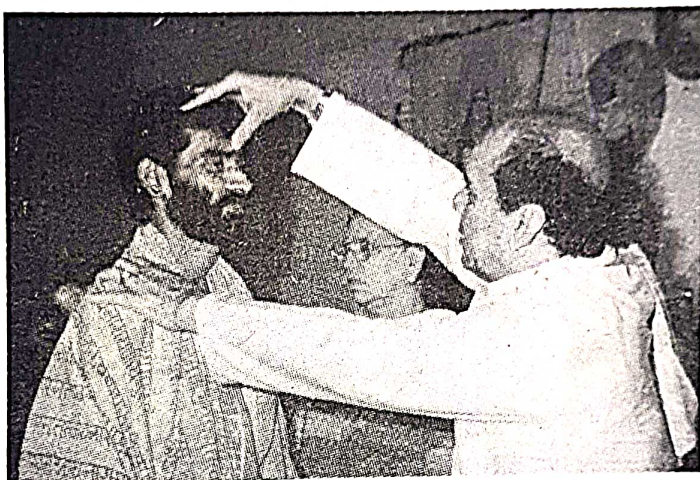
इस प्रकार गुरु प्रदत्त शक्तिपात, दीक्षा एवं विशेष अनुग्रह वश साधक के हृदय पर से अज्ञान का आवरण हट जाता है।

कोई भी साधक अपनी स्वतः साधना से इस आवरण को हटा नहीं सकता, मूल आवरण तो मात्र गुरु के द्वारा ही हट सकता है, इस प्रकार साधक की स्वरूप उपलब्धि में एकमात्र आधारभूत तत्व गुरु को ही माना गया है।

साधक पूर्वावस्था में गुरु के परम रहस्य को नहीं समझ सकता, क्योंकि गुरु की दो अवस्थाएं हैं— एक, 'देहगत अवस्था' और दूसरी, 'ब्रह्मत्व अवस्था'। जब तक साधक गुरु की उस अवस्था को, जो कि दिव्यतम है; नहीं समझेगा, तब तक वह उसके साथ एकाकार की स्थिति प्राप्त नहीं कर सकता।

गुरु स्वयं अपने दिव्यतम रूप से अवगत कराने के लिए साधक को उस स्थिति तक ले जाते हैं, जिससे साधक के मन में श्रद्धा और विश्वास स्थिर हो सके।

— क्योंकि उस विराट स्वरूप के दर्शन के लिए साधारण अवस्था प्रतिकूल होती है— कृष्ण को अपना विराट स्वरूप और महत्व समझाने के लिए अर्जुन को उस स्थिति तक ले ही जाना पड़ा।

एक स्थिति ऐसी आती है, कि गुरु और शिष्य दोनों एक ही अवस्था में पहुंच कर समत्व भाव को प्राप्त करते हैं, इसे गुरु का शिष्य के प्रति अनुग्रह कहा जाता है।

इसके लिए शिष्य को जन्म-जन्म तक गुरु का कृतज्ञ होना चाहिए। ❋

सुखद
जीवन का
अहसास
इस जीवन का
सौभाग्य
एवं गौरव

सदस्य बनने के दो माह
के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी
दीक्षा सर्वथा मुफ्त

पूरे समय पत्रिका
सर्वथा निःशुल्क आपके
घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय
में सहायक, उंगली में जड़वाकर
पहिनने योग्य आकर्षक
सूर्यकान्त उपरत्न निःशुल्क

समस्त क्रियाओं में
सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग
उपहार स्वरूप

प्रथम साधना शिविर में,
अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट
(धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा
सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क)

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य
घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद
गुरुदेव का आकर्षक चित्र
आशीर्वाद स्वरूप

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की
प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र
आशीर्वाद स्वरूप

सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो
आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी
से शुद्ध, चैतन्य कर देगा।
सर्वथा मुफ्त
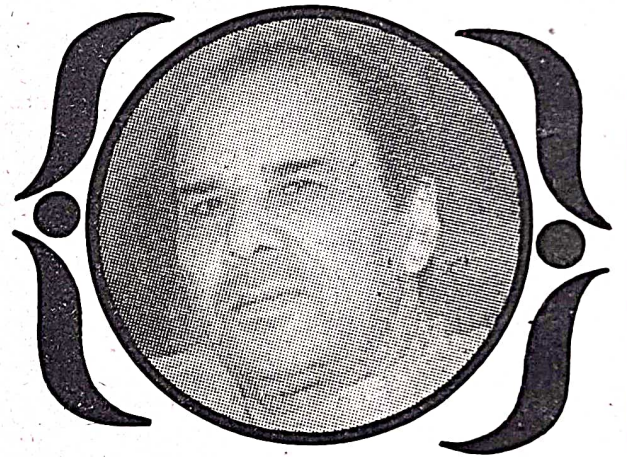
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता सुखद जीवन का आधार है

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे। केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१८६७००

रूपोज्ज्वला अप्सरा

अप्सरा शब्द सुनते ही हम कल्पनाओं के लोक में विचरण करने लगते हैं, हमारे मानस-पटल में विभिन्न प्रकार के विचार उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं, जो हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं, कि कैसा होता होगा वह अप्रतिम सौन्दर्य?

शायद ऐसा, कि जिसे देखकर व्यक्ति ठगा-सा रह जाए . . . . अद्भुत व आश्चर्यजनक सौन्दर्य!

या फिर ऐसा, जिसे देखकर दिल धड़कना वन्द कर दे, और सीने में सांसें अटकी रह जाएं. . . ऐसा अनूठा सौन्दर्य! तो फिर क्यों न हो किसी भी मन में ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य को देख लेने की इच्छा! फिर क्यों न हो उसे पा लेने तथा अपने में समेट लेने की इच्छा!

हम कल्पना करने लगते हैं उस अद्वितीय सौन्दर्य की, उस सौन्दर्य की, जिसे देखने के लिए हमारी आंखें हर पल, हर क्षण लालायित रहती हैं, जिस विचित्र और अचरज भरे सौन्दर्य का साक्षात्कार हमारे देवताओं ने भी किया है। ऋषियों ने उस नारी सौन्दर्य को अपनी कल्पना-शक्ति और उनके अन्तर्मन से प्रस्फुटित आनन्द, सौन्दर्य के उद्वेग से आपूरित होकर अपने मन की अभिव्यक्ति को अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर साधारण मानव केवल यह कल्पना कर सकता है. . . ऐसा होता होगा वह सौन्दर्य, जिसे देख हमारे पूर्वज, ऋषि, देवता और कवि भी मंत्रमुग्ध हो गए, खो बैठे अपने-आप को।
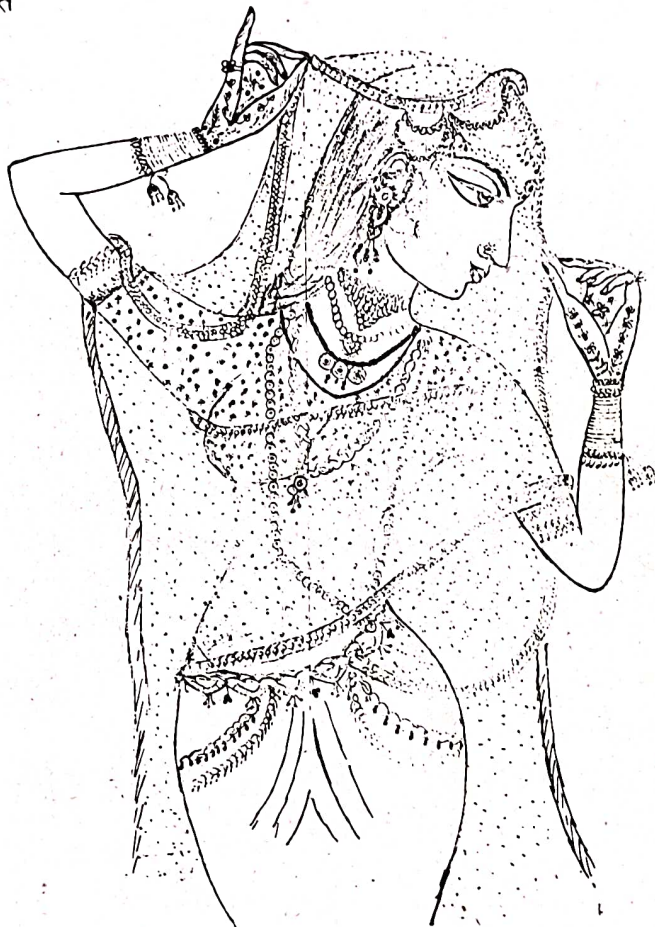
किसने गढ़ा होगा यह सौन्दर्य, किन क्षणों में. . . और कैसे? कौन होगा वह शिल्पकार, और कैसे वह संयत रह गया होगा, इतनी मादकता को एक ही देह में भरते हुए, उसमें प्राण डालते हुए . . . ऐसा सौन्दर्य तो केवल कवियों की पंक्तियों में या फिर शिल्पकारों के हाथों में छिपे जादू से ही गढ़ा जा सकता है।

और ऐसे ही रूप के भार से लदा सौन्दर्य है, उस ''रूपोज्ज्वला अप्सरा'' का, जिसके एक-एक अंग-प्रत्यंग को इसी प्रकार गढ़ा गया है, जो ऐसे ही रूप सौन्दर्य का खजाना है, जिसकी तुलना अन्य अप्सराओं से भी नहीं की जा सकती, जो अप्सराएं पूर्णरूप से सौन्दर्य का आधार मानी गई हैं।

बिना सौन्दर्य के तो नारी शरीर की कल्पना ही नहीं की जा सकती, या यूं कहें, कि नारी शरीर के बिना सौन्दर्य कहीं खिल ही नहीं सकता, यों तो प्रकृति-सौन्दर्य, पुरुष-सौन्दर्य भी होते हैं, लेकिन सौन्दर्य जहां खिल उठता है, वह नारी ही होती है।

भारतीय शास्त्रों में सौन्दर्य को जीवन का उल्लास और उत्साह माना गया है, यदि जीवन में सौन्दर्य नहीं है तो वह जीवन नीरस और बेजान हो जाता है। इसका कारण यह है कि हम सौन्दर्य की परिभाषा ही भूल चुके हैं, हम अपने जीवन में हंसना, मुस्कराना ही भूल चुके हैं। हम धन के पीछे भागते हुए एक प्रकार से अर्थ

लोभी बन गये, जिसकी वजह से जीवन की अन्य वृत्तियां लुप्त सी हो गई हैं। ठीक इसी के विपरीत जैसा कि मैंने कहा, कि **यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखें तो हमारे पूर्वजों ने, उन ऋषियों और देवताओं ने सौन्दर्य को अपने जीवन में एक विशिष्ट स्थान दिया और उन अप्सराओं की साधनाएं सम्पन्न कीं, जिनके द्वारा वे सौन्दर्यमयी, तेजस्वी, पूर्ण सम्पन्न बन सके, अपने जीवन की उन न्यूनताओं को समाप्त कर सकें, जिनके कारण उनका व्यक्तित्व अधूरा सा प्रतीत होता था।**

उन अप्सराओं को सिद्ध करने की पीछे उन पूर्वजों का चिंतन यह नहीं था कि वे अपने सामने एक नारी शरीर उपस्थित करके अपनी वासना को, कामोत्तेजना को शांत कर सकें, अपितु इनके माध्यम से उन्होंने जीवन में ऐश्वर्य, धन-धान्य पूर्ण सौन्दर्य आदि प्राप्त कर अपने नीरस और उस सौन्दर्य के प्रतिमान को समाज के सामने रखा, जिस सौन्दर्य का अर्थ ही पूर्णता व श्रेष्ठता देना है।

अप्सरा और सौन्दर्य दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं, और किसी भी अप्सरा के बारे में जानने के लिए हमें सबसे पहले उसके अपूर्व सौन्दर्य को समझना आवश्यक है।

अप्सरा का आज जो भी अर्थ लगाया जाता हो, भले ही उसको लेकर छिछला और कामुक चिन्तन किया जाता हो, परन्तु यह अपने-आप में एक सत्य है कि नारी के साहचर्य के बिना कोई भी कला या कोई भी कलात्मक शैली अपूर्ण ही है चाहे वह नृत्य की बात हो या गायन की, या फिर मधुर वार्तालाप की।

और सभी देवताओं व ऋषियों जैसे- वशिष्ठ, विश्वामित्र, इन्द्र आदि ने इस सौन्दर्य को अपने जीवन में निवास दिया, एक महत्वपूर्ण स्थान दिया, जिससे साधारण मानव भी उर्वशी, मेनका, रम्भा आदि के सौन्दर्य का साक्षात्कार कर पाया। उन देवताओं व ऋषियों ने हमारे जीवन में उस साधनात्मक चिंतन को स्पष्ट कर हमें पूर्णता का मार्ग दिखलाया, जो जीवन में रस भर दे, सौन्दर्य भर दे, और यह रस और सौन्दर्य गर किसी के जीवन में प्राप्त हो जाए, तो वह जीवन सफल, श्रेष्ठ और अद्वितीय कहलाता है।

उन देवताओं ने उन विशिष्ट साधनाओं को सम्पन्न कर उनका नख से शिख तक पूर्ण वर्णन कर समाज को उस रहस्यमयी और अद्भुत सौन्दर्य से परिचित कराया जो उससे अज्ञात था, अछूता था, अनभिज्ञ था।

जीवन में रसमय होने की, सौन्दर्य और रूप के क्षणों को चुरा लेने की तो सैकड़ों अदाएं हैं, कहीं किसी एक अदा से बंधी है कोई अप्सरा, तो कहीं किसी दूसरी अदा से कोई दूसरी।

और इसी सौन्दर्य का एक और प्रतिविम्ब हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है उस ''रूपोज्ज्वला अप्सरा'' के माध्यम से जिसमें केवल लुभा लेने के लिए एक अदा ही नहीं है अपितु पूर्ण सौन्दर्य का लबालब भरा जाम है, जिसे देखकर ही कोई व्यक्ति स्तब्ध और निष्प्राण हो जाए और व्यक्ति ही नहीं देवता भी जिसके सौन्दर्य को देखकर निष्प्राण से हो गए।

हां! ऐसा ही है वह अप्रतिम और अनूठा सौन्दर्य, प्रेम और आनन्द से लबालब भरा हुआ जो किसी को भी अपने अंग-प्रत्यंगों की गठन से बांध ले, स्तम्भित कर दे उसे।

इस सौन्दर्य को देखकर कौन नहीं अपने-आप को भुला बैठेगा। रूप, रंग, यौवन और मादकता की तो कई झलकियां देखी होंगी आपने अपने जीवन में, लेकिन जो सौन्दर्य आंखों से लेकर दिल तक एक अक्स बनकर उतर जाए उसी का नाम है रूपोज्ज्वला अप्सरा।

ऐसा अप्रतिम और अनूठा सौन्दर्य जो खींच ले चुम्बक की तरह अपनी ओर, सौन्दर्य से भी अधिक मादकता और मन को लुभा लेने की कला अपने-आप में समाये देवांगना की एक अपूर्व गाथा, जिससे हम अभी तक अपरिचित थे, एक अप्रतिम सुन्दरी जिसे देखकर रग-रग में तूफान मचल उठे।

''रूपोज्ज्वला अप्सरा'' जैसा इसका नाम है वैसा इसका रूप सौन्दर्य भी है, जो एक निर्झर झरने की तरह एक अबाध गति से बह रहा हो। व्यक्ति को या देवता को पहली ही बार में बेसुध कर देने वाला सौन्दर्य, जो केवल और केवल मात्र रूपोज्ज्वला अप्सरा में ही है।

हकीकत में देखा जाए तो पूरी प्रकृति को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है उसे अप्सरा कहते हैं, और यदि उस प्रकृति पर रूप का झरना बहने लग जाए तो उसे रूपोज्ज्वला अप्सरा कहते हैं।

रूपोज्ज्वला अप्सरा तो सम्पूर्ण यौवन को शरीर में उतार देने की स्वामिनी है। सुन्दर, पतला, छरहरा शरीर मानो पुष्प की पंखुड़ियों को एकत्र करके बनाया गया हो, जिन गुलाब की कोमल व नरम पंखुड़ियों पर अभी तक ओस की एक बूंद भी ढलकी न हो, जैसे उन्हें बिना मसले ही कोमलता से बांधकर एक नारी शरीर तैयार कर दिया गया हो, और उसमें से सुगंध प्रवहित होकर सारे शरीर से होती हुई असमय बूढ़े पड़ गए मन में जवानी के भीगे-भीगे दिनों की पुनः याद दिला जाए।

अण्डाकार चेहरा, उस पर झील सी गहरी आंखें,जो कभी -कभी उठकर देखें तो यूं लगे कि ठहरी झील में किसी ने शरारत से कोई कंकड़ फेंक कर, थरथराहट पैदा कर दी हो, निर्दोष मुखाकृति, **यौवन की गुलाबी आभा से भरी सुतवां नाक , दो गुलाब की पंखुड़ियों को एक-दूसरे पर रखे हुए लालिमा युक्त अधर जिन्हें देखकर कोई भी होश में न रह पाये, जिसे देखते ही चूम लेने को जी चाहे, चिबुक ऐसा जिसमें छोटा-सा गड्ढा पड़ा हो और कामदेव उसमें कूदने को आतुर हो रहे हों,** दन्त पंक्ति छोटी, सुन्दर व स्वच्छ और काले घने बाल तो ऐसे जैसे कोई झरना सा फूटा हो और नितम्बों पर से लहराकर नीचे उतर गया हो,

स्वस्थ और पुष्ट गर्दन जिसमें पड़ा हो कोई पतला सा सूत्र, वक्षस्थल ऐसा समुन्नत जिसे देखते ही व्यक्ति बेसुध ठगा सा रह जाए, जो व्यक्ति की कल्पना से भी परे हो, जैसे उसके बोझ से सारा शरीर लचक रहा हो, गुलाब की डालियों की तरह मचलता हुआ पीपल के पत्ते की तरह पेट, मुट्ठी में आजाने लायक कमर, हस्ती-शुण्ड की तरह पुष्ट व सुन्दर जंघाएं जो किसी भी हृदय को उत्तेजित कर दे, उभरे नितम्ब, और पैर देखकर तो ऐसा लगे कि जैसे दो कमल, धरती पर मैले न हो जाएं।

इन सभी अंग-प्रत्यंगों की रेशम जैसी कोमल गढ़न में ढला हुआ हल्का मांसल बदन, जिससे बिना कहे ही निमंत्रण की ध्वनि आ रही है. . . ऐसे ही सम्पूर्ण यौवन को शरीर में उतार देने की स्वामिनी है "रूपोज्ज्वला अप्सरा"।

सौन्दर्य के समुद्र से उत्पन्न वह श्रेष्ठ रत्न जिसके समान दूसरा कोई रत्न उत्पन्न ही नहीं हो सका, और यह सच ही तो है, ऐसे रत्न क्या बार-बार गढ़े जाते हैं. . . नहीं, यह तो कभी-कभी प्रकृति के खजाने से अनायास प्राप्त हो जाने वाली वस्तु है, और प्रकृति के इस खजाने से, सौन्दर्य के इस खजाने से पूर्ण सौन्दर्य केवल रूपोज्ज्वला अप्सरा का ही है।

किसी भी पूर्णिमा को आप इस रूपोज्ज्वला अप्सरा साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में ऐसे ही लबालब भरे सौन्दर्य को अपने शरीर में समाहित कर सकता है। "अप्सरा"साधना को सिद्ध करने के पीछे कोई उसके अंग-प्रत्यंग या शारीरिक कामोत्तेजक चिंतन नहीं है वरन् ऐसा ही पूर्ण सौन्दर्य, रस, खुशबू उस साधक के जीवन में भी समाहित हो सके, जो उसके भीतर उसके वृद्ध विचारों को यौवनावस्था में बदल कर उमंग, जोश और उत्साह पूर्ण सौन्दर्य का समावेश कर दे।

जिसके माध्यम से उसे जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख- सम्पत्ति, वैभव, यश, श्रेष्ठता, पूर्णता प्राप्त हो सके।

इस पूर्णता को देने वाली है यह "रूपोज्ज्वला अप्सरा सिद्धि साधना" जो अत्यंत ही दुर्लभ और गोपनीय है। इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति के अन्दर स्वतः ही कायाकल्प की प्रक्रिया आरम्भ होने लगती है।

इस रूपोज्ज्वला अप्सरा साधना को सिद्ध करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनैतिक नहीं है। यह अपने-आप में अत्यंत गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, जिसकी जानकारी हमें एक साधु से की गई वार्ता के दौरान मिली, उस साधु के माध्यम से हम आपके सामने यह दुर्लभ साधना स्पष्ट कर पाए हैं, जो जीवन की श्रेष्ठतम और अद्वितीय साधना है।

जिस दुर्लभ अप्सरा साधना का वर्णन उस साधु को काठमाण्डू में स्थित एक ग्रन्थालय से प्राप्त पुस्तक के माध्यम से हुआ, जिस दुर्लभ साधना से हम सब अभी तक वंचित थे, जो पूर्णता ही नहीं, अपितु सम्पूर्णता देने वाली साधना है।

इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति निश्चिंत और प्रसन्नचित्त बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप्त नहीं होता, इस रूपोज्ज्वला साधना के माध्यम से उसे मनचाहा स्वर्ण, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण और अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते हैं, यही नहीं अपितु इस अप्सरा साधना को सिद्ध करने पर साधक इसे जो भी आज्ञा देता है वह उस आज्ञा का तुरन्त पालन करती है, और इस प्रकार साधक अपनी आवश्यक और महत्वपूर्ण सभी मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है।

वैसे तो यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है, किन्तु पूर्णिमा के दिन इस साधना को सम्पन्न करना विशेष लाभप्रद होगा, क्योंकि हर साधना को सम्पन्न करने के लिए शास्त्रों में एक विशेष समय निर्धारित किया जाता है जिससे कि साधक को उस साधना में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो सके।

साधना विधि

पूर्णिमा की रात्रि में किसी भी समय साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। साधक को चाहिए कि वह अत्यंत ही सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र पहिन कर साधना स्थल पर बैठ जाए, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्रों को धारण किया जा सकता है जो सुन्दर और आकर्षक लगें।

इस साधना में आसन, दिशा आदि का इतना महत्व नहीं है, जितना कि व्यक्ति के उत्साह, उमंग, सुमधुर और कामनाओं से भरे मन का है। फिर साधक अपने सामने गुलाब की दो मालाएं रखे, उसमें से एक माला वह स्वयं धारण कर ले, फिर एक विशेष प्रकार से मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त, **चैतन्य रूपोज्ज्वला अप्सरा यंत्र** को साधक पूजा स्थान में स्थापित कर दे, और दूसरी सुगन्धित पुष्प की माला इसके सामने रख दे, सामान्य अथवा प्रयुक्त किया हुआ यंत्र इस साधना में लाभप्रद सिद्ध नहीं होता, फिर इत्र का दीपक उसके सामने जला दे, जो सम्पूर्ण साधना में जलता ही रहे। पूजा में साधक वस्त्रों पर इत्र छिड़क कर बैठें, जिससे सारा वातावरण सुगन्धित हो सके। इसके पश्चात् वह मंत्र जप आरम्भ कर दे।

मंत्र

ॐ श्रीं रूपोज्ज्वला वश्य मानाय श्रीं फट्

इस मंत्र का २१ माला जप करना होता है। यह मंत्र-जप **अप्सरा माला** से सम्पन्न किया जाता है।

यह साधना विश्व की दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण साधना है। अगर व्यक्ति को अपने जीवन में वह सभी कुछ पाना है जिसे श्रेष्ठता कहते हैं, दिव्यता कहते हैं, सम्पूर्णता कहते हैं तो वह मात्र रूपोज्ज्वला अप्सरा सिद्धि साधना के माध्यम से ही सम्भव है।

यह साधना मादक, प्रवीण, वरदायक, शक्तियुक्त, अद्भुत सम्मोहनकारी प्रभाव से सिद्ध साधक को पूर्णता देने में सक्षम है।

❋

मेष - नवीन कारोबार तथा अन्य आय के स्रोतों में धन क्षमता से अधिक न लगाएं। इस माह ग्रहों की चाल प्रतिकूल रहेगी, मानसिक तनाव एवं द्वंद्वात्मक स्थिति रहेगी, परिवार में मेलजोल बनाए रखें, तथा किसी भी प्रकार के वाद-विवाद से सर्वथा दूर रहें, आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग। यात्रा स्थगित करनी पड़ सकती है, वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। संतान की ओर से सुखद स्थिति रहेगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। जमीन-जायदाद के मामलों में रुचि लें, शत्रु विश्वासघात कर सकता है। नवीन सम्पर्क भविष्य में फलप्रद सिद्ध होंगे। सप्ताह का प्रारम्भ हल्की बीमारी के साथ होगा। अज्ञात व्यक्ति से मित्रता न बढ़ाएं, सोच-समझ कर निर्णय लें।

वृषभ - सप्ताह का आरम्भ अनुकूल होगा, फिर भी गलत कार्यों में रुचि न लें। नौकरीपेशा व्यक्ति राज्य पक्ष की ओर से सावधानी बरतें, यात्रा अनुकूल एवं आनन्दप्रद सिद्ध होगी, माह की १०, १६, २२, २६, २९ तारीख आपके लिए विशेष अनुकूल सिद्ध होंगी। पत्नी पक्ष के सम्बन्धियों से विशेष लाभ प्राप्त होगा। मित्रों से सहयोग न लें, शत्रु पक्ष भयभीत करने का प्रयास करेगा। संतान की ओर से कोई चिन्ताजनक समाचार मिलना सम्भव। पारिवारिक पक्षों के प्रति उदासीनता न बरतें। ८, १२, २०, २७ तारीख अनुकूल नहीं कही जा सकतीं। मध्यम वर्गीय परिवार राहत अनुभव करेंगे।

मिथुन - पुराने रोग उभर कर आयेंगे, सावधानी बरतें। अपने मन की बात किसी को न बताएं, विश्वासघात की सम्भावनाएं प्रबल हैं। जोखिम के कार्य करने वालों को लाभ की स्थिति रहेगी। जहां मनोरंजन व मनोविनोद के व्यवसाय से जुड़े व्यक्ति विशेष लाभ प्राप्त करेंगे, वहीं कला जगत से जुड़े व्यक्ति मानसिक तनाव की स्थिति में रहेंगे। किसी पवित्र एवं शुभ स्थान पर भ्रमण के लिए प्रस्थान प्रसन्नतादायक रहेगा। पारिवारिक स्थिति संभाल कर चलें, जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा, पुराने सम्बन्ध भी लाभप्रद सिद्ध होंगे। आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग निर्मित होंगे। जमीन-जायदाद के मामलों में सुधार होगा। नवीन क्रय-विक्रय का योग प्रबल, संचित धन को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करने पर लाभ होगा, कोई पुराना ऋणभार उतारना पड़ेगा। इस माह में ९, ११, १४, २५, २७ तारीख विशेष अनुकूल रहेंगी।

कर्क - टोने-टोटके से अपना बचाव करें, अचल सम्पत्ति पर धन लगाना ठीक नहीं, रुका हुआ धन वसूल करें। सम्बन्धियों से आशा रखना व्यर्थ, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा तथा पत्नी से वैचारिकता बनाये रखें। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। ८, ११, २०, १७, २२, २६ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। संतान की ओर से अनुकूल समाचार प्राप्त होगा। किसी नवीन वाहन के क्रय-विक्रय का योग बनेगा। सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। जोखिम भरे कार्य करने वाले कोई गलत कार्य न करें। समाज में प्रतिष्ठा मिलने से मन में प्रफुल्लता रहेगी।

सिंह - मनोवांछित कार्य न होने से मानसिक चिंता होगी तथा परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य के प्रति भी मानसिक तनाव बना रहेगा। कोई दुखद समाचार आने से यात्रा सम्भव। आर्थिक लाभ एवं व्यय की स्थिति बनेगी। आप जितना परिश्रम करेंगे, उतना ही लाभ अर्जित कर पायेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि मानसिक शांति प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। ५, १०, १६, २४, ३० तारीख आपके लिए प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल सिद्ध होगी। रोजगार प्राप्ति के अवसर बढ़ेंगे। जमीन-जाय़दाद के मामलों की उपेक्षा न करें। अधिकारी वर्ग से मनोनुकूल लाभ सम्भव होगा। यात्रा योग सामान्य ही रहेगा, जिस कार्य में हाथ डालें, उसें कुशलता पूर्वक सम्पन्न करें। प्रेम-प्रसंग में सावधानी बरतें। आकस्मिक धन-प्राप्ति की सम्भावनाएं कमजोर हैं, माह के अंत में संयम बरतें। यात्रा में सावधानी लाभदायक सिद्ध होगी।

कन्या - व्यापारिक दृष्टि से ९ तारीख अनुकूल नहीं रहेगी, जल्दीबाजी में निर्णय न लें। स्वयं की लापरवाही से बनता काम उलझ जायेगा, रुका हुआ पैसा आयेगा, इसके साथ ही व्यापार में वृद्धि होगी। घरेलू समस्याओं से मन में उद्विग्नता रहेगी, घर के किसी सदस्य को लेकर तनाव रहेगा। राज्य पक्ष आपके प्रतिकूल रहेगा, वहीं १६ तारीख के बाद स्थिति में सुधार होगा। ६, १४, १०, २३ तारीख आपके लिए अनुकूल रहेगी। प्रेम-प्रसंगों को लेकर यह सप्ताह आपके लिए अनुकूल ही रहेगा। रेल यात्रा अधिक सुखद रहेगी। जोखिम के कार्य करने वाले व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे।

तुला - अतिशीघ्रता से लिए गए निर्णय आर्थिक हानि पहुंचायेंगे। व्यापारिक कार्यों में लापरवाही न बरतें। इस माह में ११, २६, २९ तारीख व्यर्थ की भाग-दौड़ एवं खिन्नता में व्यतीत होगी, वहीं ६, १६, २४, २८ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्रदान करने वाली सिद्ध होगी। अपने ही प्रयासों से घरेलू समस्याओं का समाधान होगा। संतान पक्ष से अनुकूलता रहेगी, पत्नी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, संयम बरतें। व्यापारिक कार्यों को लेकर यात्रा फलप्रद रहेगी, लघु स्तर के व्यक्ति आर्थिक स्थिति में सुधार प्राप्त करेंगे, आकस्मिक धन-प्राप्ति की सम्भावनाएं प्रबल होंगी। नए अनुबन्ध भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे।

धनु - अपने ही प्रयासों से पारिवारिक समस्या का समाधान होगा। कन्या पक्ष की ओर से प्रतिकूलताएं झेलनी पड़ सकती हैं, स्त्री सुख में वृद्धि होगी। कला जगत के व्यक्ति मनोविनोद की स्थिति में रहेंगे। समय अनुकूल है, मांगलिक कार्य सम्पन्न होने के योग, किसी धार्मिक स्थान की यात्रा, धार्मिक कार्यों में व्यस्तता सम्भव। आपकी सहायता से किसी का रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। विश्वासपात्र से सावधानी बरतें। आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग बनेगा। ७, १५, १६, २३, २६ तारीख आपके लिए अनुकूल कही जा सकती है। यह माह कला जगत के व्यक्तियों के लिए एवं प्रेम-प्रसंगों के लिए अनुकूल रहेगा।

कुंभ - इस माह की ८, १७, २१, २५ तारीख विशेष अनुकूलता प्रदान करने वाली रहेगी। व्यापार में विस्तार होने से आर्थिक स्थिति में अनुकूलता रहेगी। प्रेम-प्रसंग में उत्साह देखने को मिलेगा। मित्रों से गलतफहमी बढ़ने के कारण वाद-विवाद हो सकता है। अनावश्यक कार्यों में व्यय भार बढ़ेगा। आध्यात्मिकता के प्रति रुचि में विस्तार होगा। २३ तारीख चिन्ता एवं तनावों के साथ व्यतीत होगी। समय पर काम होगा, जमीन-जायदाद के मामलों में ध्यान दें। संतान की ओर से अनुकूल समाचार मिलेंगे, मित्रों में समय व्यर्थ न गवायें, अपने काम में ध्यान दें, जरा सी भी चूक बहुत बड़ी हानि का कारण बन सकती है।

वृश्चिक - पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। आकस्मिक शुभ समाचार प्राप्त होने से घर में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। आपके कार्यों में प्रतिस्पर्धा होगी, समझदारी से काम करें। जमीन-जायदाद के मामले उलझेंगे, नवीन कार्यों की शुरुआत के लिए समय उत्तम है, सोच-समझ कर निर्णय लें, जल्दीबाजी में हानि की सम्भावना प्रबल। इस माह में ७, ९, १८, २७ तारीख विशेष अनुकूल रहेंगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। जीवन साथी से मतभेद की स्थिति में सावधानी बरतें। प्रेम-प्रसंगों के प्रति सावधानी बरतें।

मकर - सोच-समझ कर योजना बनाएं तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्यों में आप सफलता प्राप्त करेंगे। नवीन कार्यों के लिए समय उत्तम है। क्रय-विक्रय में लाभ होगा, नौकरीपेशा व्यक्ति तरक्की प्राप्त करेंगे, आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आयेगी। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें, घरेलू कार्यों की उपेक्षा तनाव का कारण बनेगी। संतान की ओर से स्थिति दुःखद रहेगी, मित्र वर्ग साथ छोड़ेंगे, वाद-विवाद की स्थिति बनेगी संयम से काम लें। शत्रु पक्ष के व्यक्ति विश्वासघात कर सकते हैं सावधानी बरतें। यात्रा में अनुकूलता रहेगी।

मीन - सप्ताह की शुरुआत सामान्य ही होगी। किसी नवीन कार्य को प्रारम्भ करने का योग कमजोर है। अधिकारियों से मतभेद की स्थिति, शांति बरतें। जमीन-जायदाद के मामले सुलझेंगे, किसी स्वजन की सहायता से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। परिवार में अशांति का वातावरण बना रहेगा, स्वयं के प्रयासों से समस्याओं में सुधार होगा। विश्वासघात होने की स्थिति से बचने के लिए सावधानी बरतें। किसी वाहन के क्रय-विक्रय का योग प्रबल, अधिकारियों से सम्बन्धों में मधुरता आयेगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०६.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ४	श्री गणेश चतुर्थी
०७.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ५	नागपंचमी
१३.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ११	मोक्षदा एकादशी
१५.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १३	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
१६.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १४	त्रिपुर भैरवी साधना दिवस
१७.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १५	सत्य व्रत पूर्णिमा
१८.१२.९४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १५	अन्नपूर्णा जयन्ती
२१.१२.९४	पौष कृष्ण पक्ष ३	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२६.१२.९४	पौष कृष्ण पक्ष ८	कालाष्टमी
२८.१२.९४	पौष कृष्ण पक्ष ११	सफला एकादशी
०१.०१.९५	पौष कृष्ण अमावस्या	नूतन वर्षारम्भ
०९.०१.९५	पौष शुक्ल पक्ष ८	दुर्गा अष्टमी
१२.०१.९५	पौष शुक्ल पक्ष ११	पुत्रदा एकादशी
१३.०१.९५	पौष शुक्ल पक्ष १२	द्वादशी लोहड़ी उत्सव
१४.०१.९५	पौष शुक्ल पक्ष १३	मकर संक्रांति
१६.०१.९५	पौष शुक्ल पूर्णिमा	पौष पूर्णिमा
२०.०१.९५	माघ कृष्ण पक्ष ४	संकष्ट गणेश चतुर्थी
२४.०१.९५	माघ कृष्ण पक्ष ८	कालाष्टमी
२७.०१.९५	माघ कृष्ण पक्ष ११	षट्तिला एकादशी
३०.०१.९५	माघ कृष्ण अमावस्या	सोमवती अमावस्या
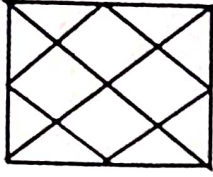
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

रूपा कुमारी, पटना
प्रश्न – **मेरा विवाह कब तक होगा?**
उत्तर – अगले वर्ष के पूर्वार्द्ध में।

राजकिशोर गुप्ता, सिंहभूम
प्रश्न – **मैं नौकरी करूं या व्यवसाय?**
उत्तर – नौकरी।

ओम प्रकाश प्रसाद धनबाद
प्रश्न – **मुझे नौकरी कहां मिलेगी?**
उत्तर – नौकरी प्राप्ति की सम्भावनाएं क्षीण है। स्व व्यवसाय लाभप्रद रहेगा।

जगदीश नारायण चौबे, ललितपुर
प्रश्न – **आर्थिक समस्याओं का निदान बताइए।**
उत्तर – अष्टलक्ष्मी साधना।

संजीव कुमार, अहमदगढ़ (पंजाब)
प्रश्न – **साझेदारी के व्यवसाय से कब अलग होऊं?**
उत्तर – अलगाव लाभप्रद नहीं रहेगा। फिर भी दिसम्बर ९४ के बाद ही अलग हों।

भगवानदीन पाल, फतेहपुर
प्रश्न – **वाहन सुख कब तक?**
उत्तर – वाहन सुख योग क्षीण ही है।

राजेश कुमार पुरा, खरगोन
प्रश्न – **तलाक कब तक?**
उत्तर – सुलह का प्रयास करें। तलाक प्रक्रिया में अत्यधिक हानि होगी।

देशराज, दिल्ली
प्रश्न – **कोई भी कार्य अधूरा क्यों होता है?**
उत्तर – पूर्वजन्म कृत दोषों के कारण।

चन्द्रभान सिंह निरंजन, हमीरपुर
प्रश्न – **भूगर्भ सिद्धि कब तक?**
उत्तर – नियमित कुबेर साधना करने पर आठ माह के भीतर संभावना प्रबल।

विकास पिढ़िहा, शाजहांपुर
प्रश्न – **मैं भविष्य में डॉक्टर बनूंगा या डी० एफ० ओ०?**
उत्तर – डी० एफ० ओ० हेतु ही प्रयास करें।

मिथुन चक्रवर्ती, फतेहाबाद
प्रश्न – **मेरा शैक्षिक भविष्य कैसा है?**
उत्तर – उज्ज्वल।

कुशलपाल सिहं कुशवाहा, मैनपुरी
प्रश्न – **मुझे छूटी हुई नौकरी कैसे मिलेगी?**
उत्तर – बगलामुखी साधना लाभप्रद सिद्ध होगी।

कमल किशोर जायसवाल, चौबीस परगना
प्रश्न – **नौकरी कब तक मिलेगी?**
उत्तर – वर्तमान में स्थिति संघर्ष पूर्ण ही बनी रहेगी।

किशोर महेन्द्र पंडया, पुणे
प्रश्न – **अप्सरा साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर – हां। विशेष लाभ हेतु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा लें।

दुर्गा प्रसाद जायसवाल, कलकत्ता
प्रश्न – **आर्थिक अवस्था ठीक नहीं।**
उत्तर – तांत्रिक प्रयोगों के कारण स्थिति ठीक नहीं, छिन्नमस्ता प्रयोग करें।

विवेक श्रीवास्तव, दुर्ग
प्रश्न – **क्या मैं अपना स्थानान्तरण करवा लूं?**
उत्तर – नहीं। लाभप्रद नहीं रहेगा।

पांन्नगिपल्लि वी० राव, राजनांदगांव
प्रश्न – **मेरा प्रमोशन कब तक होगा?**
उत्तर – प्रबल राज्य बाधा दोष के कारण सम्भव नहीं, त्रिपुर भैरवी प्रयोग करें।

सूर्यकांत सी० मानाले, उस्मानाबाद
प्रश्न – **मेरा व्यवसाय बंद है क्या करूं?**
उत्तर – तंत्र बाधा निवारण प्रयोग।

हरिनारायण शुक्ल, सुल्तानपुर
प्रश्न – **ज्योतिष, चिकित्सा, तंत्र में से किस क्षेत्र में रुचि लूं?**
उत्तर – ज्योतिष के क्षेत्र में।

प्रवीण मिश्रा, सप्तरी (नेपाल)
प्रश्न – **मुझे संतान सुख है?**
उत्तर – विलम्ब से किन्तु है अवश्य।

अशोक कुमार जायसवाल, बलिया
प्रश्न – **नौकरी करूं या व्यवसाय?**
उत्तर – व्यवसाय।

बालकृष्ण, सागर
प्रश्न – **विवाह कब तक?**
उत्तर – सितम्बर ९५ तक सम्भावनाएं प्रबल।

राजेन्द्र डाणी, अजमेर
प्रश्न – **स्वयं का मकान कब तक खरीद सकूंगा?**
उत्तर – ३२ वां वर्ष इस दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ सिद्ध होगा।

उमेश कुमार जायसवाल, इलाहाबाद
प्रश्न – **किस यक्षिणी की साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर – स्वर्ण प्रभा यक्षिणी की साधना में।

रामचन्द देवांगन, रायपुर
प्रश्न – **मेरी शादी कब तक होगी?**
उत्तर – २७ वें वर्ष में।

डॉ० अभिमन्यु कुमार वर्मा, रायपुर
प्रश्न – **व्यवसाय में तरक्की कब तक?**
उत्तर – स्व प्रयासों से सम्भव नहीं। महालक्ष्मी दीक्षा लें।

अजय कुमार, मण्डी
प्रश्न – **मेरे भाग्य में पढ़ाई है अथवा नहीं?**
उत्तर – उन्नति हेतु जैन तंत्र से सरस्वती साधना करें।

खोकन सिंह, सिंहभूम
प्रश्न – **नौकरी कब तक लगेगी?**
उत्तर – अड़चनें बनी ही रहेंगी।
प्रश्न – **हमारी किस्मत में भैया है अथवा नहीं?**
उत्तर – आप अपने मां-बाप के द्वारा पुत्रेष्टि प्रयोग सम्पन्न करायें।

दलजीत कौर, पंजाब
प्रश्न – **विवाह कब होगा?**
उत्तर – निकट भविष्य में विवाह का योग निर्मित होगा।

पूनम रानी, रोहतक
प्रश्न – **हमारा अच्छा मकान तथा व्यापार कब होगा?**
उत्तर – सम्भावनाएं क्षीण हैं, इसलिए आप भुवनेश्वरी साधना करें।

निरंजन पोद्दार, भागलपुर, बिहार
प्रश्न – **सरकारी नौकरी कब मिलेगी?**
उत्तर – सरकारी नौकरी की सम्भावनाएं न्यून।

कूपन क्रमांक :- १२३ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४
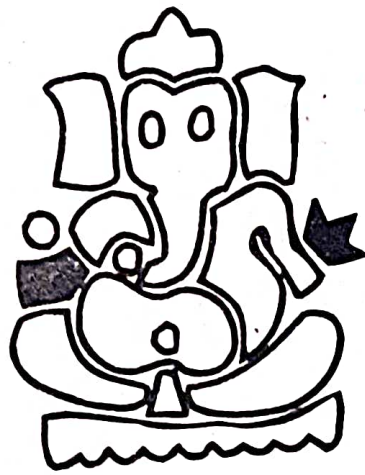
भगवान गणपति का वह विशिष्ट स्वरूप जो "विघ्नहर्ता" के रूप में इस युग में प्रचलित है, जो भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले हैं, जो शिव और शक्ति के गुणों का साकार रूप हैं, और जो सद्गृहस्थ व योगमय दोनों ही जीवन को प्रस्तुत करने वाले हैं, ऐसे देव की उपासना व साधना जो देवों के अधिपति हैं . . . श्रेयस्कर है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति हमेशा-हमेशा के लिए दरिद्रता से छुटकारा पा सकता है।
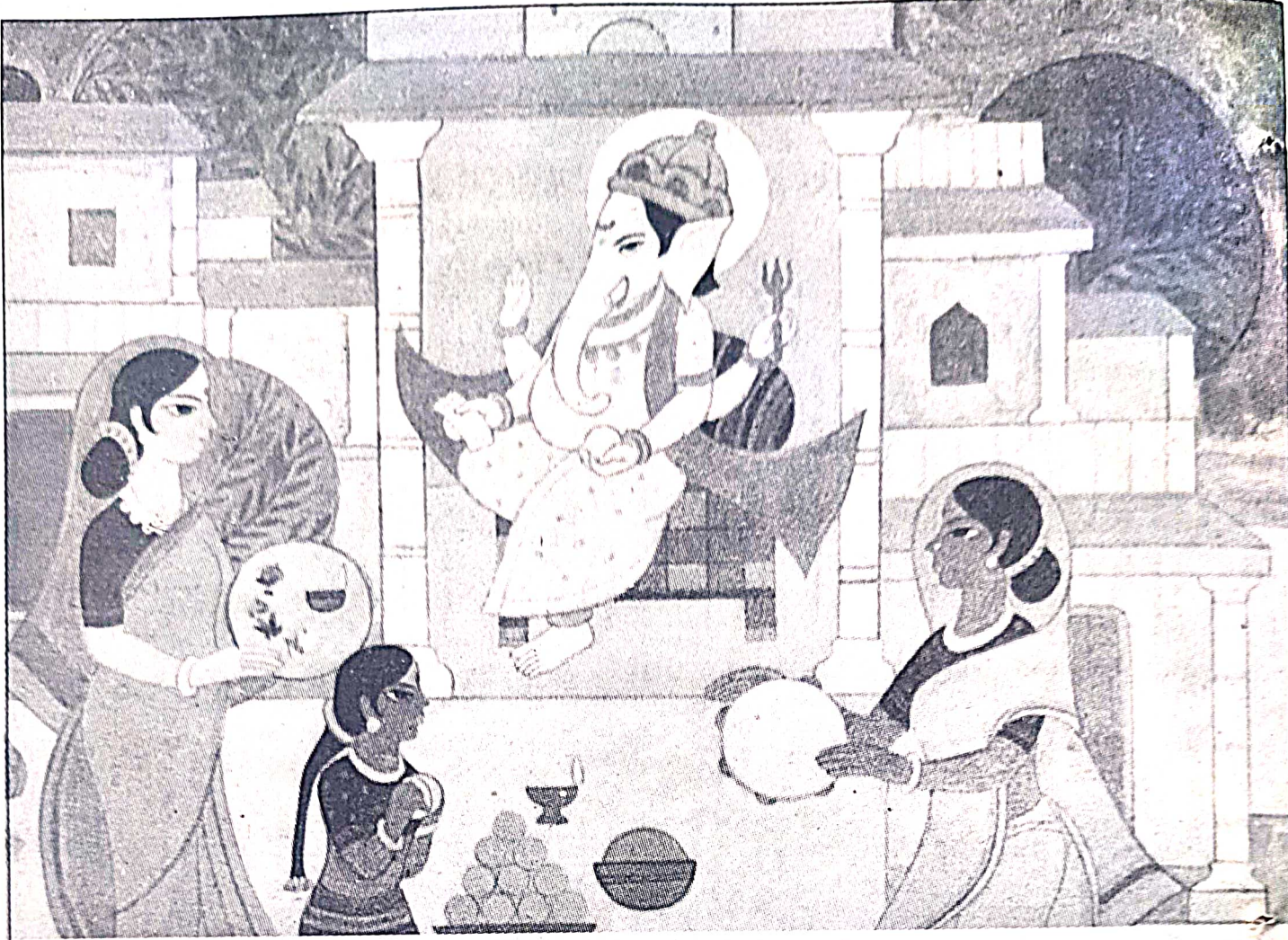
महागणपति पंच उपास्य देवों में से एक हैं, महेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में सृष्टि कार्य में विघ्न बाधा के प्रशमनार्थ अपने साक्षात् अंश से इन्हें प्रकट किया, इसी कारण प्रत्येक यज्ञादि शुभ कार्यों में प्रथम, गणपति की ही पूजा आराधना का विधान है—

अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजित्यो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

गणपति साधक के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले देव हैं तथा देवताओं और दानवों द्वारा पूजित समस्त विघ्नों को दूर करने वाले हैं। गणपति गणों के (देवताओं के) अधिपति अर्थात् संचालक हैं, ये ज्ञान के दाता हैं। यदि अभ्यान्तरिक ज्ञान और बुद्धि प्रचुर रूप में किसी को प्राप्त हो तो उसके बल से वह स्वल्प काल में भी सभी कार्य उत्तमता से कर सकता है।

यों तो गणपति के अनेकों रूप हैं और विश्व में वे विघ्नहर्ता रूप में अलग - अलग प्रांतों में अलग - अलग नामों से जाने जाते हैं।

भारतीय परम्परा के अनुसार किसी भी कार्य का शुभारम्भ करने से पूर्व गणपति का स्मरण व पूजन अवश्य किया जाता है, क्योंकि ऐसा करने से उस कार्य में आने वाली बाधाएं एवं समस्याएं समाप्त हो जाती हैं, जिस कारण वह उस कार्य में शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेता है।

भौतिक ही नहीं अपितु आध्यात्मिक दृष्टि से भी किसी भी पूजन व साधना आदि का शुभारम्भ करने से पूर्व कोई भी साधक, योगी, संन्यासी सर्वप्रथम गणपति का स्मरण अवश्य करता है, जिससे उसे साधना व पूजन आदि को सम्पन्न करने में किसी भी प्रकार की रुकावटों का सामना न करना पड़े। और फिर कैसा भी कार्य हो, बिना गणपति पूजन व ध्यान के तो सम्पन्न किया ही नहीं जा सकता।

गृहस्थ साधक जहां अन्य दुर्लभ व जटिल साधना नहीं कर पाते, वहीं **''महागणपति साधना''** जो अपने-आप में सामान्य, सरल एवं श्रेष्ठ है, जिसे सामान्य गृहस्थ सरलता से सम्पन्न कर सकते हैं।

महागणपति साधना अपने- आप में श्रेष्ठ आवश्यक और तुरन्त फलप्रद है। इसे सिद्ध कर साधक अपने जीवन से दरिद्रता को हमेशा - हमेशा के लिए दूर भगा सकता है, क्योंकि यह साधना आर्थिक दृष्टि से

महत्वपूर्ण एवं फलप्रद है, जिसे प्रत्येक गृहस्थ को सम्पन्न करनी ही चाहिए और वैसे भी भारतीय परम्परा के अनुसार दीपावली के पर्व पर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम गणेश पूजन ही सम्पन्न किया जाता है।

अपने पूर्व जन्म के पाप व दोषों के कारण इस भौतिक जीवन में व्यक्ति को दरिद्री एवं अभावयुक्त जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता है, चूंकि गणपति भोग और मोक्ष दोनों के प्रदाता हैं, वे उसके समस्त दोषों का निराकरण कर उसे धन एवं अभावमुक्त जीवन प्रदान करने में सहायक होते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को विशेष अवसर पर इस महागणपति साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। जिससे वह अपने जीवन में धन-धान्य, वैभव, श्री, प्रतिष्ठा, यश, मान, पद, उन्नति सभी कुछ प्राप्त करने में समर्थ हो सके।

इस महत्वपूर्ण एवं पूर्ण फलप्रद साधना को सम्पन्न करने पर साधक को हाथों-हाथ सफलता मिलती ही है—

१. इसे सम्पन्न कर व्यक्ति जीवन के समस्त कर्जों से छुटकारा पा लेता है, तथा दरिद्री जीवन से मुक्त हो जाता है।
२. इसे सम्पन्न करने पर आर्थिक दृष्टि से व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होने लगता है।
३. उस व्यक्ति को भविष्य में किसी के भी आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता।
४. इसके सम्पन्न होने के पश्चात उस व्यक्ति के लिए लक्ष्मी प्राप्ति के द्वार खुलने लग जाते हैं।
५. इस साधना के द्वारा प्राप्त धन का उसके जीवन में पूर्ण उपयोग होता है।
६. इस साधना को सिद्ध कर वह भगवान गणपति के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकता है।
७. इसे सिद्ध कर व्यक्ति अपने मन की सभी इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है।

इसलिए इस साधना का एक गृहस्थ के जीवन में विशेष महत्व है और इसे सिद्ध कर साधक एक सुखी सम्पन्न और समृद्ध जीवन की सृष्टि कर आर्थिक दृष्टि से एवं भौतिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त कर लेने में सक्षम हो जाता है।

महागणपति साधना विधि

प्रत्येक साधना के लिए कुछ न कुछ दिवस निर्धारित होते ही हैं, और ऐसे ही दिवसों में प्रमुख दिवस है . . . **गणेश चतुर्थी,** जो इस वर्ष **दिनांक २०/०१/६५ तथा** २०/०३/६५ को पड़ रही है। इस विशेष दिवस पर यदि

दुर्लभ व जटिल साधनाओं की अपेक्षा जो सामान्य, सरल एवं श्रेष्ठ है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति भगवान गणपति के साक्षात् दर्शन एवं अपने जीवन के सभी मनोरथों को पूर्ण कर सकता है, ऐसी ही श्रेष्ठ एवं तुरन्त फलप्रद है यह साधना।

यह प्रयोग सम्पन्न करें, तो उसमें साधक को शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है।

यह एक दिन की साधना पद्धति है, इसमें साधक पूर्व की ओर मुख कर, पीले आसन पर बैठ जाय, तथा पीले वस्त्र पहिन कर ऊपर गुरु चादर ओढ़ ले, इसके पश्चात् सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाये तथा तांबे की एक प्लेट में **पारद गणपति** को स्थापित कर दें, और इससे पूर्व **"दैनिक साधना विधि"** पुस्तक में दिये क्रमानुसार गुरु पूजन सम्पन्न करे, फिर पारद गणपति विग्रह को जल, दूध आदि से स्नान कराएं। इसके बाद कुंकुम से तिलक कर उस पर अक्षत चढ़ाएं, फिर धूप, दीप दिखाकर लड्डू का भोग लगाएं।

इसके बाद महागणपति यंत्र को विग्रह के सामने चावल की ढेरी बनाकर स्थापित कर उसका यथा विधि पूजन करें, तथा १०८ सुगन्धित पुष्प **"ॐ गणेशाय नमः"** बोलकर विग्रह पर तथा यंत्र पर चढ़ायें और फिर **पीली हकीक माला** से निम्न मंत्र का २१ माला जप करें।

मंत्र –

ॐ गं गणपतये नमः

तीन दिन के बाद पारद गणपति, यंत्र और माला को नदी में विसर्जित कर देना चाहिए। विग्रह, यंत्र तथा माला का प्राण-प्रतिष्ठित होना आवश्यक है, तभी प्रयोग में सफलता प्राप्त हो सकती है, अन्यथा नहीं।

❋

बीज मंत्र से बगलामुखी साधना

परम पूज्य गुरुदेव,

सादर चरण स्पर्श,

आपके आशीर्वाद से २४ दिन की अखण्ड बीज मंत्र-जप की साधना पूर्णाहुति पर सम्पन्न हुई। प्रारम्भ से ही मेरे जीवन की प्रथम महत्वपूर्ण साधनानुभूति का विवरण मैं आपके श्री चरणों में भेज रहा हूं, जैसा कि आपका आदेश मिला था। मुझे गुरुधाम दिल्ली में एक गुरुभाई मिले, उन्होंने मुझसे पूछा, कि तू कहां का है? मैंने बतलाया दिल्ली का हूं। तब उन्होंने कहा, कि जो साधना सामग्री आपके पास रखी है, उसकी साधना आप कर लें एवं आवश्यक सभी मार्गदर्शन कर दिया।

मैंने गुरु-आज्ञा लेकर २४ दिन की अखण्ड साधना का मन बनाकर निर्णय लिया एवं ड्यूटी पर न जाकर घर वापस आ गया, क्योंकि मुझे रात्रि ११ बजे से साधना प्रारम्भ करनी थी। मैं जैसे ही घर आया, पत्नी एवं अन्य परिवार के सदस्यों ने बतलाया, कि ५ बजे शाम से घर में कई बार खुशबू आई है, और ठीक इसी समय मैं गुरुधाम दिल्ली में साधना-सूत्र समझ रहा था।

परिवार के सदस्यों को मैंने साधना के विषय में बतलाया एवं तैयार हो जाने को कह दिया, सभी प्रफुल्लित एवं उत्साहित थे। मैं बैठा था, फिर बात करते-करते शिथलीकरण हेतु लेट गया। तन्द्रा में ही मैंने सहसा क्या देखा, कि बाल रूप में श्री कृष्ण जी मेरे सामने मुस्करा कर बालक्रीड़ा कर रहे हैं, तत्पश्चात् भैरव देव अपने कुत्ते के साथ (कुत्ता पीछे-पीछे था) चले आ रहे हैं। ऐसा देखने के कुछ समय पश्चात् मैं अपने शवासन से वापस क्रियाशील हो गया।

मेरी प्रथम अनुभूति साधना में भाग लेने वालों के लिए मैंने मार्गदर्शन एवं भावना स्पष्टीकरण हेतु स्पष्ट बतला दी है। यही श्री कृष्ण जी के बाल स्वरूप की तस्वीर गुरुधाम के बेसमेन्ट में मैंने बाद में देखी, जो मुझे दिखी थी।

इसका अर्थ मेरी आत्मा ने यही लगाया, कि मां बगलामुखी की हम सभी सदस्य शिशुत्व भाव से साधना करें। यह अनुभूति जानकर अधिकांश सदस्यों ने अश्रुपूर्ण समर्पण के साथ पत्रिका में प्रकाशित साधना-सूत्रों के साथ साधना प्रारम्भ की एवं गुरु आह्वान में ही परम पूज्य गुरुदेव को जिस स्थान पर आसन दिया, वहीं कृपा सिंधु के दर्शन सुलभ हुए और साधना का श्री गणेश हुआ।

साधना में कई पारिवारिक समस्याओं से ऐसा लगा, कि साधना खण्डित हो जाएगी, परन्तु पूरा संघर्ष करते हुए मैंने उसे जारी रखा। मेरे बाबा (दादा जी) के सीरियस होने का दो बार फोन आया, जिन्हें देखने के लिए मुझे इन्दौर जाना था।

सभी साधना एवं दादा जी के अंतिम जीवित दर्शन हेतु संकल्प-विकल्प में उलझ गए। **पूजन के समय गुरुदेव ने मार्गदर्शन दिया, कि तुम साधना जारी रखो, साधना पूरी करो, बाबा तुम्हारे लिए अवश्य रुकेंगे, चिंता मत करो।** ठीक ऐसा ही हुआ, उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

मैंने १८/०७/६४ को साधना प्रारम्भ की थी, ०२/०८/६४ को सीरियस होने का फोन मिला, ०७/०८/६४ को स्वास्थ्य में सुधार का समाचार मिला और १२/०८/६४ को पूर्णाहुति हुई।

अब पानीपत शिविर में जाना था, पुनः मुझे छुट्टी लेनी थी, अतः २३ ता० को शिविर से वापस आकर मालवा एक्सप्रेस से इन्दौर जाकर बाबा जी को देखा, जैसे वे मेरी ही प्रतीक्षा में थे। उन्होंने मुझे संकेत से अपने पास बुलाया और कुछ समय बाद जैसे ही मैंने वहां से वापस आने का सोचा, वे दुनिया से ६० वर्ष पूरे कर चले गए। मुझे गुरुदेव के वचन, जो साधना काल में दिए गए थे, कानों में गूंज गए।

मैं श्रद्धानत था तथा बाबा के मोक्ष-प्राप्ति की प्रार्थना के साथ-साथ गुरुदेव को भी याद करता रहा।

साधना में मुझे गुरुदेव वायुमार्ग से अपनी धोती का छोर हाथ में पकड़े हुए आते दिखे एवं आज्ञा चक्र पर आकर रुक गए, ऐसा प्रतीत होते ही मेरा गला भर आया। **दूसरे दिन हिमालय पर शिवलिंग दिखा, जिस पर स्पष्ट 'ॐ' वायुमार्ग से शिवलिंग पर आकर रुक गया।**

साधना काल में मंत्र-जप के समय शिशुत्व भाव से मैं गुरु माता एवं बगलामुखी मां का ध्यान लगा रहा था। मंत्र-जप करने के उपरान्त मैं आराम करने लेटा था एवं दूसरा पारिवारिक सदस्य जप कर रहा था, तब तन्द्रा में एक रथ में दो शेर अत्यन्त स्पष्ट रूप से रथ लेकर मेरे निकट आए। रथ से एक शेर निकल कर मेरे अत्यन्त निकट आ गया, इसके आगे मुझे याद नहीं, उसने कुछ कहा था शायद। मैं कुछ समय बाद उठ गया।

जगदम्बा साधना वाली पुस्तिका में मैंने साधक

गुरु भाई की अनुभूति पढ़ी थी, जब शेर ने स्वप्न में उसे आकर मार्गदर्शन दिया था। मेरी खुशी एवं आनन्दातिरेक का पारावार न रहा।

मैंने तब किसी को कुछ नहीं बतलाया। अपने अगले टर्न पर मंत्र-जप काल में मेरा गला भर आया, अश्रुधार बह चली, गुरुदेव धीरज बंधाते रहे, मां दुलराती रही और मैं उनके चरणों में मुस्करा उठा।

मंत्र-जप के समय अन्य दिन जब मैं मस्त था, तब दो माताएं गोद में दो बालक लिए हुए थीं, दोनों माताएं एवं शिशु एक से थे, बिलकुल एक जैसे, कोई फर्क नहीं था उनमें। मैं कुछ समय देखता रहा, सब कुछ मालूम होते हुए, कि मैं साधना कर रहा हूं, मैं साधना में सामान्य रहा।

पूर्णाहुति के समय ग्यारह माला आहुतियां गुरु-आज्ञा से देशी घी की दीं। आहुति के समय गुरुदेव भी हवन-कुण्ड में आहुति डाल रहे थे, यह स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। जब आहुतियां डालकर हम सभी बैठ गए, तो परम पूज्य गुरुदेव भी बैठ गए।

साधना की पूर्णता पर हम सभी पारिवारिक सदस्य गुरुदेव से मिलने गए एवं उनसे कहा, कि आप घर आए थे, तब मुस्कराकर उन्होंने स्वीकार किया, कि हां! मैं आया था एवं तुम लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई।

मेरी पत्नी को स्वप्न में मां बगलामुखी के दर्शन हुए। भाई को साधना काल में सिद्धाश्रम वर्णन जैसा दृश्य दिखा, जिसमें सहसा एक परदा उठा एवं सामान्य से अधिक हरियाली, स्वच्छ प्रकाश, सुरम्यता पूर्ण वातावरण था। ऐसा अद्वितीय झलक देखकर भाई ने सोचा, अरे! मैं यह क्या देख रहा हूं। ऐसा विचार आते ही जैसा परदा उठा था, वैसा ही नीला परदा गिर गया और दृश्य समाप्त हो गया।

मेरे घर में इस साधना के उपरान्त पारस्परिक स्नेह, शांति, सौहार्द एवं साधनात्मक वातावरण बन गया है। गुरुदेव की कृपा से जिन पारिवारिक सदस्यों के बीच कभी मैं आलोचना का शिकार होता था, आज सभी अनुकूल बनकर साधना में मेरा हाथ बटाते हैं। घर से बाहर आस पड़ोस में भी साधनात्मक वातावरण नए गुरु भाइयों के साथ बनता जा रहा है। यह सब कुछ गुरु-कृपा का ही प्रभाव है।

आपका सेवक

शिवकुमार ताम्रकार (सहायक प्रबन्धक)
ट्रान्सपोर्टेशन डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन
दिल्ली

मंत्रों के माध्यम से सब सम्भव है

मेरी इच्छा अपने भारतीय दर्शन को समझने की थी परन्तु मुझे कुछ भी कहीं से प्राप्त नहीं हुआ। और मैं काफी निराश हो चुका था, लगता था कि मेरी अच्छा अधूरी रह जायेगी जीवन का एक बहुत बड़ा भाग गुजर चुका था पर कहीं न कहीं आस लगी थी कि आज भी भारत में कहीं न कहीं कोई ऐसा व्यक्तित्व है जो इन सब विद्याओं का ज्ञाता होगा। जहां पर भी ऐसे व्यक्तित्व के बारे में सुनता, जानकारी मिलती या पेपरों, अखबारों में पढ़ता तो उन व्यक्तित्वों से मिलता पर वे कुछ ही ज्ञान में निष्णात होते, पर उनके ज्ञान की एक सीमा थी, उसके वाद उन्हें कोई विशेष ज्ञान नहीं था। कई जगह आडम्बरों के अलावा कुछ भी नहीं मिलता था। कई रातें मुझे चिन्ता में नींद नहीं आती, हालांकि मैं सभी दृष्टियों से सम्पन्न हूं। मुझे किसी भी प्रकार की कोई भौतिक कमी नहीं है। जैसा कि आज के सामाजिक परिवेश के अनुसार होना चाहिए, पर मैं उस ज्ञान की खोज में लगा था कि कोई ऐसा व्यक्तित्व मिलें। तभी एक दिन मेरे एक परिचित ने मुझे एक पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** दी। जिसमें कुरुक्षेत्र में शिविर का आयोजन था। मैंने इस शिविर में भाग लेने का पूर्ण निश्चिय कर लिया। चूंकि मुझे साधनात्मक क्षेत्र की कई छोटी छोटी जानकारी हो चुकी थी। अतः शिविर में होने वाले प्रयोगों को समझने में कोई विशेष असुविधा नहीं हुई। यह एक **लक्ष्मी साधना शिविर** था, जो कि पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहा था। मैंने भी इस शिविर में होने वाले साधना में भाग लिया। पहली बार मुझे उच्च कोटि की अनुभूतियां हुई। पूरे शरीर में मंत्रों के प्रभाव से हलचल पैदा हो गई और मैं दिव्य आनन्द की अनुभूति में लीन हो जाता। यज्ञ के माध्यम से देवता आहुतियां ग्रहण करते हैं यह मैंने पहली बार देखा। जब पूज्य गुरूदेव ने यज्ञ कुण्ड में लक्ष्मी का आह्वान कर आहुति दिया, तो ठीक उसी समय मैंने अपने कैमरे से उस यज्ञ कुण्ड का फोटो लिया। जिसमें यज्ञ के अग्नि की लपटों में लक्ष्मी का चित्र स्पष्ट दिखाई देता है। और इसकी निगेटिव आज भी मेरे पास है, जो कि मेरे पास धरोहर रूप में सुरक्षित है। इसके बाद मैं पूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत रूप से मिला यह जानकार मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई कि जिस व्यक्तित्व की खोज में भटक रहा था वह भव्य व्यक्तित्व यही हैं **क्योंकि सम्मोहन, ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र, तंत्र, यंत्र, साबर मंत्र, यज्ञ, कर्मकाण्ड व अन्य जितनी भी विधाएं हैं उन सबके ये पूर्ण ज्ञाता हैं।** मैंने उनसे दीक्षा लेकर कई साधनाएं सम्पन्न की। अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि आज भी इस भौतिक युग में मंत्र अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक है।

आपका शिष्य
सेलर ग्रीन नम्बरदार
अम्बाला

विवाह एवं प्रेम रेखा

हमारे शरीर में सबसे कोमल और विचित्र-सा जो अवयव है, उसका नाम 'दिल' है। एक प्रकार से इसका शरीर में सबसे अधिक महत्त्व है। एक तरफ यह पूरे शरीर में खून पहुंचाने का कार्य करता है, तो दूसरी तरफ यह अपने-आप में इतना अधिक कोमल होता है कि कई भावनाओं को मन में संजोकर रखता है। कोमल विचार, विपरीत योनि के प्रति भावनाएं आदि कार्य इसी के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। यह इतना अधिक कोमल होता है कि जरा-सी विपरीत बात से इसको ठेस पहुंच जाती है और टूट जाता है। मानवीय कल्पनाओं का यह एक सुन्दर प्रतीक है। करुणा, दया, ममता, स्नेह और प्रेम आदि भावनाएं इसी के द्वारा संचालित होती हैं।

एक हृदय चाहता है कि वह दूसरे हृदय से सम्पर्क स्थापित करे, आपस में दोनों का प्यार हो। दोनों हृदय एक मधुर कल्पना से ओत-प्रोत हों और जब दोनों हृदय एक सूत्र में बंध जाते हैं, तब उसे समाज विवाह का नाम देता है।

वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता तभी कही जाती है, जबकि उसका अर्द्धांग भी सुन्दर हो, समझदार हो, प्रेम की भावना से भरा हो तथा दोनों के हृदय एक-दूसरे से मिल जाने की क्षमता रखते हों। जिस व्यक्ति के घर में सुशील, सुन्दर, स्वस्थ और शिक्षित पत्नी होती है, वह घर निश्चय ही इन्द्र भवन से ज्यादा सुखकर माना जाता है। इसलिए हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह जीवन रेखा को जितना महत्त्व दे, लगभग उतना ही महत्त्व विवाह रेखा को भी दे, क्योंकि इस रेखा के अध्ययन से ही मानव जीवन की पूर्णता का ज्ञान हो सकता है।

मानव जीवन की यात्रा अत्यन्त कंटकमय होती है। इस पथ को भली प्रकार से पार करने के लिए एक ऐसे सहयोगी की जरूरत होती है, जो दुख में सहायक हो, परेशानियों में हिम्मत बंधाने वाला हो तथा जीवन में कंधे से कंधा मिलाकर चलने की क्षमता रखता हो।

हथेली में विवाह रेखा या वासना रेखा अथवा प्रणय रेखा दिखने में छोटी होती है, पर इसका महत्त्व सबसे अधिक होता है। **कनिष्ठिका उंगली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर, बुध पर्वत के बगल में हथेली के बाहर निकलते समय जो आड़ी रेखाएं दिखाई देती हैं, वे रेखाएं ही विवाह रेखाएं कहलाती हैं।**

हथेली में ऐसी रेखाएं दो-तीन या चार हो सकती हैं, पर उन सभी रेखाओं में एक रेखा मुख्य होती है। यदि ये रेखाएं हृदय रेखा से ऊपर हों, तो वे विवाह रेखाएं कहलाती हैं और ऐसे व्यक्ति का विवाह निश्चय ही होता है। परन्तु ये रेखाएं यदि हृदय रेखा से नीचे हों, तो ऐसे व्यक्ति का विवाह जीवन में नहीं होता।
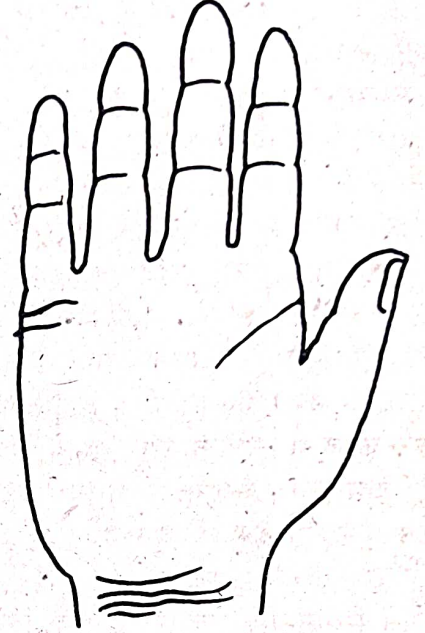
यदि हथेली में दो या तीन विवाह रेखाएं हों, तो जो रेखा सबसे अधिक लम्बी पुष्ट और स्वस्थ हो उसे विवाह रेखा मानना चाहिए। बाकी रेखाएं इस बात की सूचक होती हैं, कि या तो विवाह से पूर्व उतने सम्बन्ध होकर छूट जाएंगे अथवा विवाह के बाद उतनी अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेंगे।

पर इसके साथ ही साथ जो छोटी-छोटी रेखाएं होती हैं, वे रेखाएं प्रणय रेखाएं कहलाती हैं। वे जितनी रेखाएं होंगी, व्यक्ति के जीवन में उतनी ही पर-स्त्रियों का सम्पर्क रहेगा। यही बात स्त्रियों के हाथ में भी लागू होती है।

पर केवल ये रेखाएं देखकर ही अपना मत स्थिर नहीं कर लेना चाहिए। पर्वतों का अध्ययन भी इसके साथ-साथ आवश्यक है। यदि इस प्रकार की रेखाएं हों और गुरु पर्वत ज्यादा पुष्ट हो तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है, पर उसका प्रेम सात्त्विक और निर्दोष होता है। यदि शनि पर्वत विशेष उभरा हुआ हो और ऐसी रेखाएं हों, तो व्यक्ति अपनी आयु से बड़ी आयु की स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है। यदि हथेली में सूर्य पर्वत पुष्ट हो और ऐसी रेखाएं हों, तो व्यक्ति बहुत अधिक सोच-विचार कर अन्य स्त्रियों से प्रेम सम्पर्क स्थापित करता है। यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हाथ में दिखाई

दें, तो ऐसे व्यक्ति को प्रेमिकाओं से भी धन लाभ होता है। यदि हथेली में प्रणय रेखाएं हों और चन्द्र पर्वत विकसित हो, तो व्यक्ति काम लोलुप तथा सुन्दर स्त्रियों के पीछे फिरने वाला होता है। यदि शुक्र पर्वत बहुत अधिक विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हों, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में कई स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित करता है, तथा पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

प्रणय रेखा का हृदय रेखा से गहरा सम्बन्ध होता है। ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक नजदीक होंगी, व्यक्ति उतना ही कम उम्र में प्रेम सम्बन्ध स्थापित करेगा, ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक दूर होंगी, व्यक्ति के जीवन में प्रेम सम्बन्ध उतना ही अधिक विलम्ब से होगा।

यदि हथेली में प्रणय रेखा न हो, तो व्यक्ति अपने जीवन में संयमित रहते हैं तथा वे काम लोलुप नहीं होते।

यदि प्रणय रेखा गहरी और स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बन्ध भी गहरे बनेंगे। परन्तु यदि ये प्रणय रेखाएं छोटी तथा कमजोर हों, तो उस व्यक्ति के प्रणय सम्बन्ध भी बहुत कम समय तक चल सकेंगे।

यदि दो प्रणय रेखाएं साथ-साथ बढ़ रही हों, तो उसके जीवन में एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध चलेंगे, ऐसा समझना चाहिए। यदि प्रणय रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो तो व्यक्ति का प्रेम बीच मे ही टूट जाता है। यदि प्रणय रेखा पर द्वीप का चिन्ह दिखाई दे तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी सहन करनी पड़ती है। यदि प्रणय रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो, उस व्यक्ति को प्रेम सम्बन्ध ऊंचे घरानों से रहेगा। यदि प्रणय रेखा आगे जाकर दो भागों मे बंट जाती हो, तो उस व्यक्ति के प्रेम सम्बन्ध जल्दी हो समाप्त हो जाते हैं। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में नीचे की ओर जा रही हो, तो वह इस क्षेत्र में बदनामी सहन करता है। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में ऊपर की ओर बढ़ रही हो, तो उसका प्रणय सम्बन्ध टिकाऊ रहता है तथा जीवन भर आनन्द उपभोग करता है। यदि प्रणय रेखा बीच में टूटी हुई हो, तो उससे प्रेम सम्बन्ध बीच में ही टूट जाएंगे।

अब मैं विवाह रेखा से सम्बन्धित कुछ तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूं:—

१. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दोष तथा लालिमा लिए हुए हो, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है।
२. यदि दोनों हाथों में विवाह रेखाएं पुष्ट हों, तो व्यक्ति दाम्पत्य जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
३. यदि विवाह रेखा कनिष्ठिका उंगली के दूसरे पोर तक चढ़ जाए तो वह व्यक्ति आजीवन अविवाहित रहता है।
४. यदि विवाह रेखा नीचे की ओर झुककर हृदय रेखा को स्पर्श करने लगे तो उसकी पत्नी की मृत्यु समझनी चाहिए।
५. यदि विवाह रेखा टूटी हुई हो, तो जीवन के मध्यकाल में या तो पत्नी की मृत्यु हो जाएगी अथवा तलाक हो जाएगा, ऐसा समझना चाहिए।
६. यदि शुक्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित करती है, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।
७. यदि विवाह रेखा आगे चलकर दो मुंह वाली बन जाती है, तो इस प्रकार के व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता तथा उसका वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है।
८. यदि विवाह रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर हृदय रेखा की ओर जा रही हो, तो उसकी पत्नी से जीवन भर बनी रहती है।
९. यदि विवाह रेखा चौड़ी हो, तो विवाह के प्रति उसके मन में कोई उत्साह नहीं रहता।
१०. यदि विवाह रेखा आगे जाकर दो भागों में बंट जाती हो और उसकी एक शाखा हृदय रेखा को छू रही हो, तो वह व्यक्ति पत्नी के अलावा अपनी साली से भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करेगा।
११. यदि विवाह रेखा आगे जाकर कई भागों में बंट जाए, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।
१२. यदि विवाह रेखा मस्तिष्क रेखा को छू ले तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी की हत्या करता है। यदि बुध पर्वत पर विवाह रेखा कई भागों में बंट जाए तो बार-बार सगाई टूटने का योग बनता है।
१३. यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को स्पर्श कर नीचे की ओर बढ़ती हो, तो ऐसा विवाह अनमेल विवाह कहलाता है।
१४. यदि विवाह रेखा की एक शाखा नीचे झुककर शुक्र पर्वत तक पहुंच जाए तो उसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है।
१५. यदि विवाह रेखा पर काला धब्बा हो, तो उसे अपनी पत्नी का सुख नहीं मिलता।
१६. यदि विवाह रेखा आगे चलकर आयु रेखा को काटती हो, तो उसका वैवाहिक जीवन कलह पूर्ण रहता है।
१७. यदि विवाह रेखा, भाग्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा परस्पर मिलती हों, तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखदायी समझना चाहिए।
१८. यदि विवाह रेखा को कोई आड़ी रेखा काटती हो, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन बाधाकारक होता है।
१९. यदि कोई अन्य रेखा विवाह रेखा में आकर या विवाह रेखा स्थल पर आकर मिल रही हो, तो प्रेमिका के कारण उसका गृहस्थ जीवन नष्ट हो जाता है।
२०. यदि विवाह रेखा के प्रारम्भ में द्वीप का चिह्न हो, तो काफी बाधाओं के बाद उसका विवाह होता है।
२१. यदि विवाह रेखा जहां से झुक रही हो, उस जगह क्रॉस का

चिह्न हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु अकस्मात होती है।

२२. यदि विवाह रेखा पर एक से अधिक द्वीप हों, तो व्यक्ति जीवन भर कुंआरा रहता है।

२४. यदि बुध क्षेत्र के आस-पास विवाह रेखा के साथ-साथ दो तीन रेखाएं चल रही हों, तो जीवन में पत्नी के अलावा उसके सम्बन्ध दो-तीन स्त्रियों से भी रहते हैं।

२५. यदि विवाह रेखा बढ़कर कनिष्ठिका की ओर झुक जाए तो उसके जीवन साथी की मृत्यु उसके पूर्व होती है।

२६. विवाह रेखा का अचानक टूट जाना, गृहस्थ जीवन में बाधा स्वरूप समझना चाहिए।

२७. यदि बुध क्षेत्र पर दो समानान्तर रेखाएं हों, तो उसके दो विवाह होते हैं, ऐसा समझना चाहिए।

२८. यदि विवाह रेखा आगे चलकर सूर्य रेखा से मिलती हो, तो उसकी पत्नी उच्च पद पर नौकरी करने वाली होती है।

२९. यदि दो हृदय रेखाएं हों, तो व्यक्ति का विवाह अत्यन्त कठिनाई से होता है।

३०. यदि चन्द्र पर्वत से रेखा आकर विवाह रेखा से मिले, तो ऐसा व्यक्ति भोगी, कामुक तथा गुप्त प्रेम रखने वाला होता है।

३१. यदि मंगल रेखा से कोई रेखा आकर विवाह रेखा से मिले, तो उसके विवाह में बराबर बाधाएं आनी रहती हैं।

३२. विवाह रेखा पर जो खड़ी लकीरें होती हैं, वे सन्तान रेखाएं कहलाती हैं।

३३. सन्तान रेखाएं अत्यन्त महीन होती हैं, जिन्हें नंगी आंख से देखा जाना सम्भव नहीं होता।

३४. इन सन्तान रेखाओं में जो लम्बी और पुष्ट होती हैं, वे पुत्र रेखाएं होती हैं तथा जो महीन और कमजोर होती हैं, उन्हें कन्या रेखा समझना चाहिए।

३५. यदि मणिबन्ध कमजोर हो तथा शुक्र पर्वत अविकसित हो, तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में सन्तान सुख नहीं रहता।

३६. यदि स्पष्ट और सीधी रेखाएं होती हैं, तो सन्तान स्वस्थ होती है, परन्तु यदि कमजोर रेखाएं होती हैं, तो सन्तान भी कमजोर समझनी चाहिए।

३७. विवाह रेखा को ६० वर्ष का समझ कर इस रेखा पर जहां पर भी गहरापन दिखाई दे, आयु के इस भाग में विवाह समझना चाहिए।

वस्तुतः विवाह रेखा का अपने-आप में महत्त्व है और इस रेखा का अध्ययन पूर्णतः सावधानी के साथ किया जाना चाहिए।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक- ''वृहद हस्त रेखा शास्त्र'' से साभार)

सद्गुरु स्तवनम्

डा० नलिनी शुक्ला
एम० ए०, पी० एच० डी०
संस्कृत (स्वर्ण पदक प्राप्त)
वरिष्ठ प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय
उत्तर प्रदेश

हे निखिलेश्वरानन्द गुरुवर! श्री चरणों में अगणित प्रणाम।
स्वीकार करो मम हार्द सुमन, दो शक्तिपात का वर ललाम।।
युग-युग से भटकन तमस् भरे पथ में छाये स्थिरतम प्रकाश।
तापत्रय के आवर्त फंसे मन को मिल जाए शान्ति-भास।।
सार्धत्रिवलया सुप्त शक्ति आरोहण का अभियान लिए।
निर्बाध जगे, मकरन्दनयन-शिवशक्ति-सुधा मधुपान किए।।
अस्फुट स्पन्दन सुस्पष्ट बनें, संशय, दुविधा अवरोध हटे।
वर्षों से गुञ्जित नादों की भाषा विषयक अज्ञान कटे।।
शिष्यत्व हृदय का जाग उठे जीवत्व सफलता पा जाए।
शव सा शरीर शिव तुल्य बने, जड़ता का तिमिर नसा जाए।।
मैं भी समष्टि-कल्याण-यज्ञ-आहुतिकण-लव की ज्योति बनूं।
सारस्वत ज्योति अखण्ड बनूं निष्काम इष्ट (कृष्ण) की भक्ति बनूं।।
अंकुरित बीज हो सद्गुरु के फलनम्र सघन तरु बन जाए।
तन मन निर्मल हो तपःपूत चरितार्थ मनुजता कहलाये।।

२१ दिनों में कुबेरवत् हो सकते हैं षोडशी स्तोत्र साधना से

यदि आप संस्कृत उच्चारण नहीं कर सकते, तो हिन्दी पाठ से भी वही फल एवं सफलता प्राप्त होती है।

मां भगवती जगदम्बा के दस महाविद्या स्वरूपों में से भी जो सर्वाधिक मनोहर और वरदायक स्वरूप है, वह षोडशी त्रिपुर सुन्दरी का ही माना गया है, जिन्हें श्री विद्या, त्रिपुरा, कामेश्वर-कामेश्वरी विद्या, श्रीचक्र विद्या और त्रयी जैसे कई विशेषणों से भी आभूषित किया गया है। ऐसी कथा है, कि महालक्ष्मी ने वर्षों तक उपासना और साधना करने के बाद जो अनेक वर प्राप्त किए, उनमें से एक वर यह भी था कि भविष्य में महालक्ष्मी के साथ 'श्री' शब्द भी जुड़ेगा। कालान्तर में तो 'श्री' महालक्ष्मी का ही पर्याय बन गया, जबकि इसके मूल में इन्हीं त्रिपुर सुन्दरी षोडशी का महात्म्य है।

जीवन में धन, ऐश्वर्य, सुख प्राप्त करने के तो अनेक उपाय हो सकते हैं, कई साधनाएं सम्भव हैं, लेकिन व्यक्ति अपने जीवन में अचल सम्पत्ति का स्वामी बने और पूर्ण वैभव युक्त जीवन जी सके, इसके लिए त्रिपुर सुन्दरी षोडशी की साधना परमावश्यक है। महालक्ष्मी भी इन्हीं के वर्चस्व से पूर्ण फलदायिनी सिद्ध होती है।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी का महत्वपूर्ण व दुर्लभ मंत्र अपने-आप में १६ बीजाक्षरों से निर्मित है। भगवत्पाद शंकराचार्य ने प्रत्येक बीज के आधार पर इनकी स्तुति से सम्बन्धित १६ अत्यन्त उत्कृष्ट पदों की रचना की है। आज भी श्री विद्या एवं षोडशी के उपासक इस स्तोत्र का पाठ कर रसाप्लावित एवं धन्य-धन्य हो जाते हैं। इसी स्तोत्र पर पश्चातवर्ती किसी टीकाकार की दुर्लभ रचना मुझे कुछ दिन पूर्व मैसूर के एक पुरोहित से प्राप्त हुई, जिसकी जानकारी विज्ञजनों एवं साधकों को अभी तक नहीं रही है।

उस अज्ञात टीकाकार ने अपने अनुभवों से यह तथ्य पाया था कि यदि एक विशेष यंत्र की रचना कर इस स्तोत्र का सम्बन्ध यज्ञ-पद्धति से कर दिया जाए, तो साधक के जीवन में इतना अधिक धन आना आरम्भ हो जाता है कि उसे व्यय करने के लिए उपाय सोचने पड़ते हैं। आगे की पंक्तियों में मैं इस स्तोत्र की अविकल प्रस्तुति एवं दुर्लभ व गोपनीय साधना पद्धति का स्पष्टीकरण कर रहा हूं।

इस महत्वपूर्ण साधना हेतु जिस यंत्र की आवश्यकता पड़ती है, उसे **''राजमातंगीश्वरी यंत्र''** की संज्ञा दी गई है, जिसे ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र अथवा रजतपत्र पर उत्कीर्ण कर, उसका पंचोपचार पद्धति से पूजन कर, प्राण-प्रतिष्ठा व चैतन्यीकरण कर सामने पूजा स्थान में पीले रेशमी वस्त्र पर स्थापित करें और सामने एक यज्ञ-कुंड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर, प्रत्येक पद का उच्चारण कर एक **कमलगट्टे का बीज** शुद्ध घृत के साथ उस पवित्र अग्नि में समर्पित किया जाए तथा ऐसा ३ दिनों तक नियम पूर्वक किया जाए, तो अद्भुत व आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते हैं।

षोडशी श्री विद्या स्तोत्र

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मीस्वयंवरणमंगलदीपिकाभिः।
सेवाभिरम्ब! तव पादसरोज मूले,
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्।।१।।

हे मां जगदम्बे! सुधामयी, सौभाग्य को देने वाली, लक्ष्मी को स्वयं वरण करने वाली मंगलकारिणी दीपमाला की तरह आपके चरणों में मन लगाकर सेवा करने वाले भक्तों को आपने सब कुछ दिया है।

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते,
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रो।
सन्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य,
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य।।२।।

हे भगवती! मेरी अन्तिम अभिलाषा यही है कि अमृत से परिपूर्ण उदित होते हुए अरुण वर्ण सूर्य की तरह, आपके दिव्य श्री विग्रह के समीप पहुंच कर आप की आरती या स्तुति के समय मेरे नेत्र प्रेमाश्रु से पूर्ण हों।

ईषत्प्रभावकलुषाः कति नाम सन्ति,
ब्रह्मादयः प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः।
एकस्स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते,
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति।।३।।

हे मां! सांसारिक ऐश्वर्य चाहने वाले ब्रह्मा आदि बहुत से देवता प्रत्येक युग में प्रलयकाल में विगत हो जाते हैं, किन्तु एक बार भी आपके चरणों में भक्ति-भाव से जो नत होता है, वह सदैव ही स्थिर - सिद्ध होकर विद्यमान रहता है।

लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं,
कारुण्यकन्द लतिकातिभरं कटाक्षम्।
कन्दर्प्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः,
सम्मोहयन्ति तरुणीं भुवनत्रयेऽपि।।४।।

हे त्रिपुर सुन्दरी मां! आप के चरणों में स्नेह रखने वाला भक्त करुणा पूर्ण आप के एक कृपा कटाक्ष को पाकर, कामदेव के समान सौन्दर्यवान बन कर संसार की समस्त युवतियों को सम्मोहित करने वाला हो जाता है।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति ये वा,
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रो।
त्वत्संमृतौ यमभटाभिभवं विहाय,
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः।।५।।

हे त्रिकोण में निवास करने वाली, तीन नेत्रों वाली मां त्रिपुर सुन्दरी! "ह्रींकार" यह आप का ही नाम है, ऐसा वेद वचन है। उस नाम का स्मरण करके भक्त जन्म-मृत्युभय से छूटकर दिग्पालों के साथ नन्दन वन में क्रीड़ा करते हैं।

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः,
क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं,
त्वार्द्धदेहस्य शाश्वदमृताप्लुतशीतलस्य।।६।।

हे मां! आपके अमृतमय शरीर के अर्धभाग से संपर्कित होने के कारण त्रिपुरहन्ता शंकर जी के गले में भरे हुए विष ने भी किसी का अनिष्ट अभी तक नहीं किया।

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते,
देवि! त्वदंघ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किञ्च स्फुरन्मुज्ज्वलमातपत्रं,
द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति।।७।।

हे मां! आपके चरणों में भक्ति-भाव से किया हुआ एक भी प्रणाम सर्वज्ञता एवं सभा में वाक्-चातुर्य ही नहीं देता, अपितु दिक् मुकुट, धवल छवि एवं दो चामरों से युक्त पृथ्वी के साम्राज्य को भी दे देता है।

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु,
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं,
त्वयेव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम्।।८।।

हे मां! मैं आप के अभिभाव से पूर्ण होकर आपका ही आस लगाया हुआ अनाथ हूं। कल्पवृक्ष के सदृश मनोरथों को पूरा करने वाली अपनी करुणामयी दृष्टि मुझ पर अवश्य डालिये।

हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये,
भक्तिं वहन्ति किल सापरदैवतेषु।
त्वामेव देवि! मनसाहमनुस्मरामि,
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव।।९।।

हे भगवती! बहुत से अन्य लोग आप को छोड़कर नीच देवताओं को भजते हैं, किन्तु मैं मन और वचन से केवल आप को ही चाहता हूं, प्रणाम करता हूं, आप के सिवाय संसार में और कौन मुझे शरण दे सकता है।

लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानामालोकय,
त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्।
नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं,
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा।।१०।।

हे मां त्रिपुर सुन्दरी! संसार में अनेक सुन्दर-सुन्दर दृश्य हैं, जिन्हें आप देख सकती हैं, किन्तु मेरे जैसा करुणा का पात्र इस संसार में न है, न हुआ, न होगा।

ह्रींह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां,
किन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयांस्तान्सेवते,
मधुमति स्वयमेव लक्ष्मीः।।११।।

हे त्रिपुर सुन्दरी मां! ह्रीं, ह्रीं आपके इस नाम का जप करने वाले भक्तों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। दिव्य मुकुट पहनी हुई मतवाले हाथियों से युक्त स्वयं माधुर्यमयी लक्ष्मी निरन्तर उसकी सेवा करती है।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि,
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाणि।
त्वद्वंदनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि,
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्।।१२।।

हे मां कमलनयनी! आपकी स्तुति, सम्पत्ति प्रदान करने वाली, इन्द्रियों को आनन्दित करने वाली, साम्राज्य प्रदान करने वाली एवं पापों को दूर करने वाली है, हे मां! निरन्तर ये सब मुझे ही दें अन्यों को नहीं।

कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य,
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य।
पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः,
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका।।१३।।

कल्पान्त के समय ताण्डव नृत्य करने वाले, खड्ग, परशु धारण करने वाले भगवान शंकर के लिए पाश, अंकुश, ईख का धनुष एवं पुष्पबाण को धारण करने वाली आप ही एकमात्र वह दिव्य मूर्ति शेष रहती हैं।

लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं,
तेजः परं बहुलकुंकुमपंकशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांकुशलावतंसं,
रूपं त्रिकोणमुदितं परमामृताक्तम्।।१४।।

हे माता! आपके शरीर पर लगे हुए लालिमा युक्त प्रगाढ़ कुंकुम से तथा किरिट और मुकुट से निकलती हुई किरणों से शोभित, त्रिकोण के मध्य में स्थित आपके दिव्य देह से मानो अमृतरस टपक रहा है। यह देह सदैव शिवजी में संलग्न रहे।

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं,
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं,
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः।।१५।।
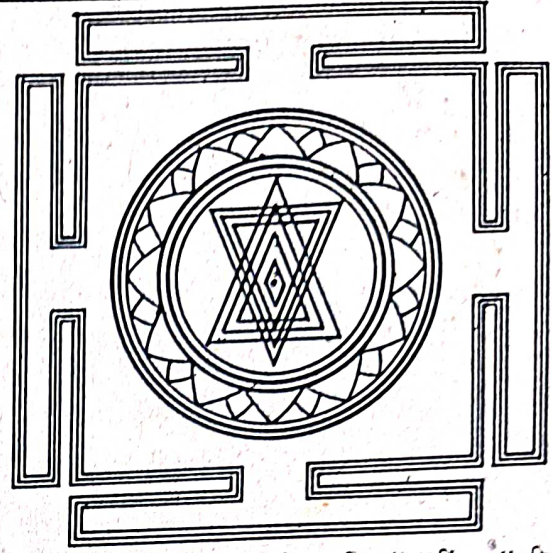
हे कमल पर निवास करने वाली मां! "ह्रींकार" ही आप का नाम है, आपका रूप है, आप के तेज से उत्पन्न हुए आकाशादि के परिणाम स्वरूप जगत आदिकारण है, जो ब्रह्मा, विष्णु द्वारा रचित एवं पालित होकर परमोच्च सुखदायक है।

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं,
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मंत्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरं स्थायिनी,
वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घ यशः।।१६।।

हे मां! जो साधक तीन ह्रींकार से सम्पुटित और विशिष्ट मंत्र से संदीपित इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है, तो राजा लोग उसके वशीभूत हो जाते हैं, लक्ष्मी स्थिर रहती है तथा उसकी वाणी निर्मल हो जाती है, तथा वह पृथ्वी लोक पर चिरकाल तक जीवित रहता है।

ऊपर मैंने भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा विरचित षोडशी स्तोत्र एवं साधना पद्धति प्रस्तुत की, यदि कोई साधक संस्कृत के पदों का उच्चारण करने में अपने को असमर्थ समझे या कठिनाई अनुभव करे, तो वह हिन्दी अनुवाद का पाठ कर सकता है, फिर भी संस्कृत के पदों का उच्चारण करना ही अधिक श्रेष्ठ व फलप्रद है। इस बात का ध्यान रहे कि जिन कमलगट्टे के बीजों को यज्ञ में समर्पित करें वे पूर्णरूप से श्री मंत्रों से सिद्ध व चैतन्य हों, ३ दिनों के इस लघु प्रयोग को कोई भी साधक सरलता पूर्वक अपने जीवन में अपना सकता है। साधना के उपरान्त यदि सम्भव हो तो एक कुमारी कन्या को भोजन अवश्य कराएं तथा जिस महत्वपूर्ण यंत्र को साधना में स्थापित किया था, उसे सम्मान पूर्वक पूजा स्थान में स्थापित कर दें। कहते हैं कि इस यंत्र का नित्यप्रति दर्शन ही अपने-आप में पूर्ण सौभाग्यदायक व दारिद्र्य विनाशक है। ◆

गीतिका कल्पित
दिल्ली

गुलशन में सबको जुस्तजू तेरी है!

उसने तो अजब रंग जमा रखा है,
हर इक को अपना गुलाम बना रखा है।

बहारों का कारवां, नजारों का समां, अपनों का दिल और सपनों की मंजिल. . . यही तो है वह मुकाम जहां पहुंच कर ये झुकी हुई पलकें कुछ कहने लगती हैं, अपने-आप से, जो किसी के ख्यालों में खोई हुई सी, अलसाई हुई-सी रहती हैं, और अपने-आप से बातें करती हुई यह कहने लगती हैं, कि अजीब होता है यह रंग, जो किसी को भी कैद कर डालता है, और यह रंग है "प्रेम" का, जो हर दिलों की धड़कनों में बसा है, कहीं हलका तो कहीं गहरा, तो कहीं और गहरा, जो कैद कर लेता है किसी की भी धड़कनों को, सांसों को।

तेरे जहां में आकर खो गए हैं दोनों,
दिल मुझको ढूंढ़ता है मैं दिल को ढूंढता हूं।

— और जब ऐसा होता है कि यह दिल खुद से बेखबर होकर धड़कने लगे, तो अनजान हो जाता है वह अपने-आप से, जो किसी के बंधन में कैद होकर रह गया हो, उसे लगता है, कि जैसे उसका ही कुछ कहीं खो गया हो, और इसी उलझन में, इसी बेचैनी में वह कहीं अपने-आप को ही ढूंढने लगता है।

तलाशे यार में जो ठोकर खाया नहीं करते,
वह अपनी मंजिले मकसूद को पाया नहीं करते।

— वह एक ऐसी मंजिल की ओर बढ़ने लगता है जिसे पा लेने के लिए वह बेताब हो, उसे खुद ही यह मालूम नहीं, कि वह किस की तलाश में बढ़ा चला जा रहा है, और उसे तलाश करते-करते इस रास्ते पर उसे ठोकरों और प्रताड़नाओं के अलावा कुछ नहीं मिलता, लेकिन जो इस राह पर बढ़ा नहीं, जिसने इस रास्ते पर कदम नहीं रखा, जो बेचैन नहीं हुआ, जिसने दु:ख क्या होता है, दर्द क्या होता है, इसका अहसास नहीं किया, तो फिर वह अपने मुकाम तक भी नहीं पहुंच सकता, तो फिर वह अपनी मंजिल को पा नहीं सकता।

दीवानगी-ए-इश्क बड़ी चीज है सीमाब,
यह उसका करम है जिसे दीवाना बना दे।

— जो इस मंजिल को, इस मुकाम को पा लेता है, वही अहसास कर पाता है इस मिठास को, इस आनन्द को, और जिसने भी जीवन में इस रस को चखा है, वही बयां कर पाता है इस अहसास को, वह जो उसे दीवाना बना

देता है, एक अजीब सी खुमारी, एक अजीब सी बदहवासी, एक अजीब से आनन्द में डूब जाता है वह, जिसे अपने तन-मन का ही होश नहीं, ऐसा ही दीवाना कर देने वाला होता है यह बेशकीमती शब्द, जिसे "प्रेम" कहते हैं। यह एक छोटा-सा शब्द ही पूरे जीवन को बदल डालता है, और जिसने इसे अपनी सांसों में, अपनी धड़कनों में पनाह दी है, वही जान पाया है इसके राज को, इसके गूढ़ अर्थ को।

गुलशन में सबको जुस्तजू तेरी है,
बुलबुल की जुबां पे गुफ्तगू तेरी है।
हर रंग में जलवा है तेरी कुदरत का,
जिस फूल को सूंघता हूं खुशबू तेरी है।

— प्यार एक मिठास है, एक हसीन तराना है, एक ऐसी नायाब मंजिल है, जहां पहुंच कर दिल बेसुध हो जाता है, उसे हर क्षण, हर जगह एक ही रंग दिखाई देने लगता है, और हर जगह यही तो रंग बिखरा है इस प्रकृति में, इस सृष्टि में. . . और वह है "प्रेम"।

यह गर किसी से हो जाए, तो सारी सृष्टि उसे प्रेममय दिखाई देने लगती है, क्योंकि वह उस आनन्द में डूब कर प्रेम की पराकाष्ठा तक पहुंच जाता है, जहां उसे वही सौन्दर्य चारों ओर बिखरा हुआ दिखाई देने लगता है, उसे हर फूल, हर पत्ती में उसी का अक्स दिखाई देने लगता है। हर चीज में उसे उसी का रंग बिखरा हुआ दिखाई देता है, वह जिस हवा को, जिस पुरवाई को महसूस करता है उस पुरवाई, उस हवा के झोंके में भी उसी की खुशबू, उसी की महक उसके जीवन को सुवासित कर आनन्द और रस से भर देती है।

गुलिस्तां को लहू की जरूरत पड़ी,
सबसे पहले ही गर्दन हमारी कटी।
फिर भी कहते हैं मुझसे ये अहले चमन,
ये चमन हमारा है तुम्हारा नहीं।।

मुहब्बत किसी कयामत से कम नहीं होती। करोड़ों वर्ष से चला आ रहा यह शब्द आज भी इसी मुहब्बत की कहानी को कह रहा है, कि यह उन्हीं की चाहतों का कारवां है, यह दिल जो डर-डर कर धड़क रहा है, वह इसीलिए कि यह अपना होते हुए भी अपना नहीं है, और यह बात जो खुद से बेखबर है, वह दिल की धड़कनें कह देती हैं, कि ये तुम्हारी नहीं हैं।

मौत से भी जो न मर सका,
उसको नजरों से मारा गया।
इश्क जिसने किया सोच ले,
वह तो बेमौत मारा गया।।

— जिसे मौत भी न मार पाई हो, उसे उसकी मदभरी आंखों ने मारा डाला है. . . उसे एक नजर देखा है और आज तक मुझे होश नहीं, ऐसा ही होता है यह प्रेम, जो अपने-आप को भी भुला देता है, जो खुद को मिटा देता है, जो खुद का परिचय ही भुला देता है, तब उसे कुछ भान नहीं रहता, न अपना, न अपनी देह का और न अपने अन्तर्मन का।

हर रोज लुटा करती है यहां इश्क की दौलत,
जो सर कटा सकेगा वही कुछ पा सकेगा।

— मुहब्बत एक ऐसी धड़कन होती है, जो तन के साथ-साथ मन का भी गठबन्धन है। वैसे तो क्या नहीं होता इस भरी दुनियां में, प्रेम के नाम पर सैकड़ों मिलन जुदाई में बदल जाते हैं, लेकिन वह प्रेम न होकर हवा का एक झोंका कहलाता है, जो तेजी से आता है और चुपचाप चला जाता है, क्योंकि वह घबरा जाता है, वह डर जाता है अपने-आप से।

प्रेम में तो आंसू, दुःख, दर्द, पीड़ा, कष्ट है ही, प्रेम को पाना तो तलवार की धार पर चलने के समान है और जो ऐसा कर पाता है, वह वो सब कुछ पा लेता है, जो उसकी चाहत होती है।

प्यार दर्द का दूसरा नाम है,
मौत के लिए मधुर पैगाम है।
जो करार को बेकरार कर दे,
जिन्दगी के नाम एक इल्जाम है।।

इश्क के मुकाम पर पहुंच कर दीवाने को बस इतना ही याद आता है, कि यह उसका मिलना है मुझसे, या फिर कयामत का मुकाम है।

ऐसा ही होता है उस प्यार का अहसास, जिसमें सिवाय दुःख-दर्द के और कुछ हासिल नहीं होता, इसीलिए दर्द को प्रेम का पर्याय माना जाता है।

जिसके सीने में एक चुभन नहीं है, जिसके जीवन में तड़फ नहीं है, बेचैनी नहीं है, दर्द नहीं है, तो फिर प्यार भी नहीं है।

जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते,
क्या तुमने मोहब्बत की हर रस्म उठा डाली।

— प्यार ऐसा ही होता है, जो न तो जीने देता है और न ही मरने देता है, वह एक ऐसा दर्द है, जो न तो बयां किया जा सकता है और न जो सीने में दफन करके रखा जा सकता है। इस तरह के हजारों-लाखों अफसाने देखने को मिलते हैं इस जहां में हमें हर पल हर क्षण, जहां प्रिय मिलन की आस को मन में संजोये यह प्रेमिका बार-बार अपने उस प्रेमी को देख लेने और उसे पा लेने को व्याकुल हो उठती है, और तब अनायास ही यह तड़फ उसके शब्दों में उसके होठों से व्यक्त होने लगती है।

बात बता रही हैं मुहब्बत में धड़कने दिल की,
किसी ने जैसे आजमा के देख लिया।

— व्याकुलता, इसी तड़फ, इसी बेकरारी को ये धड़कने बयां कर देती हैं एक दिन, जो न कह पायी यह जुबां अपने दिल से।

यही व्याकुलता और वेदना जब तीव्रता में बदल जाती है, तब वह सही मायने में प्यार कहलाता है, क्योंकि यह अहसास होने लगता है कि यह तड़फ, यह बेचैनी, यह वेदना किसी और की दी हुई है, जो मेरी ही धड़कन है, जो मेरी ही सांसें हैं।

निगाहें ताड़ लेती हैं मुहब्बत की अदाओं को,
छुपाने से जाने भर में शोहरत और होती है।

— जब यह दिल किसी की याद में जोर-जोर से धड़कने लगता है, तो चेहरे पर एक गुलाबीपन-सा छाने लगता है, जब आंखों में एक सरूर-सा आ जाता है, जब एक खुमारी सी चेहरे से झलकने लगती है, और जब यह दिल किसी के ख्यालों में गुम हंसने या रोने लगता है, तो यह स्पष्ट रूप से उस प्रेम की अभिव्यक्ति कर देता है, यही तो हैं वे अदाएं, जो उस प्रेम की प्रतिमूर्ति होती हैं, जो छिपाये नहीं छिपतीं, इसे जितना छिपाओ यह उतनी ही और उजागर होती है, क्योंकि इन आंखों को देखकर ही वह सब कुछ बयां होने लगता है, जिसे सीने में छिपा रखा था।

आया ही था ख्याल कि आंखें छलक पड़ीं,
आंसू किसी की याद से कितने करीब थे।

— प्रेम तो एक ऐसा ही मधुर स्पन्दन होता है, जिसके अहसास मात्र से ही ये आंखें भीग जाती हैं, और वे आंसू अश्कों से ढुलक कर राजदां बन जाते हैं, उस गम का।

इस तरह तड़पी हूं तेरी याद में,
सब्र भी आंसू बहाकर चल दिए।

— प्रेम में मिलन जितना सुखदायी होता है, विरह उतना ही दुःखदायी होता है, जिसमें प्रिय के साथ बिताये उन आनन्ददायक क्षणों की याद छिपी होती है, जिन्हें याद कर उस प्रेमिका का हृदय तड़फने लगता है, उसकी पलकों में भरे वे आंसू उसके सब्र की इम्तहां को भी पार कर जाते हैं, वह इतनी व्याकुल और बेचैन हो जाती है कि अपने उस प्रिय से एक पल भी दूर रहने की कल्पना नहीं कर पाती, न तो उसे रातों को नींद ही आती है और न ही दिन को चैन, और तब वह उस प्रिय से मिलनें के लिए आतुर हो उठती है, और उसके सब्र का बांध टूटने लगता है।

हम याद में जिसकी आह सब कुछ भूले,
उसने हमें भूल कर भी नहीं याद किया।

— प्रेम ऐसा ही होता है, जो खुद तो नहीं होता, लेकिन हो जाने के बाद यह लगने लगे कि कैसे इसके बिना इतने दिन कट गए? इसमें डूबकर व्यक्ति इतना मदमस्त हो जाता है कि वह अपने-आप को भी भुला बैठता है, और जब यह विरह की वेदना उसे अत्यधिक तड़पाने लगती है, तो वह यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि—

— क्या यही होता है प्रेम?

— क्या एक तरफा ही होता है प्रेम?

— क्या उस प्रिय को भी इतनी पीड़ा, इतना दर्द महसूस हुआ होगा?

— उसके मस्तिष्क में भावातिरेक के कारण ऐसे ही विचार घुमड़ने लगते हैं, वह यही सोचने लगता है कि जिसके लिए उसने खुद को मिटा दिया, क्या उसे एक बार भी मेरी याद नहीं आई?

यह विरह तो होता ही इतना दुःखदायी है, जो सहा नहीं जाता और न ही किसी से कहा जाता है।

कहने लगते हैं जवानी की कहानी जो कभी,
पहले हम देर तलक बैठ के रो लेते हैं।

— ऐसा ही दुःखदायी होता है यह विरह, जो दिल को दहला देता है, किन्तु विरह को ही दूसरे शब्दों में "प्रेम" कहते हैं। विरह तो प्रेम की पूर्ण सौन्दर्यता को अपने में समाहित किए हुए है, क्योंकि उसमें छिपी होती है मिलन की वे यादें, वह दासतां, जिसे याद कर आंखें भर आती हैं और दिल उस दर्द को महसूस कर रो पड़ता है, किन्तु विरह जीवन का आनन्द है, विरह उस प्रेम को बढ़ावा देने वाला है, अगर प्रेम में विरह नहीं है, तो वह प्रेम बेमानी है, अर्थहीन है, रसहीन है, क्योंकि विरह में ही छिपे होते हैं प्रेम के वे आनन्ददायक क्षण — उसका मिलना, उसका हंसना, उसका मुस्कराना, उसका चलना, उसका उठना, उसका देखना, और यही तो वे यादें होती हैं, जिन्हें याद कर पूरा जीवन कैसे कट जाता है, कुछ मालूम ही नहीं पड़ता, क्योंकि एक-एक दिन, एक-एक लम्हां मिलन की हसरतों में अजीब सी दीवानगी लिए हुए कटता है।

यही प्रेम है! एक-एक क्षण को पकड़ते हुए भी कुछ सहमे रहना, कि कहीं अगले ही पल मेरा प्रिय मुझसे बिछुड़ न जाए, जो मेरी आंखों का नूर बन गया है, कहीं वह बुझ न जाए, और इन बेकरारियों में, कभी-कभी तो जिन्दगी और मौत के बीच में, भुलाई नहीं जा सकतीं वे यादें, वे बातें जिन्हें दोहराने से आखें नम हो जाती हैं, जो एक कहानी न होकर जीवन की एक हकीकत बन जाती है, जिसे होठों से बयां करने पर वह पीड़ा, वह दर्द होना स्वाभाविक है।

— प्रेम एक बड़ा ही रहस्यमयी शब्द है, जिसकी तहों में छिपे हैं इसके होने के अर्थ।

प्यार. . . एक अहसास है. . . एक परम सत्य है. . . जीवन की एक मिठास है. . . बौद्धिक और शारीरिक दोनों की स्वीकृति है. . . अलौकिक है. . . सौन्दर्यमय है।

❋

महिलाओं में
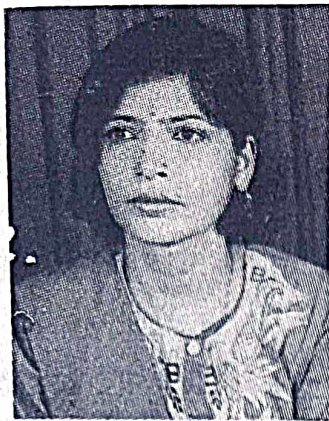
● डॉ० साधना
भोपाल

आज के युग में स्त्रियों का बांझपन एक अभिशाप हो गया है, और हजारों-लाखों महिलाएं इस समस्या से ग्रस्त हैं जिस कारण उनका जीवन हताश-निराश और बोझिल हो उठा है, और इस अभाव-ग्रस्त जीवन के सैकड़ों दुष्परिणाम हमें समाज में अक्सर देखने को मिलते रहते हैं। महिलाओं पर पड़ते इस दुष्प्रभाव को देखते हुए हमारे पत्रिका विभाग ने इस समस्या के निदान का उपाय जानने की जिज्ञासा डॉ० साधना के सामने प्रकट की।

इस बीमारी से निजात पाने के लिए जहां आयुर्वेद, एलोपैथिक विशेषज्ञ प्रयासरत हैं, वहीं होम्योपैथी में भी इसके आशावादी परिणाम देखने को मिले हैं। होम्योपैथी में सर्वाधिक सफलता से व्यवहार में लाई गई दवाओं से उसके 'साइड इफेक्ट' की सम्भावना नहीं रहती।

जैसा कि आप जानते ही हैं— डॉ० साधना भोपाल की एक सुविख्यात व कुशल होम्योपैथिक चिकित्सिका हैं, उनसे हाल ही में लखनऊ में हुई भेंटवार्ता के दौरान उन पाठकों की, जिन्होंने पत्रों द्वारा हमसे इसके समाधान प्राप्त करने चाहे थे, उनकी इसी ज़िज्ञासा को शांत करने की आकांक्षा हमने डॉ० साधना के सामने प्रकट की।

चूंकि डॉ० साधना किसी भी रोग की गहनता तक जाकर उपचार करने में विश्वास करने वाली चिकित्सिका हैं तथा हर पल, हर क्षण उनका यही प्रयास रहता है, कि जो भी रोगी उनके सम्पर्क में आये, वह पूर्णतः स्वस्थ होकर ही लौटे। उनकी इसी कुशलता को देखते हुए ही हमने उनसे महिलाओं के वांझपन से सम्बन्धित प्रश्नों का हल जानना चाहा, जिससे कि वे महिलाएं, जो इस समस्या से दुःखी एवं पीड़ित हैं, छुटकारा पा सकें।

उनसे हुई भेंटवार्ता के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं, जिससे कि पाठक वर्ग इसके लाभप्रद परिणाम प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

पत्रिकाः डॉ० साधना हम सबसे पहले आपको उन ढेरों पत्रों के द्वारा आई पाठकों की प्रशंसा व शुभकामनाएं दे रहे हैं, जिन औषधियों व उपचार के माध्यम से उन्होंने लाभदायक परिणाम प्राप्त किये हैं।

डॉ० साधनाः यह मेरे लिए अत्यंत ही गौरव और प्रसन्नता की बात है कि पाठक वर्ग मेरे द्वारा बताये होम्योपैथिक उपचार से लाभ प्राप्त कर रहा है, उनके द्वारा की गई प्रशंसा और सराहना के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देती हूं।

पत्रिकाः डॉ० साधना महिलाओं में बांझपन का मूल कारण क्या है?

डॉ० साधनाः संतान उत्पन्न करने में असमर्थता बांझपन कहलाती है। स्त्री-पुरुष दोनों के सहयोग से गर्भधारण होता है, इसमें किसी के भी अयोग्य रहने से बंध्यत्व रोग उत्पन्न हो सकता है।

पत्रिकाः क्या इसकी दोषी केवल स्त्री ही होती है?

डॉ० साधनाः नहीं! आमतौर पर यह कलंक स्त्रियों पर ही थोपा जाता है, परन्तु इसमें पुरुष भी बराबर का दोषी होता है। पुरुष के वीर्य में शुक्र कीट न होने या कम होने पर उसे पुरुषों का बंध्यत्व माना जाता है,, जिसे ऐजोस्परनिया या अलिगोस्परनिया कहते हैं।

पत्रिकाः डॉ० साधना यह बंध्यत्व कितने प्रकार का होता है?

डॉ० साधनाः महिलाओं में बंध्यत्व दो प्रकार का होता है-

१. शारीरिक बंध्यत्व २. विकृतिजन्य बंध्यत्व

पत्रिकाः इसके उत्पन्न होने के कारण क्या है?

डॉ० साधनाः शारीरिक और मानसिक बन्ध्यता के उत्पन्न होने के निम्न कारण हैः-

(1) शारीरिक बंध्यता –

शारीरिक बंध्यता के निम्न कारण हो सकते हैं—

(I) गर्भाशय ग्रीवा के विकार

निम्नलिखित विकार बंध्यत्व उत्पन्न कर सकते हैं। गर्भाशय ग्रीवा के मुंह का छोटा होना, गर्भाशय ग्रीवा का स्राव गाढ़ा हो जाना, गर्भाशय शोध। गर्भाशय की अन्तःकला का क्षय टी०बी० जनित शोध होना। गर्भाशय के अर्बुद, गर्भाशय गुहा की आकृति को बिगाड़ देते हैं।

(II) अत्यधिक छोटा गर्भाशय

गर्भाशय का अभाव, गर्भाशय का अपनी जगह से हट जाना अथवा आगे या पीछे की तरफ झुक जाना, गर्भाशय का अल्प विकसित होना।

(III) डिम्ब वाहिनियों के विकार

डिम्ब वाहिनियों के निम्नलिखित रोग बंध्यता के कारण हो सकते हैं।

'बंध्यत्व' नाम आते ही एक ऐसी स्त्री का स्वरूप सामने आता है, जो सामाजिक और मानसिक आघातों से जूझते हुए अपने भाग्य को कोस रही हो, पर यह आवश्यक नहीं कि बंध्यत्व की सारी जिम्मेवारी स्त्री पर ही हो, पुरुष भी . . .

बंध्यत्व जैसे कष्टप्रद रोग से भी निजात पाया जा सकता है. . . होम्योपैथी चिकित्सा के द्वारा।

डिम्ब वाहिनी शोध– इस रोग में डिम्ब वाहिनियों का मार्ग वन्द हो जाता है, जिससे उसमें अवरोध उत्पन्न हो जाता है। डिम्ब वाहिनी की कोई जन्मजात विकृति बंध्यता उत्पन्न करती है।

डिम्ब ग्रन्थियों के रोग– डिम्ब ग्रन्थि शोध, डिम्ब ग्रन्थियों के कार्य में गड़बड़ हो जाना, डिम्ब ग्रन्थि के ट्यूमर, डिम्ब ग्रन्थियों के कार्य में गड़बड़ी हो जाने से आवर्त में गड़बड़ी हो जाना।

पिट्युटरी, थाईराइड आदि अन्तःस्रावी ग्रन्थि के रोगों से अन्तःस्राव में असंतुलन पैदा हो जाता है, जिसके कारण डिम्ब क्षरण(ओब्लूयोशन) नहीं हो पाता, और स्त्री को संतान नहीं हो पाती।

(2) विकृतिजन्य बंध्यत्व –

चिन्ता, भय, पति से मन-मुटाव आदि मानसिक कारण अन्तःस्रावी ग्रन्थियों में असंतुलन उत्पन्न करके बंध्यता ले आते हैं।

एक प्रकार की बंध्यता इस तरह की होती है कि स्त्री को एक बार गर्भधारण हो चुका होता है, चाहे बच्चे का जन्म हुआ हो या गर्भपात हो गया हो, किन्हीं कारणों से वह गर्भधारण करने में असमर्थ हो जाती है। ये कारण निम्नलिखित हो सकते हैः- योनि-शोध, योनि-स्राव की अम्लता, गर्भाशय ग्रीवा शोध, डिम्ब-वाहिनी शोध, गर्भाशय में ट्यूमर, डिम्ब ग्रन्थि में अर्बुद, डिम्ब-ग्रन्थि के शोध आदि में कोई भी कारण बांझपन उत्पन्न कर सकता है, इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरुषों में ब्लड ग्रुप में असंगति हो जाने से भी बंध्यता हो जाती है।

पत्रिकाः डॉ० साधना हम यह जानना चाहते हैं कि ऐलोपैथी में तो डी० एन० सी० ऑपरेशन द्वारा जांच और परीक्षण के बाद ही उपचार विधि निश्चित की जाती है, पर क्या होम्योपैथी में ऐसा कोई निदान है, जिसके अनुसार उसकी जांच कर उपचार विधि निश्चित की जा सके?

डॉ० साधनाः होम्योपैथी चिकित्सा के क्षेत्र में भी इस प्रकार का प्रयास चल रहा है कि दुष्कर स्थितियों में ऑपरेशन कर शीघ्र रोग निवारण व चिकित्सा किया जा सके।

फिलहाल तो रोगी के लक्षणों के आधार पर ही दवा का निर्धारण किया जाता है। होम्योपैथी में तो बिना किसी ऑपरेशन के, बिना किसी साइड इफेक्ट के डर के उन औषधियों को इस्तेमाल में लाया जा सकता है, जो उस रोग को भीतर ही भीतर जड़मूल से नष्ट करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

पत्रिकाः डॉ० साधना इस रोग से मुक्ति के लिए कौन-कौन सी औषधियों का सेवन करना चाहिए, कृपया बतायें।

डॉ० साधनाः इस रोग से मुक्ति पाने के लिए निम्न औषधियों का सेवन किया जाना चाहिए-

बोरेक्स ६ शक्ति, मर्कसाल २०० शक्ति

जरायु में श्लेष्मा झिल्ली के बढ़ जाने के कारण मासिक धर्म में कष्ट होता है। श्लेष्मिक झिल्ली के टुकड़े निकलते हैं। श्वेत प्रदर पानी की तरह निकलता है। जरायु के दोष के कारण बंध्यत्व में इसी औषधि के सेवन से बंध्यत्व दोष दूर होकर गर्भ स्थिति सम्भव हो जाती है। संभोग के आधा घण्टे पूर्व बोरेक्स ६ शक्ति एक मात्रा और आधा घण्टे बाद दूसरी मात्र देनी चाहिए, परन्तु पुरुष के विधि दोष के कारण गर्भ न ठहरता हो, तो संभोग के आधा घण्टे पहले मर्कसाल और दूसरी मात्रा आधा घण्टे बाद देनी चाहिए। बोरेक्स लेने से स्त्री के बहुत से गर्भाशय संबंधी दोष दूर हो जाते हैं।

सिपिया २००

यह भी बंध्यत्व की मुख्य औषधि है। मासिक धर्म अनियमित होता है। स्त्री को प्रदर और कब्ज होता है, ऐसी स्त्री का शरीर ऊपर से नीचे तक एक सा होता है। नितम्ब प्रदेश में चौड़ापन नहीं होता।

आर एम यू नेट्टो नेट

बंध्यत्व की यह भी दवा है। यह जरायु एवं डिम्ब ग्रन्थि के अनेक रोगों को दूर कर देती है। स्त्री के जननांगों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

जरायु के ट्यूमर पर इस औषधि का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। जरायु की पुरानी सूजन, स्थानच्युत होना, जरायु की ग्रीवा और योनि-पथ के जख्म आदि इसी से ठीक हो जाते हैं। इनके ठीक हो जाने से गर्भ सरलता से धारण हो जाता है।

एलेट्रिस फैरिनोस (मूल अर्क)

अगर जरायु की कमजोरी के कारण गर्भ न ठहर रहा हो, तो यह दवा गर्भाशय को सबल बना देती है।

बैराइटा कार्ब ३०

यदि डिम्ब ग्रन्थि के सूज जाने से बंध्यत्व, स्तन सूख जाते हैं, तो इसका सेवन करना चाहिए।

थूजा ३०

प्रदर के कारण बंध्यत्वों की टांगों पर बाल हो जाना और जनन अंगों पर दुर्गन्धित पसीना आता हो, तो इससे लाभ होता है।

प्लेटिना ३०

अत्यधिक कामेच्छा के कारण गर्भ न ठहरता हो।

ओनोस्मोडियम ३०

स्त्री में कामेच्छा एकदम से नष्ट हो जाती है।

थ्लेस्पि बसी पैस्टोरिस

मूल अर्क के तीन बूंद दिन में एक बार देने से गर्भाशय के अनेक रोग दूर हो जाते हैं। ऋतुस्राव के अतिरिक्त जरायु से रक्तस्राव होता है।

पत्रिकाः डॉ० साधना आप उन महिलाओं के लिए, जो इस रोग से पीड़ित हैं, कुछ कहना चाहेंगी?

डॉ० साधनाः मैं अंत में यही कहना चाहूंगी, कि वे महिलाएं निराश न हों, जो इस प्रकार की समस्या से ग्रस्त हैं, क्योंकि इन उपरोक्त औषधियों के सेवन से वे इस बीमारी से छुटकारा पा सकती हैं, न तो इसके लिए किसी डी० एन० सी० ऑपरेशन की आवश्यकता है और न ही किसी प्रकार के इन्जेक्शन की। ये औषधियां पूर्णतः प्रामाणिक हैं, और इनका सेवन कर कई महिलाओं ने इससे संतान उत्पन्न लाभ भी प्राप्त किये हैं, अतः वे महिलाएं प्रसन्नचित्त रहें तथा निःसंकोच इन औषधियों का सेवन करें, और ऐसा कर वे अभावयुक्त जीवन से मुक्ति पाकर खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकती हैं, यह उपचार उनके लिए लाभदायक व सफलतादायक सिद्ध होगा।

पत्रिकाः डॉ० साधना आपके इस प्रकार के विचारों व इस रोग से सम्बन्धित उपायों की जानकारी के लिए पत्रिका के समस्त पाठकों की ओर से हम आपको धन्यवाद देते हैं, और पूज्य गुरुदेव जी से प्रार्थना करते हैं कि वे आपको अपना विशेष आशीर्वाद प्रदान करें, जिससे आपका जीवन सुखी-समृद्ध व उन्नति की ओर अग्रसर हो सके।

हमारे पाठकों से भी यह अनुरोध है कि वे अपनी समस्याओं से सम्बन्धित पत्र हमें भेजते रहें, जिससे कि हम उनकी समस्याओं अथवा जटिल बीमारियों को दूर करने का उपाय अपनी पत्रिका में प्रकाशित कर उन्हें रोग ग्रस्त जीवन से मुक्ति दिला सकने में सहायक हो सकें। आप स्वयं भी डॉ० साधना से पत्र व्यवहार कर किसी भी प्रकार की अन्य बीमारियों से निदान की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ० साधना
शॉप नं० २५, छठा बस स्टॉप, सुभाष मार्केट
शिवाजी नगर, भोपाल (म. प्र.),
फोन : ०७५५-५५४९२५

❋

"मातृकाओं के द्वारा बालक कब और कैसे-कैसे कष्ट पाता है तथा उन्हें दूर करने हेतु अनेक सरल प्रयोगों का भी सम्पूर्ण विवेचन इन्हीं ग्रंथों में मिलता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि यह विवेचन प्राचीन ठोस तथ्यों पर आधारित है और अन्धविश्वास की सीमा से परे है . . . "

भारतीय आयुर्वेदिक ग्रंथों में एक प्रकरण **बाल रोग चिकित्सा** का भी है, जिसके अंतर्गत बालकों पर (बच्चों पर) समय-समय पर प्रभाव डालने वाली विभिन्न मातृकाओं का वर्णन मिलता है। इन्हें भले ही "मातृका" नाम दिया गया है, फिर भी वर्तमान काल में वर्णित विभिन्न जीवाणुओं और विषाणुओं में से ही ये कुछ हैं। कई विषाणुओं और जीवाणुओं को राक्षस, पिशाच, भूत इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है। पुनः इन मातृकाओं के द्वारा बालक कब और कैसे-कैसे कष्ट पाता है तथा उन्हें दूर करने हेतु अनेक सरल प्रयोगों का भी सम्पूर्ण विवेचन इन्हीं ग्रंथों में मिलता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि **यह विवेचन प्राचीन ठोस तथ्यों पर आधारित है और अन्धविश्वास की सीमा से परे है।**

"भैषज रत्नावली" में बाल रोग चिकित्सा प्रकरण के अन्तर्गत रावणकृत "कुमार तंत्र" के एकांश को प्रस्तुत करते हुए निम्न बातें स्पष्ट रूप से वर्णित हैं—

बालक को जन्म के पहले दिन, पहले मास अथवा पहले वर्ष के प्रारम्भ के दिनों में **''नन्दा''** नाम की मातृका पकड़ती है। इसके द्वारा ग्रहीत होने पर बालक को सर्वप्रथम ज्वर हो जाता है, वह अशुभ शब्द करता है, उसे बार-बार डकारें आती हैं, वह वमन करने लगता है तथा दुग्ध नहीं पीता है।

जन्म के दूसरे दिन, दूसरे मास या दूसरे वर्ष के प्रारम्भ के दिनों में **''सुनन्दा''** नामक मातृका बालक को ग्रहण करती है, उसकी पकड़ में आते ही बालक आंखें बंद करता है, उसका शरीर कांपता है, वह नींद नहीं लेता है, वह रुदन करता है, वमन करता है, वह दुग्धपान बंद कर देता है।

जन्म के तीसरे दिन, तीसरे मास अथवा तीसरे वर्ष के आरम्भ के दिन **''पूतना''** नामक मातृका बच्चे को पकड़ती है, उसके द्वारा ग्रहीत होते ही बच्चे को ज्वर हो जाता है, उसका शरीर रह-रह कर कम्पन करता है, वह दुग्धपान नहीं करता है, हाथों की मुट्ठियां बांधता है, रोता है तथा ऊपर को देखता है।

जन्म के चौथे दिन, चौथे मास या चौथे वर्षारम्भ के दिन **''मुख मुण्डिका''** नामक मातृका बच्चे को पकड़ती है, इसके परिणाम स्वरूप बच्चे को पहले ज्वर आता है, बच्चा नेत्रों को बंद रखता है, दुग्धपान नहीं करता है, रुदन करता है, सोता रहता है तथा अपनी मुष्टिका को कस कर बांधता है।

जन्म के पांचवें दिन, पांचवें मास, अथवा पांचवें वर्षारम्भ के दिन **''कटपूतना''** नामक मातृका बालक को पकड़ती है, इसके द्वारा ग्रहीत होने पर प्रथम तो बालक को ज्वर होता है, शरीर कांपता है, दुग्ध नहीं पीता है तथा मुष्टिका बांधता है।

जन्म के छठे दिन, छठे मास, छठे वर्षारम्भ के दिन **''शकुनिका''** नाम की मातृका बच्चे को ग्रहण करती है। इसके कारण बच्चे को प्रथम तो ज्वर होता है, वह शरीर को तोड़ने की जैसी चेष्टा दिखाता है, मुष्टि बांधता है, रात-दिन उठ-उठ कर बैठना चाहता है तथा बारम्बार ऊपर की ओर देखता है।

जन्म के सातवें दिन, सातवें माह अथवा सातवें वर्षारम्भ के दिन में **''शुष्करेवती''** नामक मातृका बच्चे को ग्रहण करती है। इसके परिणाम स्वरूप उसे ज्वर होता है, बच्चा शरीर को कंपाता है, मुष्टि बांधता है तथा रुदन करता है।

जन्म से आठवें दिन, आठवें मास अथवा आठवें वर्ष के आरम्भ में **''अरुर्यका''** नाम की मातृका बच्चे को ग्रहण करती है, इसके द्वारा ग्रहीत होने पर बच्चे को ज्वर होने के साथ-साथ उसके शरीर से गिद्ध की गंध के समान दुर्गन्ध आती है, वह दुग्ध अथवा भोजन नहीं लेता है तथा शरीर को कंपाता है।

जन्म के नवें दिन, नवें मास अथवा नवें वर्ष के आरम्भ के दिन **''सूतिका''** नामक मातृका बालक को ग्रहण करती है, इसके कारण पहले बालक को ज्वर आता है, वह बार-बार वमन करता है, अंगों को तोड़ता सा प्रतीत होता है, वह मुट्ठी बांधता है तथा उसे निद्रा अधिक आती है।

जन्म के दसवें दिन, दसवें मास अथवा दसवें वर्ष के आरम्भ के दिन "निर्ऋता" नाम की मातृका बालक को ग्रहण करती है। इसके कारण पहले बालक को ज्वर आता है, वह शरीर को कंपाता है, वमन करता है, रोता है, मुष्टिका बांधता है तथा बार-बार मलमूत्र का त्याग करता है।

जन्म के ग्यारहवें दिन, ग्यारहवें मास अथवा ग्यारहवें वर्ष के प्रारम्भिक दिनों में **''पिलिपिच्छिका''** नामक मातृका बच्चे को पकड़ती है। इसके कारण उसे ज्वर आता है, वह दुग्ध तथा आहार नहीं लेता है, ऊपर को देखता है तथा वमन करता है।

जन्म के बारहवें दिन, बारहवें मास या बारहवें वर्ष के आरम्भ के दिन **''कालिका''** नामक मातृका बच्चे को पकड़ती है, इसके परिणाम स्वरूप पहले तो बच्चे को ज्वर होता है, बच्चा हंस कर बोलता है, अंगुलियों के द्वारा समीपस्थ मनुष्यों को डराता है अथवा प्रताड़ित करता है, पैरों तथा हाथों को उठाकर पटकता है, जोर से सांस लेता है, बार-बार वमन करता है तथा आहार ग्रहण नहीं करता है।

शास्त्रों में उपरोक्तानुसार जनित बाधाओं को दूर करने हेतु कई प्रकार के उपचारों का वर्णन भी है। उन्हीं में मुरामांसी, जटामांसी, बच, छैलछबीला, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, कचूर, चम्पक पुष्प और मोथा — ये सर्वौषधि गुण की औषधियां हैं। इनके अर्द्धश्रृत क्वाथ के द्वारा स्नान कराने से बच्चों के सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं तथा गृह, राक्षस और पिशाचादि जनित विकारों का शमन होता है, उनकी आयु तथा शरीर क्रान्ति में वृद्धि होती है। यह भी कहा गया है कि, माषपर्णी और गन्धबाला — इनका अर्धावशेष क्वाथ बना कर उससे बच्चे को स्नान कराने से तथा सप्तवर्ण हरे पत्ते, हरिद्रा और लाल चन्दन जल के साथ पीस कर शरीर पर लेप करने से ये दोष नष्ट होते हैं।

इसी प्रकार **''शारंगधरसंहिता''** में भी एक अत्यन्त सरल प्रयोग का वर्णन मिलता है, जिसके माध्यम से उपरोक्त बाधाओं से बालकों की रक्षा की जा सकती है। इस प्रयोग में बताया गया है कि नीम के पत्र, बड़ी कटेली के फल, मिर्च, हींग, जटामांसी एवं बिनौले इन सबको थोड़ी -थोड़ी मात्रा में लेकर मोटा-मोटा कूट लेवें तथा इसे घी से स्निग्ध करके, अग्नि में डालकर इसका धूम्र घर भर में घुमा दें अर्थात् धूनी दें। इस धूम्र प्रयोग से पिशाच, ग्रह, राक्षस और उनसे होने वाली बाधाएं नष्ट होती हैं। शास्त्रोक्त कथन है मातृका दोष उत्पन्न होने की स्थिति में इसका निवारण बालक को **''चैतन्य मातृका शान्ति यंत्र''** पहना देने से मातृका प्रभाव समाप्त होता है, आवश्यकता है यंत्र धन्वन्तरी मंत्रों से चैतन्य और सम्पुटित हो।

उमेश पाण्डे
इन्दौर (म०प्र०)

आदिकाल से ही मानव व ज्योतिष का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। यह विद्या आज से हजारों वर्ष पूर्व जितनी प्रामाणिक थी आज भी उतनी ही प्रामाणिक है. . .

● इन्द्रजीत सिह
हापुड़ (उ. प्र.)

विश्व के सारे कार्यकलापों से सम्बन्धित विषयों को ज्योतिष शास्त्र में १२ भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग के मुख्य तीन-तीन विभाग हैं, यथा— जीव(जीवन सम्बन्धित), धातु, जड़ सम्बन्धित और मूल(भूगर्भ सम्बन्धित), इन विषयों में मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों के अनुभवों का समावेश है। इन १२ भागों को ज्योतिष में "भाव" का नाम दिया गया है। प्रत्येक भाव के विषयों को छोट-छोटे समूहों में बांटा गया है। प्रत्येक समूह के अंतिम निर्णय बताने वाले विषय के नाम को भाव के पर्यायवाची नाम से जाना जाता है, जैसे— प्रथम भाव को तनु, आद्य, जन्म, उदय आदि के नाम से पुकारा जाता है।

इन भावों में छठवां भाव मुख्यतः रोग से सम्बन्धित है। इस भाव को रोग, अग, भय, रिपु, नास्त्र, क्षत इत्यादि नामों से पुकारा गया है। इस भाव को जातक के शरीर के रोगों से सम्बन्धित होने के कारण रोग के नाम से जाना जाता है। इसके अधिपति ग्रह को "रोगेश" कहते हैं। भाव और अधिपति को जोड़ने वाली कड़ी "राशि" कहलाती हैं। १२ राशियां भावों का प्रतिनिधित्व करने के लिए हैं। जन्म समय के अनुसार जन्म लग्न की राशि को प्रथम भाव का प्रतिनिधित्व मिलता है, शेष भावों को शेष राशियों से क्रमपूर्वक प्रतिनिधित्व मिलता है। राशियां प्रत्येक भाव के विषयों को सीमित करती हैं।

"भाव" शब्द कोष के समान हैं और "राशि" शब्द कोष का सार्थक सार। राशियां प्रत्येक भाव को व्यक्तिगत रूप देती हैं,

❀❀❀

जातक की कुण्डली में छठा भाव रोग से सम्बन्धित होता है। इस भाव के द्वारा प्रधानतः एक्सीडेन्ट, शत्रु, बीमारी, मानसिक व्याघात तथा माता-पिता , पुत्र व भाई का भाग्य- दुर्भाग्य का विचार किया जाता है।

जन्मकुण्डली काल की घटनाओं की श्रृंखला मात्र नहीं है। काल की गति के आधार पर ही जातक के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट करता है कि . . .

❀❀❀

एक आकार देती हैं, इस प्रकार एक क्षेत्र का निर्माण होता है। भाव महत् का पर्याय है, वहां राशि विशेष का। राशि भाव पर आवरण के समान है। भाव में सब कुछ है, परंतु एक व्यक्ति विशेष के लिए कुछ भी नहीं, शून्य भी नहीं है, सब कुछ अव्यक्त है, पर जो कुछ भी है वह एक अनुक्रमणिका मात्र है।

इसी ज्ञान के आधार पर जातक के जीवनयापन के वातावरण का प्रतिरूप बनता है। इस प्रक्रिया का आधार है नासदीय सूत्र, और प्रतिरूप है जन्मकुण्डली। इसे प्रयोग में लाने के लिए जो विद्या है, वह तैत्तरीय ब्राह्मण के पुरुष सूक्त में दी हुई है।

जगत का क्रियात्मक रूप "विराट पुरुष" के रूप में बनाया। यही पुरुष 'पुरुष सूक्त' का विषय है। इसी विराट पुरुष की समय के आयाम पर पड़ने वाली छाया को ज्योतिष ने नाम दिया है 'कालपुरुष'।

कालपुरुष का स्वरूप

कालपुरुष का आकार मनुष्य के समान है, उसके विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व राशियां और नक्षत्र करते हैं। **मेष** राशि के कोण में समाये नक्षत्र उसका मस्तक हैं, जहां **वृष** राशि है वह मुख मण्डल, **मिथुन** राशि इसका वक्षस्थल और **कर्क** राशि इसका हृदय है, पेट का प्रतिनिधित्व **सिंह** राशि, कटि का **कन्या** राशि, नाभि के नीचे का भाग **तुला,** जननेन्द्रियां और मलद्वार का **वृश्चिक**, उरु प्रदेश का **धनु,** जांघों का **मकर,** पैरों (घुटनों) का **कुम्भ** और पद तालों का **मीन** राशि प्रतिनिधित्व करती है।

"उस कालपुरुष की आत्मा सूर्य है, चंद्रमा मन है, मंगल उसकी सामर्थ्य और शक्ति है, बुध वाणी है, बृहस्पति उसका ज्ञान है, शुक्र कामेच्छा और शनि उसकी वेदना है।"
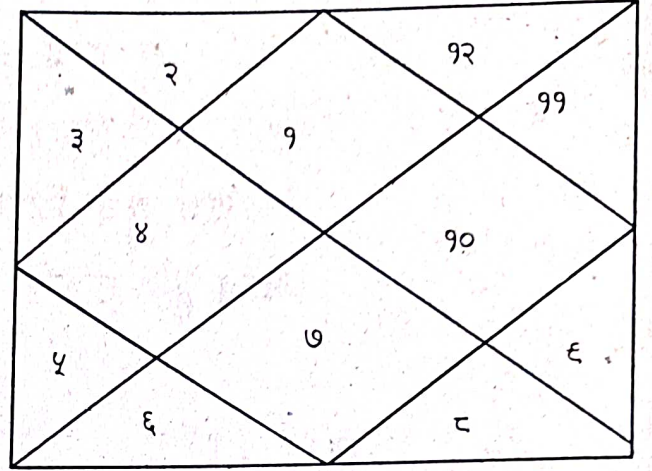
जिस राशि पर क्रूर या पापी ग्रहों (सूर्य, मंगल, क्षीण चंद्र, शनि, राहू, केतु) का प्रभाव या युति होती है, वही अंग कमजोर होकर रोगग्रस्त होता है। जातक की "जन्मकुण्डली" और "वर्षफल कुण्डली" जो भाव, राशि, क्रूर एवं पापी ग्रहों से आक्रान्त होती है, उसके शरीर का वही अंग रोगी होता है।

छठा भाव

कुण्डली में छठा भाव रोग से सम्बन्धित है। **प्रश्न शिरोमणि** के अनुसार—

". . . . लग्नेश पाप ग्रहों के साथ छठे, आठवें १२ वें स्थान में हो, तो उस जीव के शरीर को सुख नहीं होता तथा छठे, बारहवें, आठवें स्थान के अधिपति ग्रह अपनी राशि के हों, तो भी शरीर-सुख नहीं होता है। जो लग्नेश निर्बल हों और पाप ग्रह लग्न में हों, तो जीव अधिक रोगी रहता है. . . ।"

रोग से सम्बन्धित भावों को तीन समूहों में बांटा जा सकता है, जो निम्न हैं–

(क) तनु भाव, यानी प्रथम भाव, तथा इसके सहायक भाव ५ और ६ प्रबल एवं शुभ होने पर रोग से रक्षा करते हैं।

(ख) तीसरा, छठा, आठवां, ग्यारहवां तथा बारहवां भाव रोगकारक हैं।

(ग) चौथा भाव, यह भाव सुखकारक है। प्रबल चौथा भाव रोगमुक्ति दिलाता है।

जन्मकुण्डली के विवेचन से पता चलता है रोग का प्रकार, परंतु कब रोग शरीर में होगा, इसका पता नहीं लगता। इसके

लिए "काल" को जानना होगा। **नासदीय सूत्र** और **पुरुष सूक्त** के मन्थन द्वारा काल के गुणों का पता चलता है। यथा-

(क) काल घटनाओं की श्रृंखला मात्र है।

(ख) काल अंतहीन धारा प्रवाह के मानक से ज्योतिष में दशा पद्धति का अविर्भाव हुआ। दशा पद्धति गति प्रधान है तथा काल की गति ही इसका आधार है।

दशा पद्धति

प्राचीन काल से भविष्य कथन के लिए दशा पद्धति पर शोध होते आए हैं, इसका मुख्य कारण था – ग्रहों की सही स्थिति का निर्णय न होना या उनके मान में दृग तुल्य स्थिति से अशुद्धता। बहुत सी दशाओं की खोज हुई और उनमें से कई विलुप्त हो गई। प्रत्येक दशा का विवरण न देकर उनके प्रणायण के आधारों पर विचार करने पर तीन प्रकार के आधार दशाओं के हैं, यथा–

(क) चंद्रमा के नक्षत्र भुक्त भोग्य पर आधारित जैसे विंशोत्तरी, काल चक्र, अष्टोत्तरी आदि।

(ख) भाव परक दशाएं, जो लग्न से चलें, जैसे जैमिनी प्रणीत चर राशि दशा, स्थिर राशि दशा, वर्ण दशा आदि।

(ग) वर्षफल आधारित दशा, जैसे लाल किताब के ग्रहों का ३५ वर्षीय चक्कर।

इन दशाओं में अर्वाचीन ज्योतिषी विंशोत्तरी दशा को अधिक प्रयोग में लाते हैं, यह पराशरीय है। इसके फल कथन के लिए पराशर प्रणीत, **भाव मञ्जरी** आदि ग्रंथों में काफी कुछ दिया है। रोग के सम्बन्ध में इस पद्धति में षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश की दशा भुक्ति में इन ग्रहों का या मारकों के संचार पर ध्यान दिया जाता है।

मेरा अपना अनुभव है कि वर्षफल विंशोत्तरी(या अष्टोत्तरी, जो भी समीचीन है जातक के लिए) और कालचक्र (नवांश दशा) के बीच तारतम्य बैठा कर भविष्यफल का निर्णय देश, काल, पात्र को ध्यान में रखकर करना चाहिए। यदि इनसे भी किसी जातक के भूत, वर्तमान का तारतम्य न बने, तब जन्मकुण्डली की विशेष जांच द्वारा (क) पितृ ऋण (ख) अभिशप्त या (ग) पैतृक मकान कुण्डली का निर्णय करके फल में तारतम्य बैठाना चाहिए।

प्रश्न मार्ग द्वारा यदि किसी की जन्म कुण्डली न हो, तो प्रश्न कुण्डली बना कर रोगी के रोग की जांच निम्न प्रकार से की जा सकती है। जिस समय किसी रोगी के स्वास्थ्य लाभ सम्बन्धी प्रश्न पूछा जाए, उस समय की प्रश्न कुण्डली बनाकर निम्न प्रकार फल कथन करें:-

(क) दशम भाव से रोगी का विचार,

(ख) सातवें भाव से रोग का विचार,

(ग) लग्न से चिकित्सक का विचार,

१. द्वादश भाव और शरीर के अंग

छठे भाव की राशि से यदि उस पर पाप प्रभाव है(पाप ग्रहों की युति या दृष्टि है) तो वह अंग बलहीन और रोगी होगा। गोचर में षष्ठेश जिस-जिस राशि में संचार करेगा, उससे सम्बन्धित अंग रोग पीड़ित होंगे। नीचे अंगों और राशियों का सम्बन्ध दिया जा रहा है:-

राशि	शरीर के भाग
मेष	सिर, चेहरा, मस्तक।
वृषभ	गर्दन, कण्ठ, गले का भीतरी भाग, गिल्टियां।
मिथुन	कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाओं की हड्डियां और उनमें बहता खून।
कर्क	छाती, पेट के अंग, छाती की हड्डियां।
सिंह	पीठ, हृदय, रीढ़ की हड्डी, आमाशय।
कन्या	जिगर, तिल्ली, गुर्दे, बिना जुड़ी पसलियां।
तुला	चमड़ी, आंतें।
वृश्चिक	लिंग या भग, गुदा।
धनु	जंघाएं, कमर का निचला भाग, नाड़ियां।
मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़।
कुम्भ	पांव, टखने।
मीन	एड़ी, पञ्जा, तलुए।

२. ग्रह और उनसे सम्बन्धित अंग नीचे दिए हैं-

ग्रह	शरीर के भाग
सूर्य	हृदय, रक्त, मस्तिष्क, स्त्रियों की बाईं और पुरुषों की दाईं आंख।
चंद्र	स्त्री की दाईं, पुरुषों की बाईं आंख, स्तन, आंतें, लसीका।
मंगल	नाक, ललाट, स्नायु और पाचन संस्थान।
बुध	नाड़ियां(रक्त एवं मूत्र वाहिनी) फेफड़े, जीभ, भुजाएं, मुंह, रोएं।
बृहस्पति	दाहिना कान, जिगर।
शुक्र	ठोड़ी, वर्ण, बायां कान, गिल्टियां।
शनि	हड्डियों के जोड़, दांत, हड्डियां, कफ, घुटना।

३. छठे भाव में बैठे ग्रहों या षष्ठेश से संबंधित बीमारियां-

ग्रह	बीमारियां
सूर्य	बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बीमारियां, आंखों की बीमारियां, चर्म रोग, घाव, जलना, दौरें पड़ना।

दैनिक साधना विधि
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
मूल्य : १०/-
(डाक व्यय अतिरिक्त)
जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं और उदय होता है नये, श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।
क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?
– विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
– क्या निरन्तर पूजा, अर्चना के बाद भी आपको फल- प्राप्ति नहीं होती है?
– स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
– जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
– हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में दैनिक साधना का विधान ।
परम पूज्य गुरुदेव ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' के आशीर्वाद से युक्त
उपलब्ध
दैनिक साधना विधि
आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन - ०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

चंद्र	-	अनिन्द्रा, कफ से बनने वाली बीमारियां, पाचन संस्थान की बीमारी, अजीर्ण, शीत (ठण्डा, बुखार) गठिया, जालाघात, जानवरों का हमला।
मंगल	-	गले की बीमारी, कण्ठमाला, रक्त विकार, गठिया, बुखार, आग से जलना, जहर खाना, आंखों की बीमारी, दौरा पड़ना, बेरी-बेरी रोग, सिर दुखना।
बुध	-	दिमागी फितूर, पित्त और कफ जनित बीमारियां, चमड़ी रोग, कोढ़, जहर, ऊंचाई से गिरना।
बृहस्पति	-	पेट में गैस, बुखार, कान बहना, वायुयान दुर्घटना।
शुक्र	-	कोढ़, वात, पित्त, कफ सम्बन्धी बीमारी, वीर्य विकार, मूत्र पीड़ा, नेत्र पीड़ा, गुदा रोग, पेडू दर्द, गर्भाशय की बीमारी।
शनि	-	पेट, पैरों की बीमारी, पत्थर से चोट।
राहू	-	दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, आत्महत्या, पाचन संस्थान की बीमारी।
केतु	-	घाव होना, सड़ना, जलना, दिल का दौरा, आत्महत्या, जहर सम्बन्धी बीमारी।
षष्ठेश	-	जब बाकी ग्रहों से सम्बन्ध करेगा, तब-तब उन ग्रहों से सम्बन्धित बीमारियां शरीर में उत्पन्न होंगी।

४. राशियां और उनके द्वारा दी हुई बीमारियां-

मेष व वृश्चिक	-	नेत्र सम्बन्धित, बुखार, घाव, खाल कटना, जलना।
वृष व तुला	-	स्वादहीनता, शर्करा की कमी, गुप्तेन्द्रियों की बीमारी, शीत।
कर्क	-	मुंह में छाले पड़ना, जीभ सम्बन्धी बीमारियां, दिल का दौरा।
मिथुन व कन्या	-	दाद, नाक, चमड़ी की बीमारियां।
सिंह	-	नेत्र पीड़ा, आंख का ऑपरेशन, पेट की बीमारियां।
धनु व मीन	-	कर्ण, स्मरण शक्ति, चेतनाहीनता, मस्तिष्क की विकृति सम्बन्धी बीमारियां, गैस, हाथ-पैर टूटना
मकर व कुम्भ	-	पेशाब, गर्मी, जोड़ों में दर्द सम्बन्धी बीमारी।

राशियों से सम्बन्धित बीमारियां- छठे भाव की राशि जब पाप प्रभाव में हो या भावेश से देखी जाए। गोचर में पापी ग्रहों के संचार के समय भी ये बीमारियां होती हैं। जब षष्ठेश, द्वादशेश, अष्टमेश जिस राशि में हों तो उस राशि का रोग होता है।

प्रत्येक ग्रह अपनी बीमारी अपने से सम्बन्धित ऋतु में ही उत्पन्न कर सकता है। अतः षष्ठेश के साथ कुण्डली में पड़ने पर अपनी ही ऋतु में वह बीमारी देता है। ग्रहों की ऋतुएं नीचे दी जा रही हैं-

ग्रह	**-**	**ऋतु**
सूर्य	-	ग्रीष्म
बुध	-	शरद
गुरु	-	हेमन्त
शनि	-	शिशिर
चन्द्र	-	वर्षा
मंगल	-	ग्रीष्म
शुक्र	-	वसन्त

उपसंहार

ज्योतिष के ज्ञाता अनेक प्रकार के जोड़-तोड़ लगा कर भूतकाल की घटनाओं को ग्रहों की स्थिति से निश्चयात्मक बताते हैं, परंतु उनकी भविष्यवाणियों से गलती रह ही जाती है या वे द्वैआर्थिक बात कहते हैं, इसका मूल है 'अहं भावना'। **ज्योतिष सूचना कारक है अतः इससे निश्चयात्मक भविष्यवाणी करना असम्भव है, उसके लिए 'इष्ट बल' और 'स्वर विज्ञान' की पारंगतता होनी चाहिए।**

धन्वन्तरी प्रयोग

अवतीर्णोऽयं मरौ भूमौ, यथा धान्वन्तरि स्वयम् ।
तथा लुप्तौषधज्ञानं, चकास दिग्दिगन्तरे ।।
सूर्य विज्ञान मणये, लुप्त ज्ञान प्रकाशक ।
परं ज्योतिः स्वरूपाय, नमो नारायणाय ते ।।

सच तो यह है कि आज का मानव भौतिकवादी है, और यही कारण है कि भौतिकता के पीछे दौड़ते हुए उसे भयग्रस्त, चिन्ताग्रस्त, तनावग्रस्त और रोगग्रस्त जीवन ही प्राप्त होता है, जो उसकी मृत्यु का कारण बनते हैं। समय से पहले ही शरीर का शिथिल हो जाना, चेहरे पर झुर्रियां पड़ जाना, आंखों की रोशनी कम हो जाना, बाल सफेद हो जाना आदि ऐसे लक्षण हैं, जिनसे व्यक्ति को वृद्धता का वोध होने लगता है, और यही विचार उसके मन में उमड़ने -घुमड़ने लगते हैं, जिस कारण वह हताश - निराश होकर शीघ्र ही असहाय, दुर्वल एवं रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

वास्तव में ही आज समाज में, और समाज ही नहीं अपितु देश-विदेश में भी भौतिकता को मनुष्यों ने आध्यात्मिकता पर ज़्यादा हावी कर दिया है, इसी कारणवश वे उन महत्वपूर्ण रहस्यों एवं तथ्यों से अज्ञात रह गए हैं जो ज्ञान उनके पूर्वजों, ऋषियों, मुनियों, योगियों संन्यासियों को उनके कठिन या परिश्रम एवं तपस्या से प्राप्त हो सका था, वह ज्ञान आज प्रायः लुप्त सा हो गया है।

आज के भौतिकवादी युग में जब विज्ञान अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है, उसने कई खतरनाक से खतरनाक बीमारियों के इलाज भी ढूंढ निकाले हैं, किन्तु फिर भी वह सभी बीमारियों के हल नहीं ढूंढ पाया है जबकि अध्यात्म द्वारा उन सभी व्याधियों को दूर भगाया जा सकता है तथा स्वस्थ एवं निरोगी जीवन व्यतीत किया जा सकता है, और यह सम्भव है इस **''धन्वन्तरी प्रयोग''**

द्वारा।

इस युग में लोग पूजा व साधना आदि की महत्ता को भूलते जा रहे हैं, और यही कारण है कि उन्हें यह ज्ञात ही नहीं कि इन साधनात्मक मंत्रों के उच्चारण से वह हर समस्या का समाधान आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि मंत्र तो होते ही हैं अपने-आप में विशिष्ट एवं शक्तिशाली, यदि उनका प्रयोग सही ढंग से किया जाय तो।

इन मंत्रों का सही उच्चारण कर मानव अपने शरीर का कायाकल्प तक कर सकता है, और यह कायाकल्प धन्वन्तरी प्रयोग द्वारा ही सम्भव है। धन्वन्तरी अपने-आप में सिद्धतम आयुर्वेदाचार्य थे, जो देवताओं के भी वैद्य थे, जिन्होंने अपने शरीर, और उस शरीर की रचना को एक नये ढंग से समझने का प्रयास किया।

धन्वन्तरी जो अनादि हैं, अजन्मा हैं, उन्होंने वृद्धता को वापस यौवन में बदलने का उपाय ढूंढ निकाला, क्योंकि वही उनके जीवन का चिन्तन था, कि यौवन को वृद्धता की ओर जाने से कैसे रोका जाय? धन्वन्तरी ने बताया कि तीन तरीकों से शरीर को परिवर्तित किया जा सकता है, पहला आयुर्वेद के द्वारा, दूसरा रासायनिक प्रयोग द्वारा और तीसरा मंत्रों के द्वारा।

धन्वन्तरी प्रयोग के द्वारा व्यक्ति कैंसर तथा एड्स जैसी भयानक बीमारियों से छुटकारा ही नहीं पा सकता, अपितु सम्पूर्ण शरीर का कायाकल्प करने में सक्षम हो सकता है, क्योंकि मंत्र अपने-आप में पूरे शरीर को चैतन्य करने की एक क्रिया है, और मंत्रों के उस विशेष चेतनायुक्त क्रिया के माध्यम से सारा शरीर जिन्दा रहता ही है, इसीलिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति लम्बे समय तक स्वस्थ एवं दीर्घायु बना रह सकता है।

आज व्यक्ति इस प्राचीन ज्ञान और साधना के क्षेत्र से अनभिज्ञ है, जिस ज्ञान द्वारा वह मंत्रों का सही गुंजरण कर अद्भुत एवं आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त कर सकता है।

मंत्रों का उच्चारण होने पर उसकी तरंगें **''धन्वन्तरी यंत्र''** से टकराती हैं और उस यंत्र से संस्पर्शित होते ही वह साधक की भावना व श्रद्धा के साथ-साथ उस यंत्र के देवता से सम्पर्कित होती है, इस प्रकार उसका और देवता का सीधा सम्बन्ध उस साधक के शरीर एवं प्राणों से जुड़ जाता है, और यही कारण है कि वह इस क्रिया को पूर्णरूप से सम्पन्न कर अपने शरीर अथवा अपने जीवन में व्याप्त समस्त व्याधियों एवं समस्याओं से मुक्ति पा लेता है।

इस धन्वन्तरी प्रयोग को सम्पन्न कर वह साधक मंत्रों के माध्यम से शरीर में जो भी रोग हैं, उसको समाप्त

विश्व में आज अनेक चिकित्सा प्रणाली प्रचलित है। सभी प्रणालियों की निदान पद्धति उनकी चिकित्सा प्रणाली के अनुसार भिन्न होती है। गम्भीरतापूर्वक विचार करने के उपरान्त स्पष्ट होता है कि सभी पद्धतियों का उद्‌गम स्थान आयुर्वेद है, और आयुर्वेद के अधिष्ठाता हैं स्वयं ''धन्वन्तरी''।

कर देने की क्रिया, पूर्ण यौवनवान बनने की क्रिया, पूर्ण चेतनायुक्त बनने की क्रिया, पूर्णरूप से कायाकल्प करने की क्रिया, सम्पन्न कर लेता है।

साधक को चाहिए कि वह इस मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण प्रयोग को २७/०१/९५ को सम्पन्न करे तथा किसी भी शुक्रवार या रविवार के दिन भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

प्रयोग विधि–

सर्वप्रथम साधक इस धन्वन्तरी यंत्र को अपने पूजा स्थान में या अन्य किसी चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर इसे स्थापित कर दे, तथा कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप आदि लगाकर मन और शरीर का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तीन बार ''ॐ'' की ध्वनि का उच्चारण कर तीन बार प्राणायाम क्रिया करें। इसके पश्चात हनुमान आसन या सिद्धासन में बैठ जाएं और ३० मिनट तक निम्न मंत्र का जप **''कायाकल्प माला''** से करें।

मंत्र –

ॐ कं काम्य प्रियायै फट्

माला की गणना करना आवश्यक नहीं है प्रत्येक माला के पूर्ण होने पर अर्थात जब एक माला पूर्ण कर सुमेरू पर पहुंचे तब धन्वन्तरी यंत्र पर एक पुष्प अर्पित करें।

मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात **''धन्वन्तरी यंत्र''** को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। माला को २१ दिन तक धारण कर नित्य इस मंत्र का २१ बार दैनिक पूजन के समय उच्चारण करना आवश्यक है।

इस धन्वन्तरी साधना द्वारा व्यक्ति मानसिक और दैहिक सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, इसलिए यह यंत्र अपने-आप में अत्यधिक श्रेयस्कर है तथा इस मंत्र सिद्ध यंत्र के द्वारा इस प्रयोग को प्रत्येक व्यक्ति को सम्पन्न करना ही चाहिए।

❋

एक दिव्य . . . आश्चर्यजनक . . . अचरज भरा "होलिका साधना सिद्धि" प्रयोग जिसने मेरे जीवन को विभिन्न रंगों से भर दिया . . . वह रंग है पूर्णता का . . . वह रंग है श्रेष्ठता का. . . वह रंग है दिव्यता का, और यही तो मैं चाहती थी, यही तो मेरे जीवन का लक्ष्य था, यही तो मेरे जीवन का उद्देश्य था, इस तांत्रोक्त सिद्धि प्रयोग के द्वारा ही मैं एक सम्पूर्ण जीवन का निर्माण कर सकी, और यही मेरा अभीष्ट था, जो सम्भव हुआ परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा उस होली पर्व पर।

होली साधनात्मक रंगों की रिमझिम फुहार में भीग जाने का पर्व है, जिसने मेरे पूरे जीवन को उत्सवमय, नृत्यमय बना डाला . . . और तब मुझे ज्ञात हुआ कि होली एक साधारण पर्व नहीं अपितु तांत्रोक्त साधनाओं में सफलता एवं सिद्धि की मस्ती से चूर होने का पर्व है।

होली का पर्व एक सिद्ध तांत्रिक मुहूर्त तो है ही, साथ ही होलिका दहन की रात्रि, होलिका दहन का अवसर भी कम महत्वपूर्ण नहीं, जिसके माध्यम से साधक अपनी सभी कामनाएं पूर्ण कर सकता है, और इसका एक मात्र प्रमाण हूं — "मैं"।

हां! . . . "मैं" निर्मला देशपांडे यह प्रामाणिकता के साथ कह सकती हूं कि इस पर्व पर होलिका साधना सिद्धि प्रयोग से सम्पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।

मेरा जन्म नैनीताल के कौसानी गांव में हुआ, और शुरू से ही मेरा रूझान अध्यात्म के प्रति था। मैंने अपने जीवन काल में अनेक प्रकार की साधनाएं सम्पन्न की मांत्रोक्त भी और तांत्रोक्त भी। उन साधनाओं के प्रति बढ़ती रुचि, मेहनत और प्रयास से मुझे उनमें सफलता भी मिली, किन्तु पूर्णरूप से सफलता न मिल पाने के कारण जीवन में एक अभाव सा हमेशा मुझे प्रतीत होता रहता था। मैं कम समय में ही बहुत कुछ प्राप्त कर लेना चाहती थी, क्योंकि जीवन के प्रत्येक क्षण को यों ही व्यर्थ गंवाना नहीं चाहती थी, मैं एक ऐसी दिव्य सिद्धि प्राप्त कर लेना चाहती थी, जो शीघ्र सफलतादायक हो, और जिसके द्वारा मैं, एक परिपूर्ण जीवन का निर्माण कर सकूं।

एक दिन अचानक कुम्भ के अवसर पर मेरी भेंट **परम पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** से हुई। जब मुझे पता चला कि पूज्य गुरुदेव मंत्र-तंत्र के विशेष ज्ञाता हैं, तो मेरी इच्छा उनसे उन गोपनीय विद्याओं को जानने की हुई, जिन्हें प्राप्त कर अप्रतिम और आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की जा सकती है। जब अपनी इस जिज्ञासा को मैंने उनके समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार कर होली पर्व की तंत्र साधना पर आधारित एक विशेष **"होलिका साधना सिद्धि"** प्रयोग को सम्पन्न करने की आज्ञा दी। उन्होंने कहा कि होलिका दहन के दिन भद्रा तिथि के पश्चात प्रातः ८.४५ मिनट पर इस प्रयोग को सम्पन्न

करना है, और जो भी इससे पूर्व साधनाओं से सम्बन्धित यंत्र, तांत्रोक्त मालाएं आदि घर में रखी हों, उनका साधना काल में पुनः पूजन कर उसे होलिका की अग्नि में समर्पित कर देना है, क्योंकि ऐसा करने से पूर्ण तांत्रोक्त सिद्धि प्राप्त होती है।

सम्भवतः श्रेष्ठ साधक इस तथ्य से परिचित नहीं होंगे, किन्तु यह एक वास्तविकता है, कि जो यंत्र, माला आदि सामग्री व्यक्ति के प्राणों एवं शरीर से सम्पर्कित होकर, साधक के ऊपर आने वाली अनेक ज्ञात- अज्ञात विपदाओं के समक्ष ढाल बनकर खड़ी हो, अपनी ऊर्जा का क्षरण तो करती ही है, साथ ही साथ शनैः-शनैः दूषित भी होती जाती है, क्योंकि वह न केवल दिव्य वस्तु होती है वरन् व्यक्ति के पाप, दोष, तंत्र प्रयोग इत्यादि भी उसके साथ जुड़ जाते हैं, जिन्हें अग्नि में समर्पित कर व्यक्ति अपने समस्त पाप, दोषों से मुक्ति पा लेता है।

मैंने उनके द्वारा बताये विधान पूर्वक उस प्रयोग को सम्पन्न किया और उन यंत्रों एवं मालाओं आदि को होलीका अग्नि में समर्पित कर दिया। इसके पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न कर पूरे परिवार सहित प्रसाद ग्रहण किया। उस प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् मुझे आश्चर्यजनक सफलता मिली, भौतिक दृष्टि से भी और आध्यात्मिक दृष्टि से भी।

भौतिक दृष्टि से इस प्रकार की इससे पूर्व की गई धन सम्बन्धी एवं प्रिय वशीकरण आदि साधनाओं को सम्पन्न करने पर भी मुझे सफलता हाथ नहीं लग रही थी, किन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् मुझे उन सभी साधनाओं का प्रतिफल भी प्राप्त होने लगा था। मेरे घर में अब धन की कोई कमी नहीं है, मेरे पति जो किसी और स्त्री के प्रति अनुरक्त हो गए थे, अब पूर्णतया मेरे प्रति अनुरक्त हैं, आदि अनेक प्रकार की भौतिक समस्याओं व चिन्ताओं से मुझे मुक्ति मिल गई और मेरा गृहस्थ जीवन सुखी, समृद्ध व सम्पन्न हो सका।

आध्यात्मिक दृष्टि से इस प्रकार की पूर्ण तांत्रोक्त सिद्धि प्राप्त कर मैं एक श्रेष्ठ, दिव्य, अद्वितीय एवं प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण जीवन का निर्माण करने में सक्षम हो सकी, जैसा कि मैं चाहती थी, और तब मुझे अहसास हुआ कि क्यों बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, योगी इस दिन का बेसब्री से इंतजार करते हैं, जिस विशेष पर्व को, जिस विशेष अवसर को हम अज्ञानी मनुष्य सिर्फ नाच-गा कर व हो-हल्ला आदि कर गंवा बैठते हैं।

जो साधना की मर्यादा समझते हैं, साधना का वास्तविक अर्थ समझते हैं, जो जीवन को रो-झींक कर काट देना ही पर्याप्त नहीं समझते, वे ही फिर आगे बढ़कर साधना में, और उससे भी आगे बढ़कर तांत्रोक्त प्रक्रियाओं में संलग्न होने की क्रिया करते ही हैं, और इसी पूर्णता प्राप्ति का विशेष क्षण है यह 'होली पर्व'।

और यह क्षण इस बार आपके सामने उपस्थित हो रहा है पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र विशेष में १६ मार्च ९५ गुरुवार, होलिका दहन भद्रा तिथि के पश्चात् ७ बजकर ४७ मिनट पर।

रावण-संहिता में इस प्रकार की श्रेष्ठ तांत्रोक्त साधना का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है, और मैं पूज्य गुरुदेव के प्रति इस बात के लिए आभारी हूं कि उनके विशेष आशीर्वाद के द्वारा ही मैं इस दुर्लभ प्रयोग को सम्पन्न कर एक सम्पूर्णता युक्त जीवन प्राप्त कर सकी।

पूज्य गुरुदेव के द्वारा बताये हुए विधान के अनुसार मैं होलिका दहन मुहूर्त के एक घंटा पूर्व स्नान कर, श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठ गई तथा अपने सामने बाजोट पर मैंने श्वेत वस्त्र बिछाकर ११ स्वस्तिक अंकित किये, मध्य के स्वस्तिक पर **"तांत्रोक्त होलिका सिद्धि यंत्र"** स्थापित किया, इसके पूर्व की गई साधनाओं के यंत्रों, मालाओं तथा गुटिकाओं को होलिका यंत्र के चारों तरफ स्थापित कर दिया, फिर सभी पर पुष्प चढ़ाया, मध्य में स्थित होलिका यंत्र पर अष्टगंध से अष्टदल निर्मित किया, फिर उस पर २१ काली मिर्च के दाने रखकर, काली सरसों चढ़ाकर इस यंत्र का पूजन सम्पन्न किया, इसके पूर्व गुरुदेव का संक्षिप्त पूजन सम्पन्न कर दूध से बने नैवेद्य का भोग लगाया, फिर बांए हाथ में एक **'कुटिला'** रख कर उसे मुट्ठी में बंद कर लिया तथा दाहिने हाथ को तांत्रोक्त होलिका सिद्धि यंत्र पर रखकर निम्न मंत्र का १५ मिनट तक अनवरत जप किया।

मंत्र

ॐ हुं हुं होलिकायै फट्।।

मंत्र-जप पूर्ण कर जो २१ काली मिर्च के दाने यंत्र पर स्थापित किये गए थे, उन्हें उठाकर अपने हाथ में रख लिया, फिर सभी यंत्र, गुटिका एवं मालाओं को होलिका यंत्र के साथ एक काले वस्त्र में लपेट लिया, फिर उस वस्त्र पर स्वस्तिक अंकित कर मौली से उसे बांध दिया, स्वयं जाकर, जहां होलिका प्रज्वलित होने वाली थी उस स्थान की तीन परिक्रमा करके पहले काली मिर्च के दाने २१ बार वापिस उसी मंत्र का जप कर होलिका अग्नि में डाले, फिर पोटली में बंधी साधना सामग्री को अग्नि में समर्पित कर दिया, फिर होलिका दहन के बाद अपने घर आकर, स्नान कर गुरु आरती सम्पन्न की और पूरे परिवार के साथ गुरुदेव को अर्पित किये गए नैवेद्य को घर के सभी सदस्यों ने ग्रहण किया।

इस लघु साधना के उपरान्त कुछ ही समय पर्यन्त मुझे वे सभी अनुकूलताएं प्राप्त होने लग गईं, जिनका वर्णन मैंने प्रारम्भ में ही किया है। मेरे ऊपर पूज्य गुरुदेव की महती कृपा है, जो उन्होंने इतना तीक्ष्ण एवं सरल प्रयोग मुझसे सम्पन्न करवाया। ❋

सिद्धाश्रम सम्पूर्ण सिद्धि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
गुरु यंत्र	१३	२४०/-
ललिताम्बा यंत्र	१३	२४०/-
मूंगा माला	१३	१५०/-
स्वर्ण खप्पर पूजन पैकेट (स्वर्ण यंत्र, कुबेर सम्पदा प्रदायक गुटिका, श्रीरूपा, शवार्णी, स्वर्णाकर्षण माला)	१६	४१०/-
सिद्धाश्रम यंत्र	२४	२४०/-
सिद्धाश्रम गुटिका	२४	५१/-
सिद्धाश्रम रहस्य माला	२४	१५०/-
धनाधीश कुबेर यंत्र	३३	२४०/-
कुबेर माला	३३	१५०/-
महामृत्युञ्जय महाशिव रमत्रि साधना पैकेट (महामृत्युञ्ज यंत्र, ज्वलित, नन्दनेय, अपर्णा गुटिका, गौरी शंकर रुद्राक्ष, धूम्राक्ष, ब्रह्माण्ड मोहनाख्य, कामनापरत्व मुद्रिका)	३४	३००/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
शाम्ब फल, शिवाबिल, रेणुका माल्य		
पारदेश्वर शिवलिंग	३४	३००/-
नर्मदेश्वर शिवलिंग	३५	१५०/-
नीलम शिवलिंग	३५	३००/-
हीरक शिवलिंग	३५	३००/-
मुक्तक शिवलिंग	३५	३००/-
माणिक्य शिवलिंग	३५	३००/-
विजया यंत्र	३६	२४०/-
घुंघची(११)	३६	५५/-
रूपोज्ज्वला अप्सरा यंत्र	४७	२४०/-
अप्सरा माला	४७	१५०/-
पारद महागणपति	५३	३००/-
पीली हकीक माला	५३	१५०/-
राजमातंगीश्वरी यंत्र	५६	२४०/-
कमल गट्टे का बीज(एक)	५६	२/
चैतन्य मातृका शांति यंत्र	७०	२००/-
धन्वन्तरी यंत्र	७७	२४०/-
कायाकल्प माला	७७	१५०/-
तांत्रोक्त होलिका सिद्धि यंत्र	७९	२१०/-
कुटिला	७९	२१/-

दीक्षा	न्यौछावर
रूपोज्ज्वला अप्सरा दीक्षा	२१००/-
पाशुपतास्त्रेय दीक्षा	३०००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	३१००/-
ललिताम्बा दीक्षा	२१००/-
दरिद्रता विनाशक गणपति दीक्षा	२४००/-
भैरव दीक्षा	२४००/-
होलिका यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३५००/-
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा	३०००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	२१००/-
धन प्रदाता अप्सरा दीक्षा	२१००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा	५१००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा	३०००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा	१८००/-
क्रिया योग दीक्षा	६०००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा	१५००/-
रोग मुक्ति दीक्षा	२१००/-
धन्वन्तरी दीक्षा	२१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
ब्रह्माण्ड दीक्षा	६०००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें, ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **''मंत्र शक्ति केन्द्र''** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

रजिस्ट्रेशन नं० ३५३०५/८

A.H.W.

पोस्टल-एल.आर.जे. ३६६७/८६-८

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/६

पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/६

५ जनवरी से ८ जनवरी ९५

दरिद्रता विनाशक गणपति दीक्षा
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
धन प्रदाता अप्सरा दीक्षा
रूपोज्ज्वला अप्सरा दीक्षा
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा, अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा
होलिका यक्षिणी दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा
कुबेर सिद्धि दीक्षा, पाशुपतास्त्रेय दीक्षा
क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा
ललिताम्बा दीक्षा, रोग मुक्ति दीक्षा
धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा
सम्मोहन दीक्षा, ब्रह्माण्ड दीक्षा
यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

– सम्पर्क –

३०६, कोहाट एन्क्लेव,
नई दिल्ली - ११००३४
फोन:०११-७१८२२४८
फेक्स:०११-७१८६७००

– नोट –

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।